श्रीहरिव्यास यशामृत

रचयिता

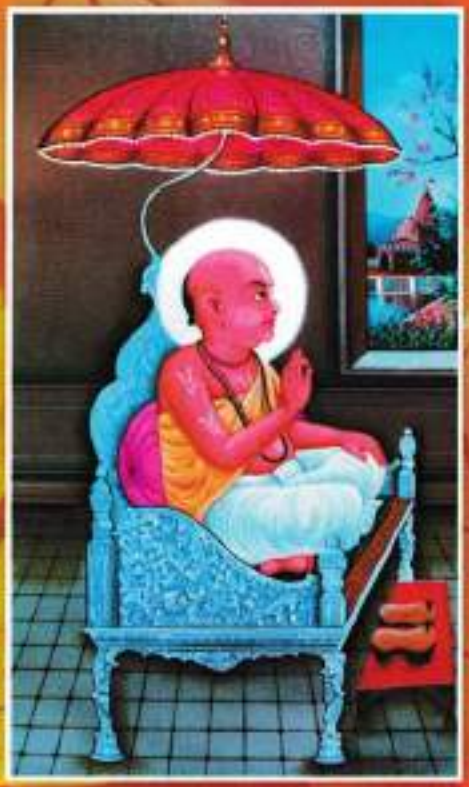

स्वामी श्रीरूपरसिक

पुस्तक प्राप्ति स्थान--
अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ
निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)
फोन नं० - ०१४६७ -२२७८३१

प्रथमावृत्ति - १००० वि० सं० १९८१
द्वितीयावृत्ति - १००० वि० सं० २०७०

मुद्रक--
श्रीनिम्बार्क मुद्रणालय
निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)

न्यौछावर
४०) रुपये

॥ श्रीसर्वेश्वरो विजयते ॥

दो शब्द

श्रीमत्परमिक देव द्वारा प्रणीत "श्रीहरिव्यास यशामृत" गीति काव्य जिसमें विभिन्न रागनियों, छन्दोंबद्ध परम सरस द्वाविंशति (२२) लहरिकाओं में आबद्ध जिसमें स्वयं संकेत किया है कि जगद्विजयी जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य रसिकेश्वरराजेश्वर श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी महाराज के यशामृतसिन्धु की अनन्त लहरें भी गुणगान करने में समर्थ नहीं हो सकती।

यश अमृत सागर महा, जाकी लहरि अनन्त।
रूपरसिक यह यथामति, सुनि उर धरियो सन्त॥

ऐसे परम रसिकों के प्राण श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी महाराज द्वारा विरचित ५ सर्गों में अन्वित "श्रीमहावाणीजी" में युगलकिशोर श्यामाश्याम की दिव्यातिदिव्य निकुञ्ज लीलाओं का गुणगान व्रजक्षेत्र श्रीवृन्दावनधाम में परम रसिक भावुक भगवज्जन के द्वारा किया जाता है। "श्रीमहावाणीजी" का गुणगान कर व्रजरस की रसार्थी निकुञ्ज रसामृत का पान कर वे परम हर्षित व आह्लादित होते हैं।

श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी महाराज युगलविहारी राधामाधव प्रभु की निकुञ्ज विहरणादि लीलाधिष्ठात्री देवी श्रीप्रियाजी परब्रह्म लीला पुरुषोत्तम भगवान् श्रीकृष्ण की परम आह्लादिनी शक्ति भगवती श्रीराधाजी के रंगधाम की अन्यतम ललितानिशाखादि सहचरीवृन्द में परम सुशोभित 'श्रीहरिप्रिया' सखी स्वरूप में श्रीयुगल प्रियाप्रियतम को लाड लड़ाते हैं। उनके अर्द्ध नाममात्र 'श्रीहरि' स्मरण करने से हमें चारों पुरुषार्थ की सिद्धि हो जाती है।

श्रीरसिकराजराजेश्वर श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी महाराज ने सकल संसार में श्रीयुगल प्रियाप्रियतम की निकुञ्ज उपासना का दिव्य उपदेश प्रदान किया। श्रीमत्परमिकदेवजी महाराज ने रसिकेश्वर 'श्रीमहावाणीकार' श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी महाराज के दिव्य स्वरूप को प्रकट करने वाला "श्रीहरिव्यास यशामृत" नाम विभिन्न राग-रागनियों व दोहा सोरठा आदि छन्दों में आबद्ध सरल भाषा में गीति रसायन महाकाव्य का प्रणयन किया। यह सब

श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी की ही कृपा का फल है जो सहृदय भगवद्भक्त श्रीमहावाणीजी की युगल पदावलियों का गुणगान करता है व परम दिव्य अष्टादशाक्षर मन्त्रराज का निरन्तर जप करता है वह मोक्ष की आकांक्षा न रखते हुए श्रीयुगल प्रियाप्रियतम के दिव्य अलौकिक रंगधाम में नित्य सहचरीवृन्द में स्थान प्राप्त करता है। यह सब श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी (श्रीहरिप्रियासखी) महाराज की चरण शरणागति के बिना सम्भव नहीं।

परमदिव्य अष्टादशाक्षरमन्त्र अंतर सदा निरन्तर ध्यावे।
सबको रंगधाम अति दुर्लभ ताहि ठाम में रहे रहावे।।
"श्रीहरिव्यासचरण शरणागति श्रीहरि कृपा करें सब पावे"
जय जय श्रीहरिव्यासजू दशदिशि जीत पुनीत।
करी प्रगट जग तरण हित महाभजन रस रीति।।
जय जय श्रीहरिव्यासजू सर्व गुरु भगवन्त।
सदा सर्वदा एकरस युगल रूप में मन्त।।
जय जय श्रीहरिव्यासजू परा प्रेम के सिन्धु।
सदा सच्चिदानंदघन रसिक जनन के बन्धु।।

श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी महाराज पराभक्ति के सागर है वे सदा युगल प्रियाप्रियतम के स्वरूप को धारण करते हैं। श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी के दिव्य पदाम्बुजों में शरणागति हमें पराभक्तिपूर्ण श्रीयुगल प्रियाप्रियतम की रसमयी उपासना प्रदान करने वाली है।

श्रीचरणकिंकरीक :-
रेवतीरमण शर्मा शास्त्री, निम्बार्कभूषण
प्राध्यापक-
श्रीसर्वेश्वर संस्कृत महाविद्यालय
अ० भा० जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ
निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) अजमेर (राजस्थान)

श्रीहरिव्यास यशामृत

॥ लिख्यते ॥

॥ मांझ ॥

श्रीहरिव्यास हरिप्रिया रूप तिनकी कृपा मनाई।
श्रीहरिव्यास देव यश अम्मृत सागर लिखों बनाई॥
तामें काव्य छन्द नाना विधि सों लहरी समुदाई।
युगल रत्न दाई यह गाई रूपरसिक मन भाई।

॥ दोहा ॥

तत्र प्रथम लहरी लिखों, दोहा बन्ध सुहाय॥
हरिव्यास श्रीहरिप्रिया, मन वच क्रम चितलाय॥१॥
श्रीनारद के शिष्य द्वै, वाल्मीक अरु व्यास।
रूपरसिक जिन मुख भयौ, शब्दब्रह्म प्रकाश॥
बहुबानी बहु ग्रन्थ किय, जाको वार न पार।
रूप रसिक हरिव्यास के, घर ही को व्यौहार॥२॥
अपनी अपनी चोंच भरि, लेत कोऊ खग आय।
रूप रसिक महा सिन्धु को, कहो कहा घटिजाय॥४॥
कहा अश्व कहा अश्विनी, कहा वृषभ कहा गाय।
इक हाथी के खोज में, सबही खोज समाय॥५॥
किते जीव आये गये, बढत न घटत लगार।
रूप रसिक हरिव्यास की, बड़ा बड़ी सरकार॥६॥
आवत है जिहि ग्रन्थ में, व्यास बिना हरिनाम।
रूप रसिक टेरे कहैं, सो मेरे नहिं काम॥७॥
भक्त भक्त सबही मिले, अपनी अपनी ठौर।

रूप रसिक हरिव्यास की, भजन रीति कछु और॥८॥
शत्रु सीव चापें नहीं, दुष्टी लहैं न दाव !
रूप रसिक हरिव्यास के, अँग पावत उमराव॥९॥
श्रीगुरु हरि सम्बन्ध बिन, सबकी छाप कलाप।
रूप रसिक हरिव्यास की, छाप हरै त्रय ताप॥१०॥
कहा भयो जो करिलियो, तिलक आपनी उक्ति।
रूप रसिक हरिव्यास के, तिलक बिना नहि मुक्ति॥११॥
पायो नाम निकामही, फिरैं फुलायौ चाम।
रूप रसिक हरिव्यास के, दास बिना नहिं काम॥१२॥
माला पहिरी मोल ले, जासों कटे न जाल।
रूप रसिक हरिव्यास की, बिना माल नहिं माल॥१३॥
एक एक तें अधिक हैं, मन्त्र तन्त्र के माँहि।
रूप रसिक हरिव्यास के, मन्त्र बिना सिधि नाँहि॥१४॥
सब लीला श्रीकृष्ण की, जो जिहि लायक होय।
रूप रसिक हरिव्यास जू देत सबन कों सोय॥१५॥
श्री वृन्दावन महल सुख, है सब रस को सार।
रूप रसिक जिनकों मिलै, तिन पर कृपा अपार॥१६॥
नित्य किशोरी वपुष यह, श्रीवृन्दावन नाम।
नव निकुंज कल केलि हित, राजत भूपर धाम॥१७॥
राधा हरि हरि व्यासजू, सेवत विपिन विलास।
निज आनन्द अहलाद को, जान्यो परम निवास॥१८॥
नित्य विहार विहरत तहाँ, नित्य बिहारी लाल।
श्रीहरि प्रिय हरिव्याससुख, संग रहत सब काल॥१९॥
श्रीहरिव्यास लड़ावहीं, त्यों त्यों लाडत बाल।
लाड लडीले लालकी, करत सदा प्रतिपाल॥२०॥
रूपरसिक हरिव्यास को, बड़ो तेज भरपूर।

और देव दबके रहैं, दबक्यो रहै न सूर॥२०॥
रूपरसिक कोऊ कहत हैं, बादर माँहि दबात।
सो इन मूरख नरन कों, दृग माया फिर जात॥२१॥
सूर सोई आधा धरे, पाछा परे न पाव।
रूपरसिक सर्वेश ते, तबही होय मिलाव॥२२॥
नेक चरण पाछे परै, ये कायर के लक्षि।
रूपरसिक हरिव्यास पद, पावत नाँहि प्रतक्षि॥२३॥
तनतें आगे मन चलै, मनते आगें भाव।
रूपरसिक हरिव्यास को, तबही ह्वै दरशाव॥२४॥
तबही लग दुरवासना, लगीजु याके साथ।
रूपरसिक हरिव्यास को, जब लग नयो न माथ॥२५॥
कोउ नेम में लगिरहे, कोउ प्रेम में रोत।
रूपरसिक हरिव्यास बिन, परा न प्रापति होत॥२६॥
एक भूत के लगे की, सहीपरत नहिं आँच।
रूपरसिक जिनकी कहा, तिनको लागे पाँच॥२७॥
मन्त्र तन्त्र कछु नहिं चले, चले न तन्त्र विचार।
रूपरसिक हरिव्यास के, बिना एक उपचार॥२८॥
जो कोऊ श्रीहरिव्यास को, नाम जपै इकवार।
तन मन धन ता ऊपरे, दीजे सर्वसु वार॥२९॥
सकल अमङ्गल खलनदल, हलचल दुख अघरास।
रूपरसिक सबही भगैं, सुमिरत श्रीहरिव्यास॥३०॥
रूपरसिक गुणवन्तको, चाहत सब जग माँहि।
निर्गुण को हरिव्यास की, सदा सर्वदा बाँरह॥३१॥
एक वार हरिव्यासजू, रसना कियो उचार।
तौ श्रीराधा कृष्ण को, मन्त्र जप्यो सौवार॥३२॥
रूपरसिक हरिव्यास की, बिना कृपा लहै कोय।

श्रीवृन्दावन महलसुख, हाँसी खेल न होय॥३३॥
ख्यरसिक हरिव्यासजू, इनकी सम को और।
कोउ बाहर कोउ भीतरे, ये व्यापक सब ठौर॥३४॥
काहू की दश पंच दश, काहू की अठ सात।
ख्यरसिक हरिव्यास की, बीसो विश्वा बात॥३५॥
ख्यरसिक हरिव्यास की, धर्म्म ध्वजा फहराय।
ताके आगे और की, कहो कहा ठहराय॥३६॥
ख्यरसिक हरिव्यास बिन, लहै न सुख को सोत।
नेम प्रेम अरु छेम सब, इन ते प्रापति होत॥३७॥
चौरैं चौरैं सब फिरैं, दौरे दौरे दास।
परै साँकरो आय तब, सुमिरैं श्रीहरिव्यास॥३८॥
रूपरसिक हरिव्यास की, शरण बिना नहिं पार।
केते बाहरि रहिगये, केते बूडे धार॥३९॥
रूपरसिक हरिव्यास की, सबते मोटी बात।
चरण शरण तिनकी भई, तीनों गुण की मात॥४०॥
रूपरसिक हरिव्यास की, बडी रजाई जानि।
माया त्रिगुण प्रसूतिका, चरण शरण भई आनि॥४१॥
रूपरसिक हरिव्यासजू, आचारज वर राय।
मूल प्रकृति चेरी भई, त्रिगुण प्रसूता आय॥४२॥
रूपरसिक हरिव्यास की, उपमा को नहिं कोय।
तासु कृपाते पाइए, प्यारी प्रियतम दोय॥४३॥
रूपरसिक हरिव्यासजू, आप रूप हरि राव।
माया जग बिस्तारणी, तासु पलोटत पाव॥४४॥
रूपरसिक हरिव्यास की, देखो अद्भुत रीति।
तिनकी चरण शरण बिना, युगल करें नहिं प्रीति॥४५॥
रूपरसिक सबके लगे, या माया सों प्राण।

ताते तू हरिव्यास भजि, माया गुरु भगवान॥४६॥
या माया खाया सबै, वाकी भारी चोट।
ख्यरसिक जन ऊबरे, माया गुरु की बोट॥४७॥
ख्यरसिक ये जगत सब, है स्वारथ को दास।
तू स्वारथ कर आपनो, तजि जग भजि हरिव्यास॥४८॥
ख्यरसिक ये जगत सब, केवल स्वारथ मित्त।
ताते तू निज काम करि, भजि हरिव्यास सुचित्त॥४९॥
अपने अपने खेल में, सबही मगन रहंत।
तूनिज खेल सुमिरत रहि, कहि हरिव्यास महंत॥५०॥
ख्यरसिक सबकों लगें, अपने प्यारे काम।
तूहू अपनो काम करि, भजि हरिव्यास सुनाम॥५१॥
तन्त हमहिं जानत भले, नहीं और के भाव।
छोटो मुख मोटी कहै, नीचन यहै स्वभाव॥५२॥
रूपरसिक जिनि नहिं लह्यो, श्रीहरिव्यास प्रताप।
जैसे दादुर कूपसे, करे कूप में थाप॥५३॥
अपने अपने मनहिं में, रहे पतिव्रत धार।
रूपरसिक सोई सही, कहैं परोसन नारि॥५४॥
भक्ति भाव समझे नहीं, आपा को अधिकार।
सेर चूनदे साधुनें, कहें कुवे धसिजाव॥५५॥
साधु शरम मारयो कछू, बोल सके नहिं बैन।
रूपरसिक की ओर है, टग टग जोवै नैंन॥५६॥
ख्यरसिक ऐसें कहैं, सुनो हमारी बात।
सेर चून पहले लयो, अब काहे पछितात॥५७॥
आसीसो पासी सदा, नाहिं तलासी तास।
रहैं उदासी जगत ते, हम हरिव्यासी दास॥५८॥
स्वारथ माँही चतुर सब, परमारथ को नाश।

रूपरसिक ता हिय नहीं, ये कोरे हरिदास ॥५९॥
मुखसों भाषें अनन्यता, तन में राखें टोंठि।
ठाकुर के आगे धरें, ऊजबना की ओंठि ॥६०॥
रीति चलावें आपनी, है कलि की यह टेक।
बिना शरण हरिव्यास की, उपजे कहा विवेक ॥६१॥
रूपरसिक सँग नहिं चलै, लहि पापिन को योग।
खोट करें हरि आसरे, ऐसे खोटे लोग ॥६२॥
जागे तो हरिव्यास भजि, सोवै तौ हरिव्यास।
ऊठत बैठत फिरतही, स्वास स्वास हरिव्यास ॥६३॥
वे अनन्य के लक्षि हैं, इन बिन और न फन्य।
रूपरसिक हरिव्यास जू, सुमिरें सोही धन्य ॥६४॥
रूठा तो उधरै नहीं, तूठा सुधरै काज।
रूपरसिक हरिव्यासजू, महाराजन के राज ॥६५॥
यह विनती है सबनसों, सेनो सुचित्ते होय।
स्वरसिक साँची कहैं, दुख पावो जिन कोय ॥६६॥
प्रथम समझिवो सैन में, दूजो वैनमितोंह।
स्वरसिक बहु बकेते, होत भांड की सोंह ॥६७॥
जो कोऊ चाहै चाहसों, तिनको दुख सुख संग।
स्वरसिक नहिं करें तो, होत रसिकता भंग ॥६८॥

॥ सोरठा ॥

वैमानुष जग थोर, मन फाटे फटिजाय मन।
ऐसे लाख करोर, फाटि फाटि मिलिजाय मन ॥६९॥

॥ दोहा ॥

समय परे ते जानिये, हित अनहित की बात।
स्वरसिक ज्यों प्रगट ही, क्षीन पीनता गात ॥७०॥
हमहीं बहुत पढी सुनी, सिद्धान्तन की साखि।

साधन सों कछु मति कहै, आयि आपनी राखि ॥७१॥
मुख आगे अस्तुति करें, पीछे करें चवाय।
स्वरसिक वा दास को, नास जाय पै जाय ॥७२॥
भक्ति भाव हिरदे धरैं, डिम्भ तज्यो नहिं जाय।
स्वरसिक इन त्रियन को, है सहजेहि सुभाय ॥७३॥
श्रीहरिव्यास कृपा करी, स्वरसिक जनजानि।
नीचेतें ऊंचो कियो, दियो शीश पर पानि ॥७४॥
स्वरसिक संसार सब, मेरे जानि अकृत।
सुमिरें श्रीहरिव्यासजू सोई एक सपूत ॥७५॥
श्रीहरिव्यास गुण गान सुनि, उठत न संगहि गाय।
स्वरसिक ते नर महा, परें नरक में जाय ॥७६॥
नृत्य करत लाजन मरें, तें नर तिय तन पाय।
सदा अटेरी हाथ में, सूत समेटत जाय ॥७७॥
हम काहू के होंय तो, कोउ हमारो होइ ।।
स्वरसिक संसार में, देखे सबही जोय ॥७८॥
स्वरसिक संसार में, कोउ न अपनो जान।
एक दोय की कहा चली, सबही सुपन समान ॥७९॥
साधु सदाही शुद्ध है, जिनके मते अगाध।
स्वरसिक कहा जानही, जीव भरे अपराध ॥८०॥
स्वरसिक हरिव्यासजू, है सबहिन सिरमौर।
तिनहिं त्यागि इत उत फिरें, तेई महा मति बौर ॥८१॥
हरिभक्तिन सों द्रोह करि, गई चहें हरि लोक।
स्वरसिक वा राँड के, परें करम में ठोक ॥८२॥
हरि सुमिरें ह्वै है कहा, हरि भक्तन सों वैर।
स्वरसिक पावै कहाँ, बिना उसीला खैर ॥८३॥
आवैतो आनन्द को, उपजे और जँजाल।

रसरसिक इन तियनको, संग तजौ तत्काल ॥८४॥
जारों मुह जागरन को, जामेंहि आवहि जोय।
रसरसिक यातै भले, रहैं अकेले सोय ॥८५॥
जगत भगत सबही हंसौ, बुरौ न मानू कोय।
श्रीराधावर सुमिरतां, होनी होय सो होय ॥८६॥
प देखों सब इष्ट को, श्रीराधावर अंश।
मूरख नर समुझे नहीं, उलटी धारें गंश ॥८७॥
रसरसिक हरिव्यासजू प्रगट न होते आज।
तौ इन रसिकन को कहौ, कैसे सरतो काज ॥८८॥
जय जय श्रीहरिव्यासजू, रसिकन हित अवतार।
महावाणी करि सबन कों, उपदेश्यो सुखसार ॥८९॥
श्रीवृन्दावन चन्द्रकी, नित लीला दरशाय।
रसरसिक जन पर करी, कृपा करी सतिभाय ॥९०॥
रसरसिक हरिव्यास को, बडो आसरो पाय।
तुच्छ नरन के घर घरे, भटकै कौन बलाय ॥९१॥
श्रीराधा कृष्ण उपासना, श्रीवृन्दावन धाम।
श्रीहरिव्यास कृपा बिना, पूरण होय न काम ॥९२॥
एक रूप हरिव्यास जू, ह्वै अनेक अवतार।
श्रीवृन्दावन चन्द्र को, धरन्यो नित्य विहार ॥९३॥
सब पूजत हैं व्यास को, हम पूजत हरिव्यास।
रसरसिक जिनि कृपातें, सफल होय सब आस ॥९४॥
गुरु सबही के होत हैं, निगुरे रहत न कोय।
सतगुरु के शरनें बिना, सुख प्रापति नहिं होय ॥९५॥
गुरुकी कृपाहि जानिये, सतगुरु मिलैं जु आय।
मूरख छोडचो कहत हैं, जासों कहा बसाय ॥९६॥
छोडचो जाकों जानिये, हरि तजि भजें जु और।

अम्मृत रस को पीठदै, फिरतो फिरै कुठौर ॥९७॥
साँची सों झूँठी कहैं, झूँठीसों कहैं साँच।
ऐसे या कलिकाल में, प्रगट भये हैं पाँच ॥९८॥
तिनको मुख खण्डन करण, हरण कलेश अपार।
प्रगट भये हरिव्यासजू, स्वयं रूप अवतार ॥९९॥
कोने में करिबो करें, घुचपुच घुचपुच चोर।
रसरसिक हरिव्यास की, चौडाही में ठौर ॥१००॥
लियें नरक दीये स्वरग, रसरसिक भुगतन्त।
दोऊनते न्यारे रहें, जिनको नाम महन्त ॥१०१॥
महताई मुसकलि महा, नाम धरें कहा सिद्धि।
रसरसिक जिनके नहीं, आनँद रूपी ऋद्धि ॥१०२॥
भला कहा रीझे नहीं, बुरा कहा न खजन्त।
रसरसिक सोई जानिये, आनँदरूपी सन्त ॥१०३॥
रसरसिक रस भजनकी, गति समुझे नहि कोय।
मुहाचही चल तियनकें, किये न भजन कछु होय ॥१०४॥
रसरसिक संसार की, देखो उलटी चाल।
परिहरि नरहरि चतुरदशि, पूजें षेतर पाल ॥१०५॥
जाकों चाहत हैं दियो, लीला रस अधिकार।
रूपरसिक तो बुद्धि कों, बारों बार धिकार ॥१०६॥
प्रथम दईवी जीव में, करम ज्ञान करि हीन।
फिरि तिनही में सोधिये, लीला रस में लीन ॥१०७॥
लीला रस के जीव में, युगल ध्यान रतजोय।
युगल ध्यान रत में कोऊ, सखी भाववुत सोय ॥१०८॥
सखी भाववुत में कोऊ, वृन्दावनी उपास।
तिनहू में पुनि देखिये, श्रीहरिव्यासी दास ॥१०९॥
श्रीहरिव्यासी दास में, महावाणी रुचिजाहि।

तिनसों हिलिमिलि कीजिये, हिय की बात उमाहि।।११०।।
अधिकारी बिन जोकहूं, भाखै यह रसरीति।
रूपरसिक सुख नहि लहै, उल्टी ह्वै विपरीति।।१११।।
सोया रस अधिकार को, साधन नाही कोय।
श्रीहरिव्यास कृपा करें, तबही प्रापति होय।।११२।।
तातें श्रीहरिव्यास की, निति प्रति कृपा मनाय।
कष्ट किये पावै नहीं, मिलें सहजसो आय।।११३।।
सकल कर्म अरु धर्म के, फल कलियुग में नष्ट।
एक शरण हरिव्यास की, बिना और सब कष्ट।।११४।।
रूपरसिक हरिव्यास को, भजन महाजल जानि।
जाके ऊठे बुदबुदे, सो सब इष्ट बखानि।।११५।।
रूपरसिक हरिव्यास के, नित विहारकी बूंद।
एक तनक जो ऊछटी डारें सबको रूँदि।।११६।।
रूपरसिक हरिव्यास की, नाहि बराबर कोय।
जाके आधे नामते पाप सबै क्षय होय।।११७।।
दुर्लभ या संसार में, रस भजनी रतिवान।
रूपरसिक ऐसे बहुत, नीरस रीस निवान।।११८।।
रूपरसिक हरिव्यास कौ, बडौ भरोसो राखि।
जन जन आगें रोय कें, जिन खोवे सौ साखि।।११९।।
साखि रही तो सब रही, साखि गया सब जाय।
तातें जाता भाँति तू, श्रीहरिव्यासहि गाय।।१२०।।

इति श्रीमत् हरिव्यासदेव यश अमृत सागर लहरी। वन्ध रसिक मन हरणी महा अर्थ की गहरी।। प्रथम लहरिया महा सुहाई युगल सेव वरदाई। रूपरसिक गाई छवि छाई निज पूरणता पाई।।

।। इति प्रथम लहरी ।।

।। दोहा ।।

दूजी लहरी लिखूंजु, अब दायक युगल विलास।
सुभग सवैया बन्धकी, सुमिरि सुमिरि हरिव्यास।।१।।

।। सवैया ।।

हरिव्यास आस सदा सुखरासा।
केतेक नेमहि में रहे लागि केते बँधे परे प्रेमके पासा।।
केतेक कर्म महातम ज्ञान में केते लगे जप तप्प तलासा।
केतेक तीरथ सेवत हैं अरु खेवत हैं बन में दुख दासा।।
और की आस निरास सबै हरिव्यास कीआस सदा सुखरासा।।१।।
काहेको झुण्ड लिये जगमें फिरौ काहेको मूरख मुण्ड मुडावो।
काहेको तुण्डपै राख लगावत काहेकु सुण्डि सिन्दूर चढावौ।
काहे कौ गुंडत डोलो गरीवनि काहेकु रुण्डौ केश रखावौ।
जो सुख चाहतहो अपनैतौ तौ हरिव्यासहि काहे न गावो।।२।।
कोटिक यज्ञ किये तौ कहा भयौ वेद पढे बृथही वचकूटे।
स्वर्ग में जाय कहा सुख पावत पाछेहि आवत डार के तूटे।।
साधन और किये सब श्रेय के तौ उरहे रसतें जु अहूटे।
सो जन श्रीहरिव्यास भजैं नही ताजनके हिय भाजन फूटे।।३।।
देवभयौ सुरदेव भयो नरदेव भयौ नरकौ तन पायौ।
स्वर्गऊरु भूमि के भोग भुगे तोउ आपदा को कहुँ ओर न पायो
जाय रसातल राज कियौ तौउ दूनोइदूनौ रोग बढायो।
ऐपरिअज्ञ कवूँहि सुचितहै श्रीहरिव्यासहि नाहिं न गायौ।।४।।
सत्यहूके सिरदारहि देख्यो जो सेवक सुखदेत है सोई।
और सुनौ कैलाश के वासी सदाशिव नाम कहावत जोई।।
क्षुद्रनकी कहो कोन चलावत जो सुख पावत ध्यावत सोई।
है सबही दुखमूल महायक श्रीहरिव्यास भजे सुख होई।।५।।
दुर्लभ या नर देहको पाय गमावत है सठ सोच न आवे।

बावरो होय तो बैद लगाइये कौन सयानेंको सीख सिखावै।।
आपनें हाथन पायन ऊपर पाथर डारत को समुझावै।
ऐसरि कौउतौ चाहे कह्यौ इरे श्रीहरिव्यासहि काहि न गावै।।६।।
कोउ कहैं हरिव्यापक ब्रह्म हैं कोउ कहैं वैकुण्ठ ठिकानो।
कोउ महा वैकुण्ठ दिखावत कोउ सदा गोलोकहि मानें।।
कोउ कहै हरिसागर क्षीरमें कोउ कहै परमेश्वर जानैं।
भूलि रहे भ्रममें सबही हरिव्यास बिना हरिको पहिचानैं।।७।।
कोउ कहैं हरि तीरथही में हैं कोउ कहैं हरि पञ्चनमाहीं।
कोउ कहैं हरि वाम्हनही में हैं कोउ कहैं हरि हैं सब पाहीं।।
कोउ कछू कहै कोउ कछू कहै ऐसरितासुकी ठीक न ठाहीं।
रूपरसिक बिचारि कहै हरिव्यास बिना हरि जानत नाहीं।।८।।
काहूने लोभ के लिये कही अरु काहूने मोहके लीये कही है।
काहूने लीवे कही अहं कारहि धारहि जो जाकी बुद्धि वही है।।
काहूने मान बड़ाई लिवें कहि काहूने द्वेषकी रीति गही है।
रूपरसिक विचारि कहै हरिव्यास कहै सोई बात सहीहै।।९।।
मोहि प्रतीति न आवत है कछु वेद बतावत भेद कह्यौजू।
आगम तन्त्र पुराणको मत सोध्यो सब जग जेतो लह्यौजू।।
मारगहू बहुभांतिन के तिनके सुनते चित भ्रम गह्यौजू।
और कह्यौ जो कह्यौ न कह्यौ हरिव्यास कह्यौ सोई कृष्ण कह्यौजू।।१०।।
सर्वहि भूमिको साज मिल्योरु रसाधिपहू होइ राज कियोजू।
शासन पाक को आसन पायकें अम्मृतहू कई पोत पियोजू।।
सम्पति पाय सबै परमेष्ठीकी सिष्ट में सिष्ट कहाय लियोजू।
श्रीहरिव्यासहि जानें बिना धिग है धिग है जिनकौजु जियोजू।।११।।
दान कियो जप तप कियो व्रत नेम कियो अरु प्रेम लगाई।
तीरथ तीरथ न्हान कियो तन शुद्ध कियो मन शूल गमाई।।
यश कियो जगदीश भज्यौ भव रोग तज्यो अति योगिता पाई।

साधुन सोतो सबेहि कियो तब श्रीहरिव्यास की छाप कहाई।।१२।।
मंगल आदिदै शयन प्रयन्तलो सेवनके सुखहीको धारण।
भूलि कभू स्वपने न रमें मन बाद विवाद विषाद बिकारन।।
पावन नाम प्रिया हरि को जिन कीयो महासुखतें जु उचारन।
सोहरिव्यासही सदा सुखराशि निकुंज निवासी को जाउहूँ वारन।।१३।।
नौग्रह को न चलै कछुही बस बारहि राशि सदा दुखटालै।
भैरव भूतरु प्रेत भवादिक क्षेतर पाल टगेटगन्हालै।।
यक्ष पिशाच खईश बिजासनि पित्र बिनायक बीर बितालै।
श्रीहरिव्यास को दास भयो जब जालिम जोरिको जोर न चालै।।१४।।
व्यासजु वेद के चारि किये तिनहू मेंहु नहीं तनको दरशायो।
पांचवों वेद कियो महाभारत ओ इतिहासहु मांहि छिपायो।।
शारद मात सुरेश ओ शेष महेश गणेशहु पार न पायो।
जो रस दुर्लभ हुते है दुर्लभ सोरस श्रीहरिव्यासजू गायो।।१५।।
हैं हरि धाम सदा सर्वोपरि जो परसों पर वेद कहैं मग।
शूर के नीचे शेष के ऊपर गोपुरहूतें अगोचरसो भग।।
ठौर जहां सबके शिर मौरको नेंकहूँ लागें नहीं लग।
एक सौ बीशरु एक सिढी पर श्रीहरिव्यास के दास धरें पग।।१६।।
मायिक वस्तु जिती जगमें तिनकौ प्रवेश कछु इहि ठाहैं।
दिव्यहि सम्पति सेवत हैं सुख दम्पति के मुखकी रुख चाहैं।।
लाडिली लालकी लीला रसालहिं पीवत जीवत रैन दिना हैं।
औरनकी गम नाहि जहां हरिव्यास के दास बसैजु तहाहैं।।१७।।
हंस कह्यौ सनकादिक सों सनकादिक नारदकें हिय नाख्यौ।
नारदजू कह्यौ निम्बदिनेशहिं निम्बदिनेश निवासहि दाख्यौ।।
लैकें निवास दिये विस वादिन जो इनले अति गुप्तहि राख्यौ।
दैविक जीव उधारनकें हित सो रस श्रीहरिव्यासजू भाख्यौ।।१८।।
श्रीहरिव्यास स्वयं अवतारी एकहि एकहिकें

सब दायक दूसरी दैनकौं आप दुखारी।
तीसरीकी कहो कौन कहानी है जो महावाणी में आप प्रचारी।।
आज्ञा भई जिनकौ जितनेहिकी दीवे तिन्हें तितनेही उघारी।
अंश कला अवतारहि धारिबे श्रीहरिव्यास स्वयं अवतारी।।१९।।
श्रीहरिव्यास को नित्य विहारी केतेहु नैमित
आयसु पायकें जो सो दिना करिलेत पसारा।
फेरि परें त्रिगुणानके फेरमें होत नहीं तहातें निरवारा।।
याको तौ एक अखंड प्रताप दिपै दिनही दिन आप अपारा।
और विहार विहारिहिहैं पर श्रीहरिव्यास कौ नित्य विहारा।।२०।।
श्रीहरिव्यास कौ प्रेम है न्यारौ।।
काहूकौ प्रेमतौ नेम मिल्यौ अरु काहू को नेम तटस्थ निहारौ।
काहूको सेयवे माहिरल्यौ अरु काहू को सेयवेतें अगवारौ।
काहूकौ कैसिय भाँति मिल्यौ अरु काहू कौ कैसिय भाँति विचारौ।
और कौ प्रेमतौ प्रेमहि है पर श्रीहरिव्यास कौ प्रेम है न्यारौ।।२१।।
हरितो व्रजराज कुमार हैं कृष्ण सुतो चतुरा कृतिकौ नितिरानी।
व्यास पदारथ श्रीमति राधिका कृष्ण के प्राणाधिकातिहि मानी।
रूपरसिक कियो यह अर्थ सुदेखिकें आगम वेद बखानी।
नित्य विहारी किशोरी किशोरकी मूरति श्रीहरिव्यासही जानौ।।२२।।
भक्तिको भेद पायौजु क्यौंही यौंहीजू खेद कियो पढि वेदकी काँडी।
कर्म कुचील कमाय कमाय कें आयु वितायि दई विधि माँडी।।
मूरख मूरखता मद छायकें छोडन योग्य नहीं सोई छोडी।
श्रीहरिव्यास कौ दास भयें बिन होयगीरे सठ होयगी भांडी।।२३।।
सुन्दर साज समाजही पायकें राज कियो भुविको सगरौजू।।
सूर कहाय गरूर बढाय रह्यौ मन लाय गुणें अगरौजू।।
श्रीहरिव्यास कौ दास भयौ नहि तौ तन तासु हुताश जरौजू।
रूपपनौ सब कूप परौ अरु भूपपनौ सब भार परौजू।।२४।।

।। दोहा ।।

रूपरसिक हरिव्यासकें, एक भजन कौ लेश।
ताकी महिमा कहनकौं, हारे कोटिक शेष।।१।।
आरषकविष्णु देवजू, पौरशुक विजयदेव।
कछू लह्यौ सो इन कह्यौ, या मृदु रसकौ भेव।।२।।
जयति नमो हरिव्यासजू, महाप्रेम परचार।
दम्पति इच्छा हरिप्रिया, महावाणी करतार।।६।।

।। मांझ ।।

इति श्रीमत हरिव्यासदेव यश अम्मृत सागर लहरी।
सुभग सवैया बन्ध मनोहर महा अर्थ की गहरी।।
या लहरी दूजी सुख दाई लागत महा सुहाई।
रूपरसिक गाई छविछाई निज पूरणता पाई।।
इति द्वितीया लहरी।।

।। दोहा ।।

तीजी लहरी लिखूं अब, तामें दोय बसन्त।
प्रेम छबीसी पचीसी में, शिष्य जनन को तन्त।।

* राग बसन्त *

चले बसन्त बधावन जन अनन्त। जहां हरिव्यास राजा महन्त।।
वृन्दावन जमुना तीर रम्य। हरिव्यास शरण बिन सो अगम्य।।
तहां नव निकुञ्ज महा सुरंज। बहै त्रिविध पवन अलि गुंज गुंज।।१।।
जहां दम्पति सुख सम्पति अपार। प्यारी प्रियतम कौ नित विहार।।
तहां हितू सखी अगिवानि जानि।
जहां सकल सन्त दल पहुँचे आनि।।२।।
सब परशुरामजू संग साध तिनकी अतिही आशय अगाध।
अन गन सबही जन प्रेम राशि। हरिप्रिया चरणके सब उपास।।३।।

तिनमें पुनि गुनि गुनि कहौ सुजान जे दीनबन्धु करुणा निधान।
महा परा प्रेम में सकल भौन। जिनि बहुत पतित तारे मलीन ॥४॥
सब वेदागमको अरथ जान। तिनके गुणको कवि करै बखान॥
सनकादिक मारग सकल निष्ठ। जिनके अनन्य हरिप्रिया इष्ट ॥५॥
जिन किये रसिकवर इष्ट भिष्ट। तिनकी श्रीमुख वाणी सुमिष्ट॥
गणि एक एक ते गुण गरिष्ठ। तिन पद रज ते भये अनन्त शिष्ट ॥६॥
जय जय स्वामी अतिही उदार। पुनि स्वभूराम करुणा अगार॥
बोहित सोहित केशव घमंडि। दुलहडियों माधव प्रेम दंडि ॥७॥
लियरौ गुपाल हरि धर्मजान। पुनि मदन गुपालजु रसिक प्रान॥
गोपाल दयालजु परमहंस। मोहन मतवारी जन सुवंश ॥८॥
नरसिंह विष्णु विट्ठल प्रवीन। सारँग स्वामी श्रीधर नवीन॥
वल्लभ दुल्लभ सुल्लभ रसाल। पुनि ऋषीकेश भूसुर कृपाल ॥९॥
द्वटौ गुपाल छविजाल संग। धौंधी भगवान सखी सुरंग॥
मंगलजु वाहवल भटगुपाल। पुनि ज्ञान ध्यान गुरु युगल भाल ॥१०॥
हरिरामव्यास व्रय अति नवीन। सब सन्त मण्डलीके अधीन॥
प्रेमा चिन्तामनि दोउ साथ। चिन्ता हरि लीला शुक सुनाथ ॥११॥
द्वादश गुपाल कौ वृन्द जानि। तिनकी संख्या कौ कहै बखानि॥
पुनि जन मुकुन्द सुखकन्द चन्द। श्रीप्रेम चन्द प्रेमी गोविन्द ॥१२॥
बनबासी सन्यासी श्यामदास। ईश्वर विज्ञान धन प्रेमवास॥
पद्मावति पद्म प्रेम स्वामि। मधुसूदन दामोदर सुनामि ॥१३॥
करमा माधव धरमा सुधीर। मीरा हुसेन वाजीदमीर॥
पुनि पीरदास जनहरण व्यास। श्रीहंसदास महा प्रेमरास ॥१४॥
रँगदेविदास हित दासरास। चतुरौ लघु मोहन विपिन बास॥
मुलतानि निमानी रसनिधान। चित सुख मधु मंगल ज्ञान ध्यान ॥१५॥
मुरली अनन्त संग सत्य वादि। पुनि गंगग्वाल आचार्यादि॥
श्रीसूरश्याम रँग धाम नाम। किल मङ्गल जोसी जीति काम ॥१६॥

हरिव्यास प्रथन इक हंसदास। रघुनाथदास सँग छेमदास॥
कल्याण जनाधिप राज साध। जिन प्रिया चरण भूषण सुलाध ॥१७॥
सरस्वती भारती गिरी अनन्त। तिनकौं श्रीभटजू किये सन्त॥
गोविन्दा चारज तत्वजान। ब्रजवल्लभ गिरिधारी विज्ञान ॥१८॥
मुनी राज मुनीशर चतुर बाह। जग जीवन कन्हर मोहदाह॥
प्रहलाद ऋषभ अहलाद दास। रस रास उपासक काम नास ॥१९॥
सेतू हेतू नेतू सुचेत। जगजेतू सेतू प्रेम षेत॥
सर्वज्ञ अज्ञ गुरु गुरुगोपाल। तिन किये विधर्मी अति रसाल ॥२०॥
इन आदिअपरिमित जन महन्त। बहु देव नाग अप्सरा नन्त॥
तिनकी संख्याकौ नाहि अन्त। सब सामगरी ल्याये बसन्त ॥२१॥
पहुचे वृन्दावन परमधाम। तहाँ हरिव्यास रसिकाभिराम॥
सब हिन भूपरि दण्डोत कीन। हरिव्यास न भोकहि प्रेम भीन ॥२२॥
पुनि कियो महोत्सव विपिन माँह।
अति नव निकुञ्ज माधुरी छाँह॥
बहुभाँति युगल के भोग राग। महा खेल भयो तहाँ बसन्त फाग ॥२३॥
उपमा जु खेलकी कही न जाय।
जो कोटि कोटि मुख जीह पाय॥
जहाँ खेलत श्रीहरिव्यास देव। ताकी त्रिगुण प्रसुता करत सेव ॥२४॥
अनहद बाजे बाजैं रसाल। बहुभाँतिनकीजु उड़े गुलाल॥
अतर केशरि के तहाँ तड़ाग। तहाँ भरे घोरि अम्बुज पराग ॥२५॥
याविधिखेलत नित भक्तरूप। हरिव्यास देव हरि प्रियारूप॥
अन गन महन्त जन लिये साथ। जन रूपरसिक के प्राणनाथ ॥२६॥

॥ दोहा ॥

इति श्रीरूपरसिक कृता, बसन्त छब्बीसी नाम।
पूरण श्रीहरिव्यास की, दाई दम्पति धाम ॥१॥

वसन्त पचीसी अब लिखों, सो रस पति आगार।
सुमिरि हरिप्रिया पद पदम, श्रीहरिव्यास उदार।।२।।

" राग बसन्त "

खेलत वसन्त भगताधिराज। लिये अतेह पुरको सब समाज।।
श्रीपरशुरामजू लिये क्षत्र। चामर नर जय जय किये पत्र।।
जहाँ स्वभूराम छाजे मृदंग। श्रीऋषीकेश साजै उपंग।।१।।
तहाँ बोहित उद्धव करत गान। लियरो गुपाल आने जुनान।।
दुलहड़ियो स्वामी लिवें चंग। जहाँ वीरमधीरम करत रंग।।२।।
जहाँ नृत्य करत द्वादश गुपाल। जन महावाणी गावैं रसाल।।
जहाँ अनंतदास उडवें गुलाल। बहु रंग रंगकी तिहीकाल।।३।।
तहाँ माया वर्षत दिव्य फूल। सब प्रेम विवस तन गये भूल।।
सब सन्त खरे हरिव्यासकूल। तिनकी संख्या नहीं अनन्त दूल।।४।।
केशव केशरि रंग कियो अपार। छिरकैंजु नाहुनल अति उदार।
माधव अबीर उडवैंजु भूरि। ता मधि अनन्त सौगन्ध चूरि।।५।।
गोपाल दिव्य बजवै सुताल। ढूँटा गुपाल ढोलक विशाल।।
भेरी बजवै केशव प्रवीन। जो सदा रहत पर प्रेम लीन।।६।।
व्रज वल्लभ बजवै गजकपाल। जहाँ हंस बजावै दास ताल।।
जहाँ यन्त्र बजावै धौंधीदास। बंशी बजवै तहाँ दास व्यास।।७।।
सहनाई बजावै परम हंस। मुख चंग युगल बजवै सुवंश।।
तत्वज्ञ बजावै हस्त ताल। नौवति टंकोरत जन गुपाल।।८।।
कृष्ण जीवनि लछीराम संग। दोऊ भीजि रहे हरिव्यास रंग।।
जहाँ कृष्णदास ले अति उसास। मुलतानि विमानी धरै आस।।९।।
हरि नवल नगारन देत ठोर। छीतम जखड़ी को करत सोर।।
भागवत बजावत बंक भेरि। जनछीत नचै हरिव्यास हेरि।।१०।।
महा राय गिरगिड़ी जहाँ बजाय। अनहद बाजे तहाँ रहे छाय।।
तहां नवल नफीरि बजावै सन्त। हरिव्यास सुयश मैं सोमैमन्त।।११।।

जहां विष्णुपुरी नरसिंह साथ। कमलापति केशो गोपिनाथ।।
तहां क्षेमदास रघुनाथदास। सब नृत्यत श्रीहरिव्यास पास।।१२।।
मोहन मतिवारा घट बजाय। तहां तानसेन मन लाय गाय।।
पिचकारी छोड़त मुरलीदास। अनगन जन लीनें आस पास।।१३।।
मीरा मारू गावै सुराग। गिरिधारी सों मन तास लाग।।
गोपाल भट्ट नट राग लीन। वल्लभ हरिव्यास सुप्रेम भीन।।१४।।
सधनों जहाँ प्रेम पयोधि लीन। प्रेमा ताण्डव गति नृत्य कीन।।
तहाँ शूरश्याम भये शूरवीर। सब सन्त गुलाल भरें अबीर।।१५।।
जहाँ अलि भगवान करेंजु खेल। सो सखी भाव में रेल पेल।।
महा सन्त अंस भुज मेल मेल। सन्तन मुख लावैं गन्ध तेल।।१६।।
जहाँ भाव बतावत ईसरदास। आचारज सेखर करत हास।।
कन्हर लक्ष्मी दासानुदास। जहाँ टीकमदास जन पूरणदास।।१७।।
विद्यापति रसिकानन्द संग। मधुसूदन कर माजन त्रिभंग।।
पुनि अक्कजसू स्वामी सुजान। गावै तहाँ अतिही सुर बंधान।।१८।।
जहाँ कृष्णा वलि रामदास। महा लघु मोहन जन करण आस।।
हरिव्यास दास सँग प्रेम सिन्धु। रसिकेश्वर स्वामी भक्त बन्धु।।१९।।
सब सन्त उचारन जय अनूप। जय सर्वेश्वर हरिव्यास रूप।।
सबहीनकौं दीनौं प्रेम दान। हरिव्यास देव करुणा निधान।।२०।।
यह खेल मच्यौ अतिही अनूप। श्रीवृन्दावन रसिकेश भूप।।
तहाँ रँग देवीश्रुत प्रिया श्याम। जहाँ सदा विराजत अष्टयाम।।२१।।
तहाँ हित सहित बहु वृन्दवाम। तिनकी द्युति मोहे कोटि काम।।
जय परमधाम लोकाभिराम। श्रीरंगवती को रहस ठाम।।२२।।
युग युग में प्रगटित हरिव्यास। सन्तनकी पूरण करण आस।।
परिकरयुत श्रीहरिप्रिया आप। ताकी त्रिगुण प्रसूता करत जाप।।२३।।
श्रीभट पटराजा अति उदार। ताकी लीलाकी नहीं वार पार।।
जिनि महावाणी बरणी रसाल। जगजानी मिलानी युगल लाल।।२४।।

महिमा अपार हरिव्यास देव। बिन चरण शरण को लहै भेव॥
जन रूपरसिक के प्राण नाथ। सब दिना बसौ मम हृदय माथ॥२५॥

॥ दोहा ॥

इति श्रीरूपरसिक कृता, बसन्त पचीसो नाम।
पूरण गुरु हरिव्यासकी, दाई श्यामा श्याम॥१॥

॥ माझ ॥

इति श्रीमत हरिव्यास देव यश अम्मृत सागर लहरी।
प्रेम बसन्त छ्वांसी पचीसी शिष्य अर्थ की गहरी॥
या लहरी तीजी सुखदाई शिष्य नामते छाई।
रूपरसिक गाई मन भाई निज पूरणता पाई॥१॥

इति तृतीया लहरी।

॥ माझ ॥

अथ श्रीमत हरिव्यास देव यश अम्मृत सागर लहरी।
श्रीहरिव्यास देव नामक के अर्थ मञ्जरी गहरी॥
या लहरी चौथी सुखदाई परा प्रेमकी छाई।
श्रीमच्चरण सरोज सौरभी रूपरसिक जन गाई॥१॥

॥ दोहा ॥

पाप हरें हरि पद अरथ, व्यास युगल कों देत।
रूपरसिक हरिव्यास भजि, मन वच क्रम करि हेत॥१॥
हरै अविद्या मूल हरि, व्यास करैं विनि पास।
रूपरसिक तजि आस सब, भजि निशि दिन हरिव्यास॥२॥
स्वयं कृष्ण हरिपद अरथ, व्यास भक्ति विस्तार।
रूपरसिक हरिव्यासकौ, नाम सकल श्रुतिसार॥३॥
स्वयं कृष्ण हरिपद अरथ, प्रिया अर्थ राधाजु।
रूपरसिक हरि प्रिया भजि, मिटे सकल बाधाजु॥४॥
स्वयं कृष्ण हरिपद अरथ, व्यास राधिका जानि।

रूपरसिक हरिव्यास कौ, नाम युगल करिमानि॥५॥
हरि कहता अघ सब हरै, व्यास कहत सुखरास।
होइ तुरत मुख उचरता, रूपरसिक हरिव्यास॥६॥
श्रीराधा हरिकृष्ण पुनि, व्यास जानि तन चारि।
देव सखी त्रिगुणी नृगुण, अर्थ यहै उर धारि॥७॥
हरिपद राधा व्यास हरि, ओत प्रोत दोउ नाम।
रूपरसिक हरिव्यास भजि, आपहि श्यामा श्याम॥८॥

॥ चौपाई ॥

इति हरिव्यास देव मञ्जरी। अब नानारथ सम्पति भरी॥
दम्पति कृपा महा रस झरी। अनायास भवसागर तरी॥
निर्गुण रसिकन जीवनि जरी। दायक भाव युगल सहचरी॥
बटके बीज न्याय अनुसरी। पूरण रूप रसिक वर करी॥

॥ माझ ॥

इति श्रीमत हरिव्यासदेव यश, अम्मृत सागर लहरी।
तीनमास हरिव्यास देवके, तास अर्थकी गहरी॥
या लहरी चौथी सुखदाई, रसिकनकी मनभाई।
रूपरसिक कृत महा सुहाई, निज पूरणता पाई॥१॥

॥ इति चतुर्थी लहरी ॥

॥ दोहा ॥

लहरी पँचमी अब लिखौं, सुमिरि देव वनराज।
तामहँ चौदह रत्नकी, बात महा सुख साज॥१॥

॥ राग अलहय्या बिलावल ॥

अथ श्रीमत हरिव्यास यश, चौदह रत्न सुनाम।
महा दिव्य रसनिधि प्रगट, रूप रसिक हिय धाम॥१॥

॥ आभास दोहा ॥

भक्तन मन भावन पतित, पावन सावन प्रेम।
ऐसे श्रीहरिव्यासजू, गाय सदा सजि नेम॥

॥ दोहा विशेष ॥

भक्ति भावन पतित पावन प्रेम सावन गाइये।
माया त्रिगुण प्रसूतिका गुरु श्रीहरिव्यास मनाइये॥१॥
महा मुनिवर तीन पुरचर सकल मुख धर पद गहौं।
आचारज बहु वृन्द स्वामी, श्रीहरिव्यास सदा कहौं॥२॥
ग्रन्थ करता मोह हरता रसिक भर्ता रस घना।
श्रीभट पट महाराज श्रीयुत श्रीहरिव्यास भजौ मना॥३॥
दिशा जेता सकल नेता भक्ति खेता चित धरौ।
रसिक रसनिधि चतुर सबविधि श्रीहरिव्यास भजन करौ॥४॥
सर्वाचारज महा आरज कारज सुर नर के करन।
श्रीहरिप्रिया स्वरूप अवगति श्रीहरिव्यास भजौ चरन॥५॥
महावाणी युगल दानी रसिक गानी जिनि कही।
युगलरूप अनूप सबदिन श्रीहरिव्यास भजौ सही॥६॥
हरण दुखके करण सुखके चरण पंकज जासके।
मन वचन क्रम करि भजौ पद सर्व गुरु हरिव्यास के॥७॥
कमल लोचन दुरित मोचन अंग गोरोचन छवी।
गणपति स्वरपति अनन्तके पति भजि हरिव्यास महाकवि॥८॥
सँग सन्त अनन्त राजत प्रेममें मैमन्तजू।
अति उदार अगार विद्या भजि हरिव्यास महन्तजू॥९॥
अति सुशील रँगील दम्पति देत ढील न सो करै।
अर्द्धनाम उचार जिनको त्रिविध ताप तुरत हरै॥१०॥
छाप तिलक सुनाम माला मंत्र पाँचौ दायकम्।
देत युगल समीप धरि हरिव्यास सतगुरु नायकम्॥११॥

हरि अर्थ नँदनन्द मानों व्यास जानों राधिका।
हरिप्रिया हरिव्यास आनों उर सदा भव बाधिका॥१२॥
शरण श्रीहरिव्यासजूकी कृष्ण श्रीमुख गावहीं।
चरण आश्रित बिना तिनकी नित विहारिन पावहीं॥१३॥
श्रीभट शिष्य अनेक तिनकी मुकुट मणिगण भास्करं।
नाम अति अभिराम तिनको त्रिविध ताप विनाशकरं॥१४॥
रूप रसिक ये रत्न चौदह यत्न कर गावैं कोऊ।
अतनु हतन जु होय ताको युगलजू पावै सोऊ॥१५॥

॥ दोहा ॥

इतिश्री रूप रसिक कृतं चौदह रत्न सुनाम।
पूरण श्रीहरिव्यासके पाये रसनिधि ठाम॥१६॥

॥ चौपाई ॥

इति हरिव्यास यशामृत सागर। श्रीगुरु भक्ति प्रेमको आगर॥
ताकी पँचमि लहरि सुहाई। पूरणता पाई मन भाई॥

॥ इति पंचम लहरी ॥

॥ दोहा ॥

छठी लहरी जानि अब, लिखूँ दोयता माँहि।
पँचरत्न अरु षट रतन, महा मनोहर आँहि॥१॥

॥ दोहा विशेष राग अल्हया बिलावल ॥

श्रीवृन्दावन माँहि राजत हंस राधानाथजू।
सनकादिक गुरु श्यामश्यामा हरिप्रिया सखि साथजू॥१॥
सनासनमें क्षीरसागर रमानाथ विराजहीं।
कृपाचारज महाआरज सनकादिक तहाँ भ्राजहीं॥२॥
नारदाश्रम सुनो सन्तो नारदकुण्ड निगम कहैं।
त्रेताचारज महोदारज निम्बादित गुरु तहाँ रहैं॥३॥
सकल सुखको धाम श्रीमत निम्बग्राम बखानिए।

द्वापरयुग आचार्य राजा बसत तहाँ उर आनिए ॥४॥
श्रीनिवासाश्रम कहाँ श्रीकुंड शुभ ब्रजमण्डमें।
कल्याणा चारज नितरहैं तहाँ जानत चौदह खण्डमें ॥५॥
पाँच रत्न सुनाम निशिदिन रूपरसिक जो गाइहैं।
चारियुग आचार जनके स्थान बस सो पाइहैं ॥६॥

॥ इतिश्री पंचरत्न समाप्तम् ॥

॥ अथ षटरत्न लिख्यते ॥

॥ दोहा विशेष ॥

श्रीवृन्दावनकी कोकहै महिमा वैकुण्ठ तासम नाहिंजू।
सनकादिक गुरु श्यामश्यामा हरिप्रिया तामाँहिजू ॥१॥
तहाँ यमुना स्नान कीजै लीजै सुख गोविन्दकौ।
दरश करि वंशीवटादिक महा आनँद कन्दकौ ॥२॥
सनातनकी अधिक महिमा क्षीरसागर न्हाइए।
शेषशायी दरश करिए सनकादिक पद ध्वाइए ॥३॥
नारदाश्रम महा महिमा नारदकुण्ड में न्हाइए।
युगलजुकौ ध्यान करि तहाँ श्रीनारद गुन गाइए ॥४॥
निम्बपुरकी अमित महिमा रंगकुण्ड में न्हाइए।
श्रीनिम्बार्कित चरणमें तहाँ अनन्य चित्त लगाइए ॥५॥
श्रीनिवासाश्रम सु महिमा अनन्त श्रीकुण्ड वर्णकौ।
स्नान करि तहाँ ध्यान धरि मन श्रीनिवास सुचरणकौ ॥६॥
जोकेउ बडभाग नर षटरत रतन नित गाइहैं।
रूपरसिक सुजान मनसों सही दम्पति पाइहैं ॥७॥

इति श्रीषटरत्न समाप्तम् ।

॥ चौपाई ॥

इति हरिव्यास यशामृत सागर। तामें पंचषट रत्नउजागर॥
ताकी छटी लहरि सुखराशी। पूरण भई महा अघनाशी॥

इति छटी लहरी ॥६॥

॥ दोहा ॥

लहरी सम्मी में लिखों, सूक्षम मन उपदेश।
बहुरिजु चौदह चौपई, भरी सुयश भगतेश ॥१॥

अथ सूक्ष्म मन उपदेश लिख्यते।

॥ दोहा ॥

रेमन श्रीहरिव्यास भजि, दायक श्यामा श्याम।
अखिल लोक गुरु प्रेम निधि बासी दम्पति धाम ॥१॥
रेमन षटपट छांडिदै, श्रीभट दास मनाय।
बनवासी नट मुकुट धरि, प्रिया मिलै तब आय ॥२॥
रेमन जगसों प्रीति तजि, भजि भजि भजि हरिव्यास।
सजि सजि निर्गुण संगको, तब पावौ सुख रास ॥३॥
निर्गुण संग हरिव्यासकौ, और त्रिगुण सब जान।
ताबिन राधा लालसौं, होव नहीं पहिचान ॥४॥
रेमन श्रीहरिव्यासजू, आचारज राजेश।
चरण शरण तिनकी बिना, मिलै न भूलि बनेश ॥५॥
रेमन श्रीहरिव्यासजू, श्रीहरिप्रिया सुजानि।
श्रीदासी श्रीयुगलकी, सदा सखी अगवानि ॥६॥
रेमन श्रीहरिव्यासजू, दश दिश जीतन हार।
अति उदार सब जगत में, कियो भजन विस्तार ॥७॥
रेमन श्रीहरिव्यासजू, परम कृपाल सुजान।
चरण शरणही मात्र ते, देत युगल वरदान ॥८॥
कर्म धर्म सब तजि मना, भजिलै श्रीहरिव्यास।
तब पावै तू प्रेम निधि, श्रीमत विपिन विलास ॥९॥
रेमन निश्चय जानि तू, लोभ सकल अघ मूल।
सो तजि भजि हरिव्यासजू, हरण ताप त्रयशूल ॥१०॥

रेमन श्रीहरिव्यास बिन, तेरो नाहि न कोय।
तास कृपातें पाइये, प्यारी प्रियतम दोय॥११॥
रेमन चञ्चल सकल तजि, खल मेरी यह बात।
सुनि हिय धरि हरिव्यासके, चरण अरुण जल जात॥१२॥
रेमन या कलि काल में, और उपाय न मित्त।
अर्द्ध नाम हरिव्यासको, भजौ सदा दृढ चित्त॥१३॥
कर्म धर्मकी पासतें, रेमन बँधिए नाहि॥
भजिये श्रीहरिव्यासजू, रसिक मण्डली माहि॥१४॥
रेमन भूलि न कीजिए, साधुन को अपमान।
सो अपराध छूटै नहीं, कहतजु वेद पुरान॥१५॥
रेमन श्रीश्रीहरिव्यास के, दास चरन की धूरि।
शिर धरिए अति प्रीतिसों, दायक मङ्गल भूरि॥१६॥
रेमन श्रीहरिव्यासके, दासन के संग पाय।
महा प्रसाद जल आदिदै, और संग नहीं खाय॥१७॥
भजन तेज घटिजात है, और संग में खात।
तातें शठ यह समझिले, मेरी उत्तम बात॥१८॥
रेमन श्रीहरिव्यास के, दास दास पर साद।
सदा नेम धरि पाइए, धारि हिये अहलाद॥१९॥
साधु धर्म हरिव्यास के, दासन तें मन सीख।
तिन बिन मिलै न लोक में, साधु धर्म की भीख॥२०॥
रेमन श्रीहरिव्यासजू, रसिकन को धन प्रेम।
तिनके चरणाश्रित बिना, बँध्यो सकल जग नेम॥२१॥
रेमन श्रीहरिव्यास के, दास जान पितु मात।
तिनहीसों कीजै सदा, महल टहल की बात॥२२॥
रेमन या संसार में, भजन अनेक प्रकार॥
श्रीहरिव्यास उदारको, भजन सारको सार॥२३॥

तू मेरो अतिही हितू, तोसों कहौं विचारि।
रेमन निहचो करसदा, श्रीहरिव्यास चितारि॥२४॥
राधा माधव मिलन की, बात यहै सत जान।
रेमन श्रीहरिव्यास पद, होय तबै पहिचान॥२५॥
रेमन दृढ करि उर धरो, यहै बात सिद्धान्त।
युगल मिलावन और नहि, श्रीहरिव्यास उपरान्त॥२६॥
रेमन श्रीहरिव्यास के, दासनको करि संग।
तब तेरे दृढ लागिहै, गौर सावरो रंग॥२७॥
श्रीवृन्दावन माधुरी, अद्भुत नित्य विहार।
रेमन श्रीहरिव्यास बिन, पावै नाहि लगार॥२८॥
रेमन श्रीहरिव्यास पद, धर्यो न तौलौ शीश।
जौलौं हिय कहौ क्यों बसै, वृन्दावन बन ईश॥२९॥
जकलग श्रीहरिव्यासकी, शरण भयो मन नाँहि।
वृन्दा विपिन विहार छवि, क्यों आवै चित माँहि॥३०॥
सब बातन की बात यह, रेमन भजि हरिव्यास।
ताबिन तेरी सकल विधि, मिटै नहीं भव फास॥३१॥
रेमन करि एकादशी, जन्म कर्म चितलाय।
सदा चार करि प्रीतिसों, रसना दम्पति गाय॥३२॥
रेमन भटक्यो बहुत तू, अब कछु समझि सयान।
अमृत श्रीहरिव्यास भजि, छाडि विषय रसपान॥३३॥
कलियुग दोष समुद्र है, तामें है गुण एह।
रेमन श्रीहरिव्यास के, करै नाम सों नेह॥३४॥
आचारज हरिव्यासजू, महा वाणी परकाश।
वेदनको, दुर्लभ महा, बरन्यो महल विलास॥३५॥
रेमन श्रीहरिव्यास के, दास चरण उरधारि।
छाडि सकलसों प्रीतितू, मैं तोहि कहौं विचारि॥३६॥

मनकी प्रीति तहाँ लगै, ताही गति को जाय।
तातेरे मन समझित्, हरिव्यासहि चितलाइ ॥३७॥
नित्य सनातन अज अमर, श्रीहरिव्यास उदार।
सुरनर मुनि जन दीन हित, प्रगटत बारम्बार ॥३८॥
सूक्ष्म मन उपदेश यह, दोहा शुभ चालीस।
रूपरसिक जो गाइ है, सो पावै बन ईश ॥३९॥
इति श्रीरूपरसिक कियो, सूक्ष्म मन उपदेश।
पूरण अघतम को यही, दूरी करण दिनेश ॥४०॥

इति श्रीसूक्ष्म मन उपदेश समाप्तम्।

अथ चौदह चौपाई लिख्यते।

॥ चौपाई ॥

बाँचे पोथी चमडा कूटै। साधु कहावै खोसैं लूटै॥
जगत छोड चाहै ब्योहारा। पढिके भजै नहीं करतारा ॥१॥
विषयी होय धरै जो ध्यान। गिरही कहैं ज्ञान विज्ञान॥
तप व्रत धारि होय जो क्रोधी। बैरागी पारा पुट शोधी ॥२॥
भक्त होय पुनि भग को सेवै। हरिजन कलपयौ दानजु लेवै॥
नरतन पाय कृष्ण नहिं जापी। इक पापी को होय मिलापी ॥३॥
विद्या वेचि उदर जो भरहीं। जो काहू की निन्दा करहीं॥
देत फिरै जो शापा शापी। पुनि कोउ आन मंत्रकौ जापी ॥४॥
मागै गाम देहुरा सेवै। आन देव की जूँठजु लेवै॥
श्राद्ध कनागत हरिजन खावै। हरि अर्पण बिन जो कछु पावै ॥५॥
वेद पुराण उलंघि जो चालै। बिना गुरु डालै गल मालै॥
साधु देखि दण्डोत न करहीं। सन्तन वचन हृदय नहि धरहीं ॥६॥
राज अन्न पावै जो कोऊ। मिथ्या बात कहै जन सोऊ॥
एकादशी दिना अँन पावै। सम्प्रदाय शरणै नहिं आवै ॥७॥
हरि भक्तनसों प्रीति न जोडे। जो कोउ नर पीपर कौ तोडै॥

सन्यासी शस्तर जो धारै। अज्ञ मनुष जीवादिक मारै ॥८॥
हरि प्रसाद को छूति लगावै। मानुष बुद्धि गुरुसी ल्यावै॥
चरण सुधा पानी करि जानैं। पाहनादि हरि अरचा मानैं ॥९॥
भक्तनकी जो जाति बखानैं। आन देव सम श्रीहरि जानैं॥
अन श्रद्धा उपदेश करै जो। पर सम्पति यश देखि जरेजो ॥१०॥
नाम महातम साँच न धरहीं। नाम भरोसे पापजु करहीं॥
नारी में मन जाका जावै। विमुख संग में जो कोउ पावै ॥११॥
विमुखनसों मित्राई जोडै। काहूकौ मन फोडै तोडै॥
जोकोउ मादिक वस्तु जो पीवै। पुनि पापी जनकौ कोई छीवै ॥१२॥
ऐसी बुद्धि चलैं नर नारी। तिनकौं ठोर न नरक मँझारी॥
सकल पुराणन माहि कहानी। इनमें एक बात नहि छानी ॥१३॥
ए उनचास बात छिट कावै। सो हरिव्यासी जन मन भावै॥
सन्त कृपाल होय ताइन पर। रूपरसिक पावै सो सुख घर ॥१४॥

॥ दोहा ॥

इति श्री चौदह चौपाई, रूपरसिक यह कीन।
सम्पूर्ण सब ग्रन्थ मथि, दीज्यौ मति त्रिगुणीन॥

इति श्री चौदह चौपाई समाप्तम्।

॥ चौपाई ॥

इति हरिव्यास यशामृत सागर। सुनहु भक्त मन करिये कागर॥
महाविचार अर्थ की गहरी। पूरण भई सप्तमी लहरी॥

इति सप्तमी लहरी ॥७॥

॥ दोहा ॥

लहरि अष्टमी अब लिखूँ, सूक्षम हित उपदेश।
मंत्र मोहनी आनि पुनि, महिमा हरि बनेश॥

अथ सूक्षम हित उपदेश लिख्यते।

॥ दोहा ॥

वन्दों श्रीहरिव्यासजू, माया मुक भगतेश।
तासु कृपा करि कहतहौं, सूक्षम हित उपदेश॥१॥
ब्याहि १ परोजन २ कारटौ ३, होम ४ कनागत ५ खाहि।
व्यातीपात६ मावस७ ग्रहण८, तुला९ दान१० मखमाहि११॥२॥
सती द्रव्य१२ सुतजनमकौ१३, नौतनवधू१४ विवाहि१५।
कंकणकौ १६ रण चढ़नकौ१७, हरिजन लेत न ताहि३॥३॥
चढ्यौ ऊतर्यो देवकौ १८, वारि फेरिदियो दान१९।
मूलशान्ति२० संक्रातिकौ२१, आन उच्छिष्ट२२ अमान२३॥४॥
कलप्यौ२४ कुंवारे हाथकौ२५, विमुख साथकौ भोज२६।
अननि होय अनुरक्तिहै, तो जाई भक्तिकौ खोज॥५॥
निद्रा२७ निन्दक२८ नीचधन२८, भड्था३० भूत३१ फरेश ३२।
पीर शीरणी खायकैं ३३, खोवैं सुकृत जुलेश॥६॥
नाविस्वासी३४ गुरुत्वमुख३५, अघी ३६ उपासी अन्य३७।
कष्टी३८ दुष्टी३९ प्रेतेकौ४०, लेत न कबहु अनन्य॥७॥
सदा प्रेत इन में रहैं, जो कोउ इनको लेत।
भ्रष्ट बुद्धि ह्वै भजन में, कबहु न आवै चेत॥८॥
सुनों विचक्षण कहे अप, लक्षण ए चालीश।
इनहि टारि पग धारिहैं, सो पावैं पदईश॥९॥
जैसें कांजी दूधमें, परै बूंदही आय।
हरिविमुखन के अन्नतें, ऐसे भक्ति विलाय॥१०॥
चातक कीसी ब्रत धरैं, करैं न अन्य अपान।
एक स्वाँति बूँदी बिना, सब जल खार समान॥११॥
रूपरसिक जो होय कोउ, सो चालौ इहि माग।
तौ श्रीहरिव्यासीन में, पावौ बडौ सुहाग॥१२॥
दोहा हित उपदेशके, द्वादश कहे बनाय।

रूपरसिक जन धारियो, श्रीहरिव्यास मनाय॥१३॥
इति श्रीसूक्षम मन उपदेश समाप्तम्।
अथ मंत्र मोहनी लिख्यते।

॥ दोहा ॥

युगल रूप हरिव्यासकी, मंत्र मोहनी नाम।
लिखौं प्रेम पर दोहनी, दैन सोंहनी श्याम॥

॥ दोहा ॥

हरिव्यासदेवायनम, या सम सुरतरु नाहि।
तामें भक्ति न मुक्ति है, परा प्रेम या माहि॥२॥
हरिव्यासदेवायनम, मंत्र जपै जन कोय।
वनचारीसों पाइये, प्यारी प्रियतम दोय॥३॥
हरिव्यासदेवायनम, मंत्र जपै निशि भोर।
महल सहलसो पाइहै, अद्भुत युगल किशोर॥४॥
हरिव्यासदेवायनम, नव अक्षर निज जान।
या बिन राधालालसों, होय नही पहिचान॥५॥
हरिव्यासदेवायनम, ए नव अक्षर नेह।
बिना नेह नहि पाइए, प्यारी प्रियतम गेह॥६॥
हरिव्यासदेवायनम, पुनि श्री आदि बखानि।
नव अक्षर नवधा समझि, दशधा प्रेम सुजानि॥७॥
हरिव्यासदेवायनम, मंत्र यहै आराधि।
गुरु मनु बिन हरिनामिलै, कहौ सकल श्रुतिसाधि॥८॥
हरिव्यासदेवायनम, मंत्र यहै अति तेज।
याके जपही मात्रतें, द्रवै युगल करिहेज॥९॥
हरिव्यासदेवायनम, सर्व मंत्रको मंत्र।
जपै तास आधीन है, अतिही युगल स्वतन्त्र॥१०॥
हरिव्यासदेवायनम, नव अक्षर नव प्रेम।

नेमधारि जप करतनर, तासु मिलै धर धाम ॥११॥
हरिव्यासदेवायनम, मंत्र यहै श्रुतिसार।
बिन गुरु मंत्र न हरि मिलै, कहै सन्त निरधार ॥१२॥
हरिव्यासदेवायनम, मंत्र युगल यह जानि।
बिन अधिकारी कहौ मति, अति कहा कहौं बखानि ॥१३॥
हरिव्यासदेवायनम, मंत्र महा अमृतसार।
ताकौ आस्वादन कियें, लगै मुक्ति सुख खार ॥१४॥
हरिव्यासदेवायनम, मंत्र महाबलवन्त।
दोष बरण ताके जपत, यमरानौ डरपन्त ॥१५॥
हरिव्यासदेवायनम, पाप कालकी आगि।
अनत जन्म के त्रिविधअघ, सकल जरावै लागि ॥१६॥
हरिव्यासदेवायनम, मंत्र जानि पछिराय।
सर्वजन्मके त्रिविधअघ, अहिसम सब चुनिखाय ॥१७॥
हरिव्यासदेवायनम, मंत्रसु अद्भुत चन्द्र।
भक्त चकोरनकौं स्रवै, सदा प्रेम सुखकन्द ॥१८॥
हरिव्यासदेवायनम, जो उचरै बडभाग।
महल महलकौं पाइसौं, अविचल युगल सुहाग ॥१९॥
हरिव्यासदेवायनम, मंत्र महोदधिराज।
ताभीतर दोउ लालहैं, सकल रत्न सिरताज ॥२०॥
हरिव्यासदेवायनम, काम धेनुकौ काम।
तीन पदारथ तासुमें, यामैं श्यामाश्याम ॥२१॥
हरिव्यासदेवायनम, सब मंत्रनकौ राव।
ताबिन मंत्रन सिद्ध है, कियें जुकोटि उपाय ॥२२॥
हरिव्यासदेवायनम, भास्यौ मन्त्र अनन्त।
ताके उचरत सकल अघ, दवि मरिजात तुरन्त ॥२३॥
हरिव्यास देवायनम, दायक युगल तुरन्त।

ताबिन तीनौ कालमें युगल नहियें फुरन्त ॥२४॥
हरिव्यासदेवायनम, सब मंत्रनकी कौल।
याबिन सकलन सिद्धहै, कीलजुलगी अडौल ॥२५॥
हरिव्यासदेवायनम, को कहिसकै बखान।
जाके जपतें तुरतही, बश राधा भगवान ॥२६॥
युगल रूप हरिव्यासकी, मंत्र मोहनी नाम।
रूप रसिक गावै सुनें, सोपावै रँगधाम ॥२७॥
रसिक होय हरिव्यास, पदतिनसौं यहै प्रकाश।
जिनके हिय में जगमगै, श्री हरि प्रिया उपास ॥२८॥
तेईजानौं आपनौ और आनि सबजान।
तिनसौं भूलिन कीजिये, गुरुमत की पहिचान ॥२९॥
रूपरसिक बिनती करै, बार बार करजोर।
हरिव्यासिनके वृन्दसौं, बहुत निहोरि निहोर ॥३०॥
मंत्र मोहनी आनसों, कहौ जुमति सबसाध।
धीठ्यो करि तुमसों, कहौ क्षमो मोर अपराध ॥३१॥
मंत्र मोहनी के कहे, दुहा चौशदस और।
रूपरसिक ताके गुणें, मिलै जुश्यामल गौर ॥३२॥
इति श्रीरूपरसिक कृत, मंत्र मोहनी नाम।
तीन तीस दोहासही पूरणता सुखधाम ॥३३॥

इति श्रीमंत्र मोहनी सम्पूर्णम् ।२

अथ श्रीवृन्दावन धाम महिमा मंजरी लिख्यते।

॥ दोहा ॥

प्रथम वन्दि हरिव्यासपद, श्रीवृन्दावनधाम।
महिमा मंजरी लिखतहौं, पुनिभजि श्यामाश्याम ॥१॥
श्यामाश्याम बिहार निज, वृन्दाविपिन उदार।
अर्वखर्व वैकुण्ठकौ, गर्व मिटावन हार ॥२॥

जय वृन्दावनधाम, निज सकल लोक सिरताज।
सर्वेश्वर सर्वेश्वरी, तहाँ करत युवराज॥३॥
अवधादिक हरिधामकौ, फलवैकुण्ठ कहन्त।
वनराजकपर वारियेसो, वैकुण्ठ अनन्त॥४॥
जय जय जय वृन्दाविपिन, युगल केलि आगार।
ताकी महिमा कहनकौ, हारे वेदहजार॥५॥
श्रीहरिव्यास कृपा बिना, लहै नहीं सो धाम।
अति दुर्लभवृन्दा विपिन, निज घर श्यामा श्याम॥६॥
जय जय जय वृन्दा विपिन, कालीन्दी तटरम्य।
हितू दासिकी कृपा विन, सबको महा अगम्य॥७॥
परम सच्चिदानन्दघन, श्रीवृन्दावन धाम।
श्रीहरि प्रिया शरण बिना, को पावै वह ठाम॥८॥
सबते पर गोलोक है, ताते पर वन राज।
दम्पति सुख सम्पति जहाँ, श्रीहरिप्रिया समाज॥९॥
अज अव्यय अविनाशि पद, हद बेहदते दूरि।
श्रीवृन्दावन धाम है, रसिकन जीवनि मूरि॥१०॥
जयति जयति नम जयति नम, श्रीवृन्दावन बाग।
जामें प्यारी पीयकौ, अविचल सदा सुहाग॥११॥
श्रीवृन्दावन धामकी, महिमा मंजरि नाम।
रूपरसिक गावै सुनै, सो पावै रँग धाम॥१२॥
इति श्रीरूपरसिक करी, रवि संख्या दोहान।
वनपति महिमा मंजरी, पूरणता रसखान॥१३॥

इति श्रीवृन्दावनधाम महिमा मंजरी सम्पूर्ण।

॥ चौपाई ॥

इति हरिव्यास यशामृत सागर। श्रीगुरु सुयश रत्नकौ आगर॥
लहरि अष्टमी तीन प्रकारा। पूरण भई सकल अधिकारा॥१॥

इति श्री अष्टमी लहरी।

॥ चौपाई ॥

लिखौं अबजु गुरु भजन छतीसी। नमो जयति पुनि मंत्र पतीसी॥
तीजी महिमा मंत्र सुमानौ। या विधि लहरी नवमी जानौ॥

॥ दोहा ॥

अथ श्री मंत्र पतीसी यह, भजन छतीसी नाम।
सर्व गुरु हरिव्यासकी, लिखौं सुमिरि श्रीनाम॥१॥

राग भूपाली आभास दोहा

सुखकारी हरिव्यासजय जय जय सतगुरु रूप।
त्रिगुणा महतारी करी शिष्य बहुत सुरभूप॥

१ पद गुरु भजन छतीसी।

जयजय श्रीहरिव्यास महा सुखकारी।
सतगुरु तीन लोक हरि भक्ति प्रचारी॥१॥
जयजय श्रीहरिव्यास महा दुख जारी।
सतगुरु शिष्य कीनी त्रिगुणा महतारी॥२॥
जय जय श्रीहरिव्यास महा सुखकारी।
सतगुरु बसि कीनें दोउ प्रियतम प्यारी॥३॥
जय जय श्रीहरिव्यास अभय पद दानी।
सतगुरु रंगधाम सब दिन अगवानी॥४॥
जय जय श्रीहरिव्यास हरण दुख रासी।
सतगुरु श्री भट चरण लीन निज दासी॥५॥
जय जय श्रीहरिव्यास अखण्ड प्रभाऊ।
सतगुरु रसिक नृपति चूडामणि राऊ॥६॥
जय जय श्रीहरिव्यास अत्यन्त कृपाला।
सतगुरु रसिक भक्त जीवनि उरमाला॥७॥
जय जय श्रीहरिव्यास युगल अवतारा।

सतगुरु भक्त राज हरिप्रिया उदारा ।।८।।
जय जय श्रीहरिव्यास हितू हित जानी।
सतगुरु श्रीहरि प्रिया युगल मन मानी ।।९।।
जय जय श्रीहरिव्यास परारस रासी।
सतगुरु महावाणी श्रीमुख परकाशी ।।१०।।
जय जय श्रीहरिव्यास महा सुखदाई।
सतगुरु युगल मिलावत विना उपाई ।।११।।
जय जय श्रीहरिव्यास महा सुखकारी।
सतगुरु अर्द्ध नाम अघ बोध विदारी ।।१२।।
जय जय श्रीहरिव्यास महा गुरुभारी।
सतगुरु अनन्त भक्त कीनें संसारी ।।१३।।
जय जय श्रीहरिव्यास युगल नित जापी।
सतगुरु अनन्त पतित तारे महा सापी ।।१४।।
जय जय श्रीहरिव्यास महा सुखकारी।
सतगुरु परशुराम हिय धाम विहारी ।।१५।।
जय जय श्रीहरिव्यास महा सुखकारी।
सतगुरु नाम जपत लाभै मुकतिजु खारी ।।१६।।
जय जय श्रीहरिव्यास महा आचारी।
सतगुरु अनाचार जर सकल उखारी ।।१७।।
जय जय श्रीहरिव्यास महा सुखकारी।
सतगुरु शरण विना ;यम करत खुवारी ।।१८।।
जय जय श्रीहरिव्यास चक्र कर धारी।
सतगुरु सकल अमंगल दल खल दारी ।।१९।।
जय जय श्रीहरिव्यास सकल विधि पूरे।
सतगुरु मत अविरोध माझ अति सूरे ।।२०।।
जय जय श्रीहरिव्यास सुदर्शन धारी।

सतगुरु निम्बादित्य सुयश विस्तारी ।।२१।।
जय जय श्रीहरिव्यास महा बलधारी।
सतगुरु मत विरोधकी करत खवारी ।।२२।।
जय जय श्रीहरिव्यास दिशौ दिश जीती।
सतगुरु प्रगट करी भजन रस रीती ।।२३।।
जय जय श्रीहरिव्यास रसिक जन भर्ता।
सतगुरु अनन्त साधु कर्सा अघ हर्ता ।।२४।।
जय जय श्रीहरिव्यास महा सुखकारी।
सतगुरु शरण कही भागौत मँझारी ।।२५।।
जय जय श्रीहरिव्यास जगत उजियारे।
सतगुरु सकल रसिक गण लोचन तारे ।।२६।।
जय जय श्रीहरिव्यास महा सुखदाई।
सतगुरु रसिक नृपति राजेश्वरराई ।।२७।।
जय जय श्रीहरिव्यास महा आचारज।
सतगुरु अनन्त भक्तके कारज सारज ।।२८।।
जय जय श्रीहरिव्याससु परम उदारा।
सतगुरु रसिकनको रस वर्षन हारा ।।२९।।
जय जय श्रीहरिव्यास आप सनकादिक।
सतगुरु गुणातीत सब जगकीआदिक ।।३०।।
जय जय श्रीहरिव्यास आप मुनि नारद।
सतगुरु सब दिन भवसागर के पारद ।।३१।।
जय जय श्रीहरिव्यास सकल गुरु रूपा।
सतगुरु परा प्रेम यज्ञके दृढरूपा ।।३२।।
जय जय श्रीहरिव्यास प्रेमके सेतू।
सतगुरु तीन लोक विद्या बलजेतू ।।३३।।
जय जय श्रीहरिव्यास कमलदल लोचन।

सतगुरु शरणागत आरत दुख मोचन ॥३४॥
जय जय श्रीहरिव्यास गौरवपु भ्राजै।
सतगुरु सच्चिदघन सब दिना विराजै ॥३५॥
जय जय श्रीहरिव्यास महा सुख कन्दा।
सतगुरु नाम लेत अति होत अनन्दा ॥३६॥
जय जय श्रीहरिव्यास हरत हिय तमभ्रम।
सतगुरु रूपरसिकके कोटि नमो नम ॥३७॥

॥ दोहा ॥

इति श्री मंत्र पतीसि यह, भजन छतीसी नाम।
पूरण श्रीहरिव्यासकी, दायक दम्पति धाम ॥१॥

इति श्री गुरु भजन छतीसी समाप्ता।

॥ दोहा ॥

नमोजयति हरिव्यासकी, अर्थलिखते चितधारि।
रूपरसिक कृतमनोहृत श्रीहरिव्यास चितारि ॥१॥
जिनिके शिष्यसमूहमें, परशुराम निजदास।
सुरनर मुनितिहुँलोकमें, गुरु नमोजयति हरिव्यास ॥२॥
जिनके नामाभासते, होत त्रिविध अघनाश।
पतित उधारनआपहरि, नमो जयति हरिव्यास ॥३॥
बाहर भीतर युगल के, अगवानी निजदास।
सोमोपर किरपा करौ, नमोजयति हरिव्यास ॥४॥
कृष्णपदारथ हरिसुनो, गुणो राधिका व्यास।
युगलरूप साक्षातप्रभु, नमोजयति हरिव्यास ॥५॥
अनगणपापी तारिया सापी अतिअघराश।
दीनबन्धु अशरण शरण, नमोजयति हरिव्यास ॥६॥
श्रीभटपट प्रगट करण, भरन रसिक रसरास।
महावानी परकाशकर, नमोजयति हरिव्यास ॥७॥

तिनकी चरणशरणबिना, मिले न युगलबिलास।
दम्पति सँग श्रीहरिप्रिया, नमोजयति हरिव्यास ॥८॥
सबविरोध मतनाशकर, मतअविरोध प्रकाश।
प्रेमरास सबक्यासहरन, नमो जयति हरिव्यास ॥९॥
अखिलभक्त पालन करण, हरण जन्मकी त्रास।
स्वास स्वास सोभजि सदा, नमोजयति हरिव्यास ॥१०॥
सदासनातन एकरस, तासजन्म नहिंनास।
महासच्चिदानन्द घन, नमो जयति हरिव्यास ॥११॥
तातिनहोइन युगलको, बन विहार महारास।
सो दम्पति इच्छासही, नमो जयति हरिव्यास ॥१२॥
दुस्तर मायायुगल बिन, को न करि सकै दास।
राधा मोहन आपजै, नमो जयति हरिव्यास ॥१३॥
अनन्त युगल प्रापतिकिया, करिकरि अपनेदास।
हंसवंश प्रगट प्रभु, नमो जयति हरिव्यास ॥१४॥
सुख सम्पति दम्पति सही, मिलै तास अनयास।
चरणशरण है उच्चरै, नमो जयति हरिव्यास ॥१५॥
नमो जयति नमजयतिनम, श्रीहरिव्यास उदार।
नमोजयति नमजयतिनम, पराप्रेम दातार ॥१६॥
नमो जयतिनम जयतिनम, नमो हरिव्यास महन्त।
नमो जयतिनम जयतिनम, दायक राधाकन्त ॥१७॥
नमो जयतिनम जयतिनम, श्रीहरिव्यास सुजान।
नमो जयतिनम जयतिनम, सकल रसिकजनप्रान ॥१८॥
नमो जयतिनम जयतिनम, हरिव्यास सुशील।
नमो जयतिनम जयतिनम, युगलदेत नहिं ढील ॥१९॥
नमो जयतिनम जयतिनम, हेहरिव्यास प्रवीन।
नमो नमो करिहैं सदा, युगलदास आधीन ॥२०॥

नमो जयतिनम जयतिनम, हे हरिव्यास पुनीत।
नमो जयतिनम जयतिनम, दायक दोऊ मीत॥२१॥
नमो जयतिनम जयतिनम, हे हरिव्यास कृपाल।
नमो जयतिनम जयतिनम, दायक राधालाल॥२२॥
नमो जयतिहरिव्यासकी, सुनें गुनें करिहेत।
रूपरसिक ताकौसही, माया पारजुदेत॥२३॥
इति श्रीरूपरसिक करी, नमो जयति हरिव्यास।
पूरणताभाई दुहा बीस चारि परकाश॥२४॥

इति श्रीनमो जयति समाप्तम् २

॥ दोहा ॥

अथ हरिव्यास कृपालकी मंत्र जुमहिमा नाम।
लिखन करौं हरिव्यास, पदसुमिरिसदा अभिराम॥१॥
हरिव्यास देवाय नम, पारक मंत्र जुएह।
मनुनायक तारक यहै, दायक युगल सनेह॥२॥
हरिव्यास देवाय नम, शरण मंत्र यह ज्ञान।
याविन राधारमणसों, होइन दृढ पहिचान॥३॥
हरिव्यास देवाय नम, सबमंत्रन कोईश।
बसिहैयाके जापते, दम्पति विशवा बीश॥४॥
हरिव्यास देवाय नम, सखी रूप दातार।
याविन मिलैं नलैल, दोऊ राधानन्द कुमार॥५॥
हरिव्यास देवाय नम, सर्व मंत्रकी खानि।
याके जपही मात्रतें, मिलै हरिप्रिया आनि॥६॥
हरिव्यास देवाय नम, सर्व निगमकी सार।
याविन तीनों लोकमें, मिलैं न युगल विहार॥७॥
हरिव्यास देवाय नम, प्रेम भक्ति दातार।
मनवचक्रम जानो सही, याविन जनम खुवार॥८॥

हरिव्यास देवाय नम, चार पदारथ देत।
पुनि दायक नायक प्रिया, चरण कमलसों हेत॥९॥
हरिव्यास देवाय नम, सुमिरत रसिक महन्त।
दोय वरणताके जपें, उधरैं पतित अनन्त॥१०॥
हरिव्यास देवाय नम, सुमिरत रसिक महन्त।
याविन पावै पारको, भवसामुद्र अनन्त॥११॥
हरिव्यास देवाय नम, जपैं त्रिगुणकी मात।
कमोग्रादिसब जपतिनित, औरनकी कहाबात॥१२॥
हरिव्यास देवाय नम, मंत्र युगल दातार।
ताको माया त्रिगुणजा, सुमिरत वारम्वार॥१३॥
हरिव्यास देवाय नम, याजु मंत्रकी बात।
मैंमतिमन्द कहाकहूं, वाणी कहत लजात॥१४॥
हरिव्यास देवाय नम, मंत्र मंत्र तंत्रेश।
याकी महिमा कहनको, हारे शेष गणेश॥१५॥
हरिव्यास देवाय नम, मंत्र यंत्र तंत्रेश।
उबरतही अज्ञानता, दूरीकरण दिनेश॥१६॥
हरिव्यास देवाय नम, हंसमंत्र यह जानि।
सनकादिक नारदबहुरि, निम्बभानु मनुमानि॥१७॥
हरिव्यास देवाय नम, वेदागमको सार।
याके अर्थविचार बिन, मानुष जन्म खवार॥१८॥
हरिव्यास देवाय नम, मंत्र जपै बड भाग।
अनायास पावैजुसो, दम्पति पद अनुराग॥१९॥
हरिव्यास देवाय नम, मंत्रजपै चितलाय।
ताकी महिमा भागकी, कोबरणें कविराय॥२०॥
हरिव्यास देवाय नम, मंत्र सम्पदामूल।
ताकेजपही मात्रते, होय युगल अनुकूल॥२१॥

श्रीहरिव्यास देवाय नम, मंत्रजु महिमा एह।
सुनें गुनें गावैजुसो पावै युगल सनेह॥२२॥
इति श्रीरूप रसिककरी, मंत्रजुमहिमानाम।
तीन बीस दोहाभरी, पूरणता रसधाम॥२३॥

इति श्रीमंत्र महिमा

॥ चौपाई ॥

इति हरिव्यास यशामृत सार। युगल रत्नदायक बडनागर॥
पूरणता पाईजु रँगीली। इति श्रीनवमीलहरी सम्पूर्ण॥

दशमी लहरी।

॥ चौपाई ॥

दशमी लहरी लिखौं बनाई। तामें भैरव राग सुहाई॥
बहुरि देव गन्धारजु यामें। पद आभास बन्ध है जामें॥१॥

राग भैरव आभास दोहा।

जय जय श्रीहरिव्यासजू देवादिक गुरु देव।
सुर नर शरण जे आवही ते भवलै पाँवहि भेव॥१॥

॥ पद ॥

जयजय हरिव्यासदेव देव्यादिक करत सेव
जानतजे भेव चरण शरण रागें।
सकल सुख निधान जान अमल कमल प्रवल
भान नेंक धरत ज्ञान उर अज्ञान तिमिर भागें॥
नित्य रहसि रस विलास लहत न
विन कृपा तास परमपद निवास आश तौ व क्यों पागें।
आनि बन्यो सहज संग भैरौ तजि भजि
अभंग चेरो है रहत कंग तेरौ कहा लागै॥१॥
भ्रमत भ्रमत जन्म कोटि तनक आय अटक्यो
चोट ताहू में करत खोट परत छिमुह आगें।

ऐसो अवसरहि पाय जाय गहहु वेगि पाँय
जो हैं प्रभु जान राय देह निज भागें॥२॥
सर्व सृष्टि गुरु सरूप सदानन्द चिदा अनूप
भक्त भूप रूप नित्य बन्ध नेह त्यागें।
तत्रत ताहि मूढ रह्यो रूढ पद आरूढ होय
तत्त्व महा गूढ कूढ काहि न शठ खागें॥३॥
दिये पंच सँस्कार तौहु न समझो गँवार
कहा सार छारहैं धिकारतौ अभागें॥
रूप रसिक जन कहाय उपजत नहि लाज
हाव निरखि मित चित्त चाय मति मिलाय गाग॥४॥

॥ दोहा ॥

प्रातकाल उठि गाइये, श्रीहरिव्यास उदार।
अहल महलकी जौ चहै, टहल सहल सुख सार॥१॥

॥ पद ॥

श्रीहरिव्यास प्रात उठि गावौ,
भव निधि तरण हरण दुख हिय के सब सुख करण चरण चितलावो।
यह तन दुर्लभ पाय भजन विन अकजन जाय सोई सजलावो।
चिन्तित फलद दया निधि नागर अगद उजागर पद शिर नावो॥१॥
सकल शुभद हर्षद विशद कौ भजि भजि असद अलाप नसावो।
परम छबीलौ छत्रिकी झिलि मिलि विमल उर माँहि बसावो॥२॥
जग सम्पति सब शकति परा कृति ताकी अति विपति वहावो।
मृदु मूरति सों करि मन तूरति प्रेम पुलक उमगावो।।३॥
युगल महलकी टहल अहलकी चहल पहलकी सहिलहिपावो।
सखी रूप परिकर अनूप में रूपरसिक मिलि रसिक कहावो॥४॥

आभास दोहा।

महायोध अविरोध मत कुमतादिकत महन्त।

सुर नरादि रक्षक नमो श्रीहरिव्यास महन्त ॥१॥

॥ पद ॥

नमो नमो हरिव्यास महन्त।
महायोध अविरोध सुमतिमें कुमति विरोधादिकत महन्त॥
मानुष देव अदेव उबारे तारे विषधर नाग अनन्त।
भक्त भरण दुख हरण करण सुख अशरण शरण आप भगवन्त॥१॥
महावाणी रसदानी वरणी अघ हरणी सब श्रुतिको तन्त।
निशि दिन महल टहल में बीतत परा प्रेम रसमें मे मन्त॥२॥
दश दिशि कीर्ति भक्ति विस्तारी भक्त भूप किये महा असन्त।
जिनकी महिमा कौन कहै भिन तिनकी चरण धूरि अघहन्त॥३॥
श्रीरंग देवी आदि सहेली हित् सखी पुनि राधा कन्त।
वस कीनेहरि प्रिया रूपह्वै दम्पतिसुख सम्पति निरखन्त॥४॥
परम धाम चिदघन वृन्दावन षटऋतु जुत जहा सदा बसन्त।
जाराजधानी की अगवानी पाई जिन श्रीपद परसन्त॥५॥
त्रिगुण प्रसूता माया हरिकी सो शिषकीनी महादुरन्त।
चरण शरण जिनकी जेआये जिन पाये सोउलैल तुरन्त॥६॥
अखिल भुवनके रसिक जननकौ आधारजहै रस वर्षन्त।
तीन कालमें सदा चिरंजी तिनकी आदि मध्यनहि अन्त॥७॥
जेबडभागी भये जगतमें तेतुब आधो नाम जपन्त।
अनन्त निवाजें पापी सापी महासुरापी भववूडन्त॥८॥
पुनितिनकेना मारधमहिमा शेषशारदा कहिनपरन्त।
रूपरसिक चारोंयुग माहीं जिन की सुरनरकोनकरन्त॥९॥३

आभास ॥ दोहा ॥

जाके अर्द्धहिनामकी, महिमाश्रीशुकदेव।
बरणी सो हरिव्यासजू भजहु अहो मन एव॥१॥

॥ पद ॥

श्रीहरिव्यास भजो मन भाई।
जिनके अर्द्ध नाम की महिमा शुक मुनि विष्णु रात प्रतिगाई॥
सत्य युग ध्यान यज्ञ त्रेता में द्वापर पूजा विधि समुझाई।
कलियुग में केवल हरि व्यासहि अर्द्ध नाम जगतरन उपाई॥१॥
और युगन में गुप्त जुराख्यौ। नाम महामुनि मुनि जन गाई॥
कलियुग जीवजानि मँद भागी नाम प्रगट हरि दियो बताई॥२॥
मातापिता द्विज गोहन्ता और त्रिविध अघ गण समुदाई।
जानि अजानि नाम हरि उचरे ताके ए सब पाप विलाई॥३॥
कमो ग्रादि सब देव मुनीश्वर अर्द्ध नाम की आश कराई।
ताते हरि बोलो सब साधो सह जे आवा गमन मिटाई॥४॥
चलत फिरत सोवत पुनि जागत पावो अर्द्ध नाम मिठाई।
भजि भजि हरि नाम मधुर अति तजि तजि प्राणसकल कटुकाई।
जो हरिव्यास नाम लें पूरो॥ ताकी को कहि सके बढाई।
रूपरसिक हरिव्यास नाम पर कोटिक बार वारनें जाई॥५॥

॥ आभास दोहा ॥

कहिये श्रीहरिव्यास है, दृढ करि बारम्बार।
मन क्रमबच निशदिन सदा यह, पनसार न सार॥१॥

॥ पद ॥

श्रीहरिव्यास कहिए मन बचक्रम यही नेम निसिदिन मन गहिए।
राधा हरि आप रूप भक्त भूप रूपा॥
प्रगट भये तारन जगत आई अज अनूपा।
हरिव्यास पापनाश अर्द्ध नाम जानो॥
पूरो नाम लेत ताको को करे को बखानो॥२॥

चरण शरण तिन की विन मिलें युगल नाहीं।
रूप रसिक श्री करि कहैं भागौतादिभाँहीं ॥३॥

॥ आभास दोहा ॥

मंगल आरति कीजिये, भोरहि श्रीहरिव्यास।
नवधादिक परमाथी, दायक युगल विलास ॥१॥

॥ पद ॥

आरतीमंगल आरती श्रीहरिव्यास की।
कीजें भोरहि श्रीभटदास की ॥
नवधा दीप प्रेम कर बाती। घृत पुनि ज्योतिसु साधु सजाती ॥१॥
हृदय थाल धरि आरति कीजै। जीवन जन्म सुफल करि लीजै ॥२॥
श्रीहरिप्रिया चरण चितदीजें दम्पति सुख सम्पति रस पीजे ॥३॥
परम सहेली संग विराजें। युगल साथ परि कर बुत भ्राजें ॥४॥
रंग धाम बासी सुखरासी महाबाणी श्रीमुखपरकासी ॥५॥
दश दिश जीत भक्ति बिस्तारी। शिषकीनी त्रिगुण महतारी ॥६॥
रसिकनकौ रस सबदिनबरषैं। जिनकौ अर्द्धनाम मनकरषैं ॥७॥
युगल रूपचिद्धन सुखसागर। रूपरसिक हरिव्यास उजागर ॥८॥

इति राग भैरव।

अथ राग देवगन्धार

॥ आभास दोहा ॥

भजि हरिव्यास उदारकौ रेमन बारम्बार।
जाविन तेरो कोउ नहीं मेरो वचनविचार ॥

॥ पद ॥

रेमन भजि हरिव्यास उदार।
विन हरिव्यास न जग में तेरो मेरोवचन विचार ॥
मानुष तन अति दुर्लभपायो काहे करत खवार।
बेगिसम्हारि मूढमति बौरे अब क्यों करत अवार ॥१॥

जोदायक दम्पति सुखसम्पति वृन्दा विपिन विहार।
पतित उधार हेतजगप्रगटे आप युगल अवतार ॥२॥
अशरण शरण हरण संसृति दुख निराधार आधार।
अँगवानी सोरंगधामकौ महा बाणी करतार ॥३॥
दशदिश जीति भक्ति विस्तारी तिनकी कथा अपार।
कृपासिन्धु सोदीनबंधु हेसर्गुण निर्गुण आगार ॥४॥
श्रीहरिप्रिया अनूप रूपसों मूरति रस शृंगार ।
रूपरसिक भगतेश भूपविन अनंत फजीताचार ॥५॥

॥ आभास दोहा ॥

सन्तौहम सब कर्म धर्म भर्म श्रम करिनाश।
मायागुरु हरिव्यास के भये चरणकेदास ॥

॥ पद ॥

सन्तौ हम सेवक हैं जाके।
माया गुरुहरिव्यासदेवजू चरण शरण भये ताके।
कर्म धर्म सब भर्म मिटाये महल टहल रस छाके ॥
निर्भय रहे लोक त्रय माहीं जन्म मरण भय हाके ॥१॥
त्रिगुण किये साके अति वाके ह्वै हरिव्यासी पाके।
रूपरसिक हरिप्रिया उपासी चौरासीते थाके ॥२॥

॥ आभास दोहा ॥

हमतो श्रीहरिव्यास के चरण उपासी दास।
सदाउदासी त्रिगुणसों निर्गुण पदमें बास ॥

॥ पद ॥

हमतो श्रीहरिव्यास उपासी,
सदा उदासी त्रिगुण गवन सो कुंज भवन के वासी।
गावें परा प्रेम रस रासी। महावाणी अविनाशी।
चाहत नहीं मुक्ति आदिक सुख गंगारेवा काशी ॥१॥

अगिवानी दम्पति के सब दिन सम्पति कोटिक मासी।
जिनकी शरण भागवत माही श्रीमुख हरिव्यास प्रकासी॥
अर्द्धनाम हरिव्यास उचारत होइ नाश अघराशी।
रूपरसिक भक्तेश भूप विजि विचरक सदा खुलासी॥३॥

॥ चौपाई ॥

इति हरिव्यास यशामृत सागर। दश लहरी दोइ राग उजागर॥
श्रीगुरु चरण महा रति दाई। पूरणता पाई जिय भाई॥१॥

इति दशमी लहरी सम्पूर्ण।

॥ चौपाई ॥

एकादशी लहरि अब लिखिये। तामधि राग विभासजु दिखिए॥
बहुरि विलावल रागजु तामें। महा मनोहर पद है जामें॥

॥ विभास दोहा ॥

जिनके नामाभासके पढतहि पाप विलात।
ऐसो शुभ दायक सदा सुमिरिलेहु उठि प्रात॥

॥ पद ॥

प्रात समय हरिव्यास नाम शुभ लीजै सकल अमंगल हारी।
जिनको नाम भास पढतेही पाप अनन्त जात्र जरि भारी॥१॥
सम्पूर्ण हरिव्यास नामको महिमा अमित कही नहि पारी।
श्रीहरिव्यास अद्भुत पर रूपरसिक मन क्रम बचवारी॥२॥

॥ आभास दोहा ॥

जो चाहत हो सुख सदन, श्री वृन्दावन वास।
तौ तू श्रीहरिव्यास भजि, तजि सब जगकी आस॥

॥ पद ॥

सकल आस तजि भजि हरिव्यास मन जो चाहो वृन्दावन सुख घर।
अनायास हिय वास करावत बर वट राधा श्यामसुंदर वर॥
भक्तराज महाराज दयानिधि ऋषि सिधि दायक प्रभु सकलेश्वर।

युगल रूप सब दिन विराजत आचारज हरि प्रिया मनोहर॥१॥
जिन कृत महावाणी मुख उचरत भये पतित बहु रसिक पुरन्दर।
षट पट भूषण त्रय अघ हर्ण तीन ताप दूषण गुनि यमडर॥२॥
जगत उद्धार हेत जग प्रगटे युग युग में सब दिन करुणाकर।
रूप रसिक रसिकेश्वर पति भजि भये अनंत पतित पावन तर॥३॥

॥ इति राग विलावल ॥

॥ आभास दोहा ॥

यह मागों हरिव्यास जू, तुमपै इक बाता।
रहौं अनन्यनि में सदा, तव गुण गणराता॥

॥ पद ॥

यह मागौं हरिव्यास जू तुमपै एक जुबाता।
रहौं अनन्यनि में युगल पद सुमिरौं जलजाता॥
सुख सम्पति दम्पति चरण सुमिरौं जलजाता।
रूप रसिक तिहु लोकके तुमहीं पितु माता॥१॥

॥ आभास दोहा ॥

यह मांगत श्रीहरि प्रिये, रहौं अनन्यनि मांहि।
तव पद रति तव गान गुण, अचल बुद्धि ठहराहि॥१॥

॥ पद ॥

यह मांगत श्रीहरि प्रिये दीजै मोहि सोई
रहु अनन्यनि में सदा तव पदरति होई।
अचल बुद्धि अनुरागसों निशिदिन गुण गाऊ॥
श्यामा श्याम सरूपको हिय मांहि बसाऊँ॥१॥
भजन करत विचि आनिबु दोऊ अन्तर लावें।
तिनको दरश दया निधे जिन मोंहि दिखावें।
निजदासीजूकी कृपा मोपै नित राजो।
रूपरसिक विनती करै जनजानि निवाजो॥३॥२॥

॥ आभास दोहा ॥

गुण गर्वीली गौर अंग लाडगहेलि सहेलि।
जयजय जय श्रीहरिप्रिया अमितरूप अलबेलि॥१॥

॥ पद ॥

जयजय श्रीहरिप्रिया सहेली। अलक लडीली लाडगहेली।
गुण गर्वीली गौरसु अंगी। रसिक रसीलीनवरंग रंगी॥
नवलबाला। विश्व आभा उत्तमानिज बिलासा।
सरसरूपा मधुरा भद्रा उत्तमा।
पद्माश्यामा शारदा कल कृपाला देवि देविका।
सुन्दरी सखी पद्म आस्था इन्दिरा सुखसेविका॥२॥
जयजय श्रीहरि प्रिया प्रवीणा।
अन्त रँगीली अन्तरहीना सहज सकल सुखदायक श्यामा।
अग्रवर्तिनी वामारमा। श्यामा वामा कृष्णा कामिनी अनुपमा।
श्रुतिरूपका भानवति का माधवी असिता गुणा कार भूपिका।
वल्लभा गौरांगीकेशी पुनि पवित्रा कुंकमा।
हितू श्रीहरि प्रिया जयजय नित्यनव तन मनुरमा॥४॥
जय जय हरि प्रिया किशोरी। चक्र चारु चूडामणि गोरी।
अद्भुतनाभ रूप गुण रसदा। अष्टअष्ट द्वैविशदावशदा॥५॥
विशदा यशदा जगमगात जग चन्द्र कोटिन भानुका।
नैन अंजन बिना रंजन गंज खंजन मृगरूखा।
सुभ्र सलिता ललित उरपर मुक्त हारा वलिरली।
अलक अवली रवि ललीसों मिलि चली छवि अतिभली॥६॥
जयजय श्रीहरि प्रिया सलोनी सब अँग सोहै सुभग सुठोनी।
उपमा जेतिक जगमें जोहै। नवतन आभा आगेकोहै॥७॥
कोहै कोक कपोत केकाकि कीर कोकिल केहरी।
कला निधि कुरु बिन्द कंचन कल कमल कदली करी।

सौन्दर्य्यता माधुर्य्यता सुकुमारता मनहारिणी।
बलि रूप रसिकन के बसी हियव्यथा विरह विदारणी॥८॥३॥

॥ आभास दोहा ॥

दैवीजीव उधार हित परमेश्वर अवतार।
रसिक नृपति चूडामणि श्रीहरिव्यास उदार॥१॥

॥ पद ॥

जिनपर कृपा कृपानिधिकीनी तिनके भये विध्वंस विकार।
दैवीजीव उधारण कारण प्रगटे परमेश्वर अवतार॥
रसिक नृपति चूडामणि वृन्दारण्य पुरन्दरको जिनिवर्ण्यो सुन्दर।
नित्य विहार लीला शक्ति अनन्त रूप गुण रूप रसिक को पावै पार॥३॥

॥ आभास दोहा ॥

चरण कमल हरिव्यास के, गाये नहिं चितलाय।
दुर्लभ नर तन पायके, कहा कियो जग आय॥१॥

॥ पद ॥

श्री हरिव्यास चरण नहिं गाये। ते नर या जगमें क्यों आये॥
विषय वासना कर्म कमाये। वृथा वैसके द्योस गमाये॥१॥
हरि हरि जन सो विमुख रहाये। ते तिनके तुरतहि फलपाये॥२॥
युगल चन्द सों चित्त न लाये। अब कहा सोचत यमके खाये॥३॥
श्री भागीत उपाय बताये। रूप रसिक तें चित्त न चाये॥४॥

॥ आभास दोहा ॥

कृपासिन्धु प्रभु कृपा करेंगे दीन जानिके दुःख हरेंगे॥
औढर ढरन सुढार ढरेंगे तब तेरे सन्ताप टरेंगे॥
अभय हाथ जब माँथ धरेंगे जन मनके जंजार जरेंगे॥
निफल तरू ते सुफल फरेंगे मनवांछित सब काज सरेंगे॥
वृन्दाबन वन विचरेंगे रूपरसिक है रंग रँगेगे॥

॥ आभास दोहा ॥

तिनही को अब जानियो, या कलि में वडभाग॥
जिनको श्रीहरिव्यास के, चरण कमल अनुराग॥१॥

॥ पद ॥

श्रीहरिव्यास पदाम्बुज रागे। ते अलि या कलि में वड भागे।
उन्मत रहत सदा संग लागे। परम प्रेम पीयूषहि पागे॥१॥
विचरत विषय वासना त्यागे। अवलोकतहिअमंगल भागे॥२॥
शुद्ध रूपके दायक सागे। नित्य नेह के पहिरे बागे॥३॥
निरखत जिनके भाग हैं जागे। रूपरसिक रसमें अनुरागे॥४॥

॥ आभास दोहा ॥

भूल्यौ कहा भ्रम देहु तजि, ले हँसि तिलक लिलार।
आनि बन्यो है अति भल्यौ, इहि अवसर इहिं वार॥

॥ पद ॥

आनि बन्यो अवसर यह नीको। भूल्यौ कहा भ्रम देत जिही को॥
लेहु ललाट सुयश को टीका। ध्यान धरो उर प्यारी पियको॥१॥
बुरो मानि है मेरी कही को। तूतो सज्जन कैसी सही को॥२॥
होईहौ क्रीडा मृग प्रवतीको। धृग जीवन है तेरे जियको॥३॥
राचि रह्यो जो है रँग फीको। रूपरसिक तू असल वसीको॥४॥

॥ आभास दोहा ॥

रंग रँगीली हितू हरि, प्रिया अली अलवेलि।
रंग महल में रची मिलि,, रंग रँगीली केलि॥

॥ पद ॥

रंग महल में मंगल माई। रंग रँगीली रहसि मचाई॥
रंग रँगीली हित सहेली। श्री हरि प्रिया अली अलवेली॥
अली अलबेली हितू श्री हरि प्रिया हिय हेतसों।
नित्य सुख से वे सदा अनुराग जु चित चेतसों॥

धन्य धनि हे भाग जिनको जे रँगी या रंग सों।
अनुदिनापीप्यारी जैसे न्यारी होत न संग सों॥२॥
सुख आसन दम्पति बैठावे। भांति भांति के लाड लडाये॥
वर उरसों उरजन अरबाये। निपट निषेक अंक भर धाये॥
अंक भरवाये निशंके निपट नवल नेहसों।
उमग अति अनुराग उमहति चहति एकत देहसों॥
कहत न॥हिन वने मोपे इनिके सहज स्वभाव ये।
एकही द्वै दोय एकहि वेष वरण वना इये॥४॥
बहु लाखन अभिलाष पुराये। भये भाव तिनू मनके भाये॥
नवल कमल दल सेज बिछाई। विहरत जहां रही छवि छाई॥६॥
रही छवि जहां छाय छवि सों वर विहारनिविल सही।
प्रथम संग अनंग उन्मत पिलिहि खिलि हिल मिल सही॥
भृकुटि भंग तरंग तमकनि रमकि झमकनि मनहरे।
लचनि लंक विरंच निरति रण सचनि शशि हरणन करै॥६॥
गर्व रोष हुंकारहि हौलैं। विचिविच मधुर मधुर मुख बोलैं॥
मधुर मधुरकल किंकिणि बाजें। चरणा भरण करण सुखसाजें॥७॥
करण सुख साजें चरण अभरण अनुपम सुरण के।
धुनि सुहावन श्रवण सुनि तन मन न होत विछुरनि के॥
मिलि रहे मिलि रहेंगे मिलि रहे है दिन दिन दोऊ।
निज सुखी की कृपा विन कैसे कहां समुझे कोऊ॥८॥
अलक छुटी उरपर अरवर रही मुक्ता लर तूटी लखरही॥
जुरे जोर पग हारिन माने। पी पी मधुर सुधा धरपानें॥९॥
सुधा पानेंही पी पी जुरे युगल विहार में।
हारि मानि नरहे कोउ रहे ढर इहि ढार में॥
मते मदनि मनोज मोजनि चौज चौगुणि चित्त में।
हठन हटतें हों न जानों कौन घटते मित्त में॥

श्रमधन कनें बदन सनबनें। लखि सन सनें रखिवे तन मनें॥
वह सुख परम सार को सार। यह सुख अति दुर्लभ संसार॥११॥
अति दुर्लभ संसार यह सुख लहै को जोई लहै।
नवल वासा सहचरी की दिन दया जिन पर रहै
रूपरसिक अनूप शोभा निरखि नैन सिराय हीं।
माया मोपर मानिहो तो या प्रसादहि पायहीं॥१२॥

॥ आभास दोहा ॥

एक भरोसे रावरे, नहि औरनिकी सोहि।
अधम उधारनि विरदकी, है आशा यह मोहि॥

॥ पद ॥

एक भरोसो रावरो नहिं और ठनि कोई।
अधम उधारन नामहै आशा मोहि सोई॥
धरिधरि जन्म अनेक मैं किये पाप अनन्त।
अबकी बेर उधारिये हे हरिव्यास महन्त॥
मनमाहीं फूल्यौ फिरै मायापदमातो।
भलो बुरो सूझ्यो नहि जैसे दृगहातो॥
मोसों तो बिगरी सबै सुधरै अब तोसों।
रूपरसिक करणी कछु बनत न अब मोसों॥

॥ आभास दोहा ॥

श्रीहरि व्यास उदार, भजिरे मन बारम्बार।
तीनलोक गुरु प्रचुर यश, अघ गण पतित उधार॥

॥ पद ॥

भजिमन श्रीहरिव्यास उदार।
तीन लोक गुरु पतित उदार निर्गुण त्रिगुण भक्तदुख हर्ता।
युग युगमें हरिभक्त विभर्ता॥
जो निज वस्तु वेद नहिं जानी सो महावाणी आप बखानी॥१॥

श्रीहरिव्यास युगल को नामों। जा बिन मिले न दंपति धामों॥
छाडि सकल मायिक जग कामों। श्रीहरिव्यास सुमिरि अभिरामों॥२॥
जा माया रजतमसत जाया उत्पति पालन कर पुनि खाया॥
जा माया के सकल उपासी। श्रीहरिव्यास चरननकी दासी॥३॥
सर्वोपरि वृन्दावन सोहै। कोटिक रमा काम न मोहै॥
ता रजधानीकी अगिवानी। जिनपाई श्रीपद उर आनी॥४॥
श्रीहरिव्यास सदा आराधो। श्रीहरिव्यास अगाधो साधो॥
श्रीहरिव्यास राधिका साधो। तिन बिन मिटै नहीं भव बाधो॥५॥
सोवत श्रीहरिव्यास चितारो। श्रीहरिव्यासहि सांझ सकारो॥
चलत फिरत बैठत यह धारो। श्रीहरिव्यास नमो करतारो॥६॥
वर्णाश्रम पुनि भेप जुधारी। बिन हरिव्यास सकलकी ख्वारी।
गुरु हरिव्यास अर्थ जब पावै। तब चौरासी को दुखजावै॥७॥
श्रीहरिव्यास युगल रस दाई। बिन हरिव्यास न युगल मिलाई।
तातें शरण गहो हरिव्यास। रूपरसिक पूरें तब आशा॥८॥११॥

॥ आभास दोहा ॥

भजिये श्रीहरिव्यासजू, श्रीमहाराज कृपाल।
दीनबन्धु भव पाशके, नाशक दीनदयाल॥

॥ पद ॥

भजिदीनबन्धु कृपाल श्रीमहाराज श्रीहरिव्यासजू।
भव पाश नाशक जगतगुरु श्रीभटप्रभूके दासजू॥
सुखधाम अतिनिष्काम श्यामाश्याम सेवततत्परम्।
सबवेद दुर्लभ करीवाणी महा रसिक मनोहरम्॥१॥
तिनकी शरणबिन लोकत्रयमें युगलचन्द मिलैं नहीं।
महादेव देवीप्रति कही सो रुद्र रहसिजुशसही॥२॥
महा पतित पावन भक्तभावन नामअर्द्ध उचारते।
अति त्रिविध पाप अगार निर्मल शुद्धह्वै अघभारते॥३॥

हरिव्यास पूरौ नामलै पुनि चरण शरण जु आवहीं।
तिनकी सुमहिमा शेषशारद कहत अन्त न पावहीं ॥४॥
हरिप्रियारूपा अनूपहै निशदिन युगल सेवाकरें।
हरिव्यास परमदया बिना तिहि धामकौउन अनुसरें ॥५॥
अवनी सकल दशदिशाजीती भक्तवत्सल जनपालजू।
बरुदेव देवी शिष्यकीने मनुष्य नाग करालजू ॥६॥
तिनके शरीर सपरसते भये परशुराम सुदेवजू।
पुनिभये जयजय अमर अगते मच्छछोना एवजू ॥७॥
सो सदा चिरजीवी युगल तन अनन्त वपुधारी प्रभू।
श्रीरूपरसिक सुजान नायक प्रेमदायक अजबिभू ॥८॥१४॥

॥ आभास दोहा ॥

सकल भक्तजन गण पिता माता श्रीहरिव्यास।
दीनबन्धु अशरण शरण करण सकल अघनाश ॥

॥ पद ॥

जय हरिव्यास दीनजन त्राता। सकल भक्तजन गणपितुमाता ॥१॥
जय श्रीहरिव्यास तिहूँ पुरचारी। शिषकीनी त्रिगुणा महतारी ॥२॥
श्रीवृन्दावन सबदिन वासी। जय हरिव्यास महासुखराशी ॥३॥
जयश्री हरिव्यास प्रेमकी राशी। महावाणी श्री मुखजु प्रकाशी ॥४॥
जय जय जय सत गुरु हरिव्यासा। आचारज श्रीभटके दासा ॥५॥
जय हरिव्यास कृपालजी। सब सन्तनके रक्षपालजी ॥६॥
श्रीहरिव्यास पद्मदल लोचन। शरणागत जनके अघमोचन ॥७॥
संगसदा अनगण साधूजन श्रीहरिव्यास प्रेम आनन्दघन ॥८॥
जय श्रीहरिव्यास रसिक राजेश्वर। परम उदार सकल सुखके घर ॥९॥
जय हरि व्यास सुजानजी। हरिभक्तनमें परमानजी ॥१०॥
जय हरि व्यास हरिप्रिया रूप। सदा दोयसम परम अनूप ॥११॥
जय हरिव्यास युगल तन सोहन। रूपरसिक रसिकन मन मोहन ॥१२॥

॥ आभास दोहा ॥

पतित उद्धारन हेतसों युगयुग होत प्रकास।
हो मनसों भजिये सदा दम्पतिदा हरिव्यास ॥

॥ पद ॥

मन हरिव्यासजू भजिलीजैहो ॥
अति दुर्लभ सुलभ दम्पति रस सम्पति तरबस पीजेहो।
पतित उद्धरा हेतजग प्रकटे अति करुणा रस भीजेहो ॥
रूपरसिक भक्तेशभूप पर तन मन धन बलि कीजैहौ ॥१४॥

॥ आभास दोहा ॥

भजन षोडशी लिख्यते रूपरसिक कृतएह।
नित्य पाठताकों किये युगल आपनो देह ॥१॥
भजिये श्री हरिव्यास कृपाल। तबै मिलैराधा गोपाल ॥१॥
भजिये श्रीहरिव्यास कृपाल, रसिक भक्ति जीवनि उरमाल ॥२॥
भजिये श्रीहरिव्यास कृपाल, करुणा सागर नैन विशाल ॥३॥
भजिये श्रीहरिव्यास कृपाल। चरण शरणकों करत निहाल ॥४॥
भजिये श्रीहरिव्यास उद्धार। प्रगटजु परमेश्वर अवतार ॥५॥
भजिये श्रीहरिव्यास उदार। सर्व भक्तजन प्राण अधार ॥६॥
भजिये श्रीहरिव्यास उदार। श्रीवृन्दावन नित्य बिहार ॥७॥
भजिये श्रीहरिव्यास उदार। अर्द्धनाम अघसिंग रे जार ॥८॥
भजिये श्रीहरिव्यास उदार। श्री मत महावानी करतार ॥९॥
भजिये श्रीहरिव्यास उदार। देवी देव अनन्त उधार ॥१०॥
भजिये श्रीहरिव्यास पुनीत। रसिकजननि गुरुप्यारे मीत ॥११॥
भजिये श्रीहरिव्यास सुजान। स्वयं प्रगट राधा भगवान ॥१२॥
भजिये सतगुरु श्रीहरिव्यास। आचारज श्री भटके दास ॥१३॥
भजिये अविनाशी हरिव्यास। युगल मिलावें बिना तलास ॥१४॥
भजिये सर्व पुण्य श्री व्यास। तीन लोक में यश जु प्रकास ॥१५॥

भजिये श्री हरिव्यासाचार्य । भूप रसिक जन कारज सार्य।।१६।।
इति श्री रूप रसिक कृत भजन षोडशी नाम।
पूरणता पाई यहै दाई श्रीरँगधाम।।१७।।

राग बिलावल ॥ चौपाई ॥

इति हरिव्यास यशामृत सागर। एकादशी लहरी प्रेमागर॥
दोइ राग में पद सुखदाई। पूरणता पाई मन भाई॥

॥ इति एकादशी लहरी ॥

॥ चौपाई ॥

लहरि द्वादशी जानहु भाई, तामे राग धनाश्री गाई।
पुनि सारंग गौरी में पद है, जयतिश्री में रागलो लहै॥

॥ राग धनाश्री दोहा ॥

रस आगार भयो सदा, श्री हरिव्यास उदार।
पतित उधार महा प्रभु, त्रिभुवन भक्ति प्रचार।।

॥ पद ॥

भजिये हरिव्यास उदार रस आगार जू।
करुणासिन्धु बन्धु रसिकन के त्रिभुवन भक्ति प्रचार जू॥
अति अनूप हरि प्रिया रूप पुनि भक्त भूप सब काल जू।
तिनकी चरण शरण विन दम्पति मिलै न राधा लाल जू।।१।।
जिनके अर्द्ध नाम से सब अघ दूर होत अन श्वास जू।
रूप रसिक हरिव्यास कहौ निति दहो आन सब आस जू।।२।।

॥ आभास दोहा ॥

जिनके आधे नाम भासते, सकल पाप ह्वै नाश।
श्री चारज हरिव्यास भजि, मरवाणी जू प्रकाश॥

॥ पद ॥

आचारज हरिव्यास जू परमेश्वर अवतार।
महावाणी प्रकाश जू देवी देव उदार।।

तिनके नामा भासते सबही पापविलाय।
सो मन क्रम बच निशि दिना श्रीहरिव्यास मनाय॥
श्रीराधावर लालको वृन्दा विपिन विहार।
तिनके चरण शरण विन पावै नाहि लगार।।
ताते भजि हरिव्यास जू सब भक्तगण भूप।
तासु कृपा तें पाइ है नित्य विहार स्वरूप।।३।।
अनन्त ग्रन्थ कर्ता विभू दश दिश जीत पुनीत।
नित प्रति बडे महन्त जन तिनके गावैं गीत।।४।।
पतित उधारन एक जग आपु बुगल हरिव्यास।
आराधौ साधौ सदा छाडि आन सब आस।।५।।
परा प्रेम दाता सही कही भागवत माहि।
विना धर्म हरिव्यास के मिले भूलि हरि नाहि।।६।।
अज अकाम अभिराम अति अति उदार सुखराशि।
रूप रसिक रसके अयति सुमिर देव हरिव्यास।।७।।

इति राग धनाश्री।

॥ अथसारंग आभास दोहा ॥

मनतू भजि हरिव्यासजू जनमन पूरण आस।
जिनके आधे नामते, मिटी विरहकी त्रास।।१।।

॥ पद ॥

मनभजतू हरिव्यासजू।
जिनको अर्द्धनाम मुख उचरत मिटी द्विरदकी त्रासजू।
श्यामा श्याम धाम वृन्दावन जो चाहै सुख रासजू ।
रूपरसिक भक्तेश भूपतिन पूरण होतन आसजू।।

॥ इति रागसारंग ॥

॥ अथ रामगौरी आभास दोहा ॥

आराधौ हरिव्यासकौ, साधौ नाम अखण्ड।

ताको आधो लेतही पाप होतसब खण्ड ॥१॥

॥ पद ॥

आवो साधौ श्री हरिव्यास कहोरे। जीवनिको फल क्यों न लहौरे॥
आधो नाम लेत गजराजा। ताके सरे सकल विधि काजा।
हरिव्यास ले पूरा नामा। ताको देत अपन पौश्यामा॥१॥
कलियुग में केवल हरिनामा। ताविन सरें न एको कामा।
श्रुतिस्मृति देखो सब कोई॥ गति हरिव्यास विना नहिं कोई॥२॥
चौरेचौरे सब जगदौरें। अन्त समयहरिव्यास निहोरें।
तातें अबहि भजो हरिव्यास। विन हरिव्यास मिटें नहि त्रास॥३॥
आनि वन्यौ यह सहज वनाव। पुनि पावें नहि ऐसो दाव।
तातें तजो सकलकी आस। भजो निरन्तर श्रीहरि व्यास॥४॥
इन्द्रजालवत जगत तमासा। यातें पूरण होइन आसा॥
जोचाहौ परमानन्द रासा। तौभजि स्वास स्वास हरि व्यासा॥५॥
हरि सब हरें पाप अपराधो। व्यास युगल सुख दैत अगाधो।
ऐसो नाम सहज हीलाधौ। हरिव्यास अराधौ साधौ॥६॥
देवी माया जगत उपावै। पालन करै सकल पुनि खावै।
जो माया हरिजू कहे मेरी। सो हरिव्यास चरणभई चेरी॥७॥
रूपरसिक जीवन धन प्रान। श्री हरिव्यास अमित भगवान।
जो चाहो हरि इहि कलिकाल। तौसुमिरो हरिव्यास कृपाल॥८॥

॥ आभास दोहा ॥

निखिल मही मण्डल, चुमणि भारतखण्ड तमनास।
करन खण्ड पाखण्ड जय नमो नमो हरिव्यास॥

॥ पद ॥

नमो नमो जय श्रीहरिव्यास।
निखिल मही मण्डल मणि घन जटित युगयुग स्वयं प्रकाश।
मार्तण्ड अज्ञान तिमिर हरणकरण खण्ड पाखण्ड विनास॥

कोक लोकके शोक विनाशन जनहिय केजहि करण विकास॥१॥
सर्वेश्वर सन्तन सुख दायक लायक अन्तह अमित उपास।
करुणा सागर सकल उजागरजगि मगि रह्यो जगत यश जास॥२॥
प्रेम कृपाल प्रणतजन पालक अम्बालक उरदेन हुलास।
कोटि पतित पावन ह्वै पल में परसत पद पंकजरजतास॥३॥
जिनकी कृपा बिना नहिं पइये श्रीमत वृन्दाविपिन विलास।
परम धर्म शिरमौर सवनिको शरण गहो जे चहो निवास॥४॥
आनिवन्यौ औसर अवनीको कहा नरतन कहायह अवकाश।
हंसवंश अवतंस प्रशंसित रूपरसि क वलि वलि निजदास॥५॥

॥ आभास दोहा ॥

दिना चारि में होयगो देखत तन धननास।
तातें मनरे भजि सुखद श्रीस्वामी हरिव्यास॥१॥

॥ पद ॥

भजि श्रीहरिव्यास देवमनरे।
वेगिसम्हारि जाइगो देख त दिना चारि में तन घनरे॥
चरण शरण तिनकी जो आवैसो पावै वृन्दावनरे।
अर्थ जानि हरिव्यास नामको राधा गौर श्याम घनरे॥१॥
या कलि में हरिव्यास नामविन झूंठेहोत सकल पनरे॥
जिनके अर्द्धनामकी महिमा हारे कहत अनन्त फनरे॥२॥
जगमें जोदुर्लभ अति कहिये सो सुलभ तोहि ताछिनरें।
तासनाम विन युगल धामको पावत नहिं पहिचानरें॥
विन हरिव्यास मिटें नहिं तेरी तीन तापदर त्रयरनरे।
त्रिगुण पाठको ठाट सकल चल दृढ हरिव्यास नृगुणभरे॥५॥
जामाया तीनों गुणजाया ताको शिष्य करबिनरे।
सब सुख सदन कदन सब दुख के रसिक राजकुल मण्डलरे॥६॥
श्रीभटदास आस जिन पूरक चूरक अघ जालनगनरे।

तिनके शिष्य लोक त्रयमें मुखि परशुराम जन पालनरे ॥७॥
रत्न अमोलक छांडि बावरे काहे बीनत अनकनरे।
श्रीहरिव्यास बिना गति नाहीं देखलेहु सब बेदनरे ॥८॥
दशदिशजीति भक्ति बिस्तारी सब क्षिति मंडल पालनरे।
महावाणी दोउलाल मिलानी जो प्रभु कीनी वर्णनरे ॥९॥
आनदास सब नाशहोत है श्री हरिव्यास अपरजनरे।
रूपरसिक तवतीन लोक में तोहि कहत सब धन धनरे ॥१०॥

॥ आभास दोहा ॥

जिनके आधे नामतें मिटें सकल भवपीर।
सो हरिव्यास सुधीर भजिरे मन मेरे वीर ॥१॥

॥ पद ॥

मन भजिरे वीर श्रीहरिव्यास हरण भवपीर।
जिनके अर्द्ध नामकी बात विष्णुरात प्रतिकहि मुनिकीर।
जामाया जायागुण तीनू सो आधीन करी जिनधीर।
भक्त भूप हरिप्रिया स्वरूप सब दिन तिनके दोई शरीर ॥१॥
श्री भटदास देव हरिव्यास तिहुं पुर गुरु पुनि युगल बुजीर॥
तिनविन तीनलोकके मांहि नाहिं जुहोई युगल सो सीर ॥२॥
हंशवंश अवतरि हरिव्यास न्यारो कियो नीरते छीर ।
अब चलि आस जानि हरिव्यास दायकदम्पति कुंजकुटीर ॥३॥
विन हरिव्यास भक्तके बन्धू कौन तरयो भव सिन्धु गँभीर॥
रूपरसिक हरिव्यास अनूप विना भजन हैगो दल गीर ॥४॥

॥ आभास दोहा ॥

भक्ति दई तिहीं परमही सुरनर कीने दास।
प्रचुरसदा यश तासको सो भजिगुरु हरिव्यास ॥

॥ पद ॥

भजिये हरिव्यास परम गुरुजी।
अज अविनाशी चिदधनराशी दम्पति सेवधुरंधरजी ॥
मूल प्रकृति चेरीजिनकी नी दीनी भक्ति तिहुँ पुरजी ॥
श्रीहरिव्यास भजन निर्गुण विन मिटें न जन्म मरण बुरजी ॥१॥
जिनतारे पापी शापीगण किन्नर नाग अनंत सुरजी ॥
तिनविन जाहिहिये नहिं उपजत प्रेम भक्तिको अंकुरजी ॥२॥
जिनके अर्द्ध नामकी महिमा सब ग्रन्थन में प्रचुरजी ॥
जोन भजैमति मन्द अभागी सो त्रिभुवन में दुर्दरजी ॥३॥
श्रीहरिव्यास कृपा दुस्तर भवसागर होय गऊखुरजी।
रूपरसिक भगतेश भूपबिन युगलवर्सेन भूलिउरजी ॥४॥

॥ आभास दोहा ॥

कर्म धर्म करजी सबै गुणगरजी संसार।
अरजी मेरी कानदे सुनि हरिव्यास उदार ॥१॥

॥ पद ॥

श्रीहरिव्यास सुनों मेरी अरजी। गुणलरजी ॥
सबही जग तुम विन निगुर्णकौ कोईन गरजी।
तुमरे भजन विना त्रिगुणी नर कर्म धर्म के सबकरजी ॥
जबतुव चरण शरण जो आवै सो पावै दम्पति मरजी ॥१॥
तुवपद विमुख मनुष भुवपरजे तिन में भले श्वानखरजी।
तुव महिमा अति अगम अगोचर कहा जाने जो मूरख नरजी ॥२॥
अभय करण तव चरण शरण अति हरण तरणि सुतको डरजी ॥
रूपरसिकको देहु कृपाकरि अविचल प्रेम भक्ति चरजी ॥३॥

॥ आभास दोहा ॥

विद्यानिधिजय नमोनमः श्रीहरिव्यास पुनीत।
तिनके अर्द्धनाम सुमिरेते मिटे महाभवभीत ॥१॥

॥ पद ॥

नमोनमो हरिव्यास पुनीत।
तिनके अर्द्ध नाम सुमिरे ते मिटे महादुस्तर भवभीत।
चरण शरण तिनकी बिन निशि दिन मिलेन युगल अनोखे मीत।
श्रीहरि श्रीमुख निजमाया प्रति वरन्यो जिनको शरण सुगीत॥१॥
विद्यानिधि रिधि सिद्धि के दाता आपविधाता दशदिश जीति।
रूपरसिक हरिव्यास बिना है भयो न होत न चीत अतीत॥२॥

॥ इति रागगौरी ॥

॥ अथ रागजेत श्री आभास दोहा ॥

मह मंगल करणी सदा, हरण अमंगल रास।
प्रेम प्रीति बिस्तारती, आरति श्रीहरिव्यास॥१॥

॥ पद ॥

आरति-आरति श्रीहरिव्यास तुमारी।
मंगल रूप अमंगल हारी। करत महा आनंद उरभारी।
सन्त महन्त सकल सुखकारी॥ परम उदार हिये छबिहारी॥२॥
निरखत अँखियां टरत न टारी। रूपरसिक शोभा पर वारी॥

॥ इति राग जैतश्री ॥

॥ चौपाई ॥

इति हरिव्यास यशामृत सागर। बोरत सकल पापके कागर॥
चारि रागमें पद सुखदाई। लहरि द्वादशी पूरण पाई॥

॥ इति द्वादशी लहरी ॥

लहरि तेरही लिखो सुजाना। राग कानरो विहँग प्रमाना॥
पुनि सोरठ खम्भाइच कहिये। चारि राग में पद सब लहिये॥

॥ पद ॥

श्रीहरिव्यास शरण जो आवै।
सब सुखकारी प्रियतम प्यारी वृन्दावन चारी सो पावै॥

देवन को दुर्लभ महावाणी सुलभ जो नित पाठ करावै।
आदि सहेली रंग नवेली हितू हरि प्रिया दास कहावै॥१॥
निर्भय रहै लोक त्रय माहीं कोटिकाल यासों भगिजावै। निर्गुण
पदमें अनमि होइकर त्रिगुण भली विधि जारि उडावै॥२॥
आगम निगम अगोचर लीला सोहू दैस हजहि दरशावै।
जो कोउ करै भजन बिच अन्तर तिनको संग न मन में भावै॥३॥
सतरज तम सँग दूरि उडावै गुणातीत को संग करावै।
चारि पदारथ आदि सकल सुख प्रेमामृत्त चित्तनहिं आवै॥४॥
मात पिता भ्राता भगिनी सब धनि धनि तीन लोक करावे।
द्वारावती छाप तन लागे गोपीचन्दन तिलक धरावै॥५॥
माला मंत्र अष्टदश अक्षर युगल नाम सम्बन्ध धरावै।
शीतलताप छाप त्रय हरणी दम्पति सुखकरणी सो पावै॥६॥
युगल सेव बाहिर अरु भीतर आपकरै औरन करवावै।
जन्म कर्म उत्सव में तत्पर आनदेव मनतें छिटकावै॥७॥
भक्त भूपद्वै विचरत जगमें दरशन वै त्रयताप नसावै।
जिनकी श्रीमुख वाणी श्रवनन सुनतहि युगल हिये महि आवै॥८॥
कर्म ज्ञान योगादिक मारग विनहरि भक्ति न मनमें छावै॥
चरण धूरितिनकी पुनीत अति गंगादिक के पाप भगावै॥९॥
तीन लोक में जिनसंगति बिन राधारमन भक्त नहिपावै।
यह सिद्धान्त अपेल सुजानो श्री सुदेवी प्रति इमि गावै॥१०॥
परमदिव्य अष्टाक्षरमंत्र अंतर सदानिरन्तरध्यावै।
सबको रंगधाम अतिदुर्लभ ताहिठाम में रहै रहावै॥११॥
तीरथादि सब आयतासु के दक्षिण पद अंगुष्ठ बसावै॥
करत फिरत सब जग बड भागी अनुरागी नाचै अरु गावै॥१२॥
छके रहैं अति परा प्रेममें बेदर सीसो नाहि बंधावे।
प्यारी प्रियतम महल टहलमें तनकी सुधि सब दूरि पठावै॥१३॥

हरिव्यास देवाय नमोनम युगल नाम रसना उरझावे।
हरिव्यासी होइरहे उदासी दुख राशी गृहमाहिं वनावे॥१४॥
जो माया दूस्तर हरिजूकी सो हरिव्यासी शिष्य जनगावैं।
सो माया हरिव्यास दासकी अनायास भव पार करावै॥१५॥
बिन हरिव्यास तरें नाहिं माया मुनिसखा ऐसे जो बतावैं।
श्रीहरिव्यास चरण शरणागति श्रीहरि कृपाकरें तब पावें॥१६॥
श्री प्यारी प्रियतम अर्पण बिन भूलि न कबहू जल अनपावैं।
वाणी आदि सबाकी जनकों परम कृपा कर्म आप भणावें॥१७॥
श्रीप्रभु वाणी युगल मिलानी परम मंत्र वत पढ़े पढावे।
कबहुं हँसे सर्से पुनि कबहूँ मोद अंग नहि मावै॥१८॥
लोक लाज तजि गरजी श्रीभट पटराज सुयश दुलरावैं।
अति उदार आगार प्रेम धन वादी अनगम दूरि हरावै॥१९॥
श्रीहरिव्यास दास महिमा को शेष शारदा अन्त न पावें।
रूपरसिक महादीन दुखित को वे पालत पोषत संग लावें॥२०॥

॥ आभास दोहा ॥

भजिये श्रीहरिव्यास के, चरण अरुण जल जात।
तजिये यों संसार अति दुःख अगार विख्यात॥१॥

॥ पद ॥

भजि हरिव्यास चरण जल जाता।
दीन बन्धु भव सिन्धु पार कर तीन ताप हर आप विधाता॥
यों संसार असार छार तजि सुत आगार दार पितु माता॥
यों जग माहि सुखद हरिव्यासहि
बिन हरिव्यासहि सब दुखदाता॥१॥
अनायास सुख राशि नाम धरि दास युगल पद जोरत नाता।
रूपरसिक हरिव्यास भजन बिन मिटे न जन्मादिक उत्पाता॥२॥

॥ आभास दोहा ॥

सुख सागर हरिव्यास भजि, जगत उजागर नाम।
छागर कागर जगत भजि, आगर अब गुण ग्राम॥

॥ पद ॥

भजि हरिव्यास महा सुख सागर।
भक्ति भूप चूड़ा मणि स्वामी अन्तर्यामी जगत उजागर॥
सब दुःख हरण करण आनँदघन अशरण प्रेम पर आगर।
श्रीहरिव्यास शरण बन जगमें सर्व शरण कागर की सागर॥१॥
तिनकी शरण बिना तिहु पुरमें मिलें न युगल नागरी नागर।
रूपरसिक हरिव्यास भजो नित तन मन वाणी करिये कागर॥२॥

॥ आभास दोहा ॥

स्नान ध्यान विज्ञान को, आदि सकल तप जोई।
श्रीहरिव्यास सुनाम की, तुल्य न पावै कोई॥

॥ पद ॥

श्रीहरिव्यास नाम जिन लीनों।
स्नान ध्यान विज्ञान फल दान आदि पा संग नहिं कीनों।
अर्द्ध नाम सुख धाप लेत है मन वच क्रम निर्मल अघ हीनों॥
होत मुक्त भागोत भक्ति कहि पुनि पर से नहि जक्त मलीनों॥१॥
सम्पूरण हरिव्यास नाम ले तिन को युगल अपनपौ दीनों।
रूपरसिक के परम सुधन यह अखिल लोक यह नाम नगीनों॥४॥

॥ आभास दोहा ॥

मन मेरे सुमिरो सदा, सत गुरु श्रीहरिव्यास।
देव्यादिक सुमिरें सकल, तासु चरण के दास॥१॥

॥ पद ॥

गुरु हरि हरिव्यास सुमरि मन मेरे।
देव्यादिक सुर नर मुनि जन सब तिनके कमल चरण के चेरे॥

दम्पति सुख सम्पति वन दायक नायक त्रिभुवन रसिकन केरे।
चरण शरण हरिव्यास बिना तुव मिटै नहीं चौरासी फेरे।।१।।
श्रीहरिव्यास भजन बिनरे मन कटे नहीं दुःख सुख उरझेरे।
त्रिगुणि मुनी वर्णाश्रम सब में नाना भाँति४ करझेरे।।२।।
तिनकों सु प्रसन्न महन्त संत श्रुति गावत निशि दिन साँझ सवेरे।
रूपरसिक भक्तेश भूप बिन दूरि न होत जन्म दुःख नेरे।।३।।

।। इति राग कान्हरौ ।।

।। अथ राग बिहाग आभास दोहा ।।

धामहिलीला युगल की, मारग अतिहि अगम्य।
हितू सहेली कृपा बिन, कैसे लहै सुगम्य।।
मैं मन वच निहचै, करि पाई।
श्रीहितू सहेली कृपा बिना, वह मारग गह्यो न जाई।।
जामें श्री राधा मोहन की, लीला परम सुहाई।
आगम निगम पुराण, अगोचर सोलै मोहि बताई।।
श्री रंगदेवी सो बिनती करि परिकर माँहि मिलाई।।
कहा कहों सुभाग की श्रीहरिव्यासी दासि कहाई।।
अब कछु रहिन कामना जियरे भई हियरे सियराई।।
रूपरसिक करुणा निधि नागर आपनि जानि अनाई।।

।। आभास दोहा ।।

अति उतंग सबते सदा हरिव्यासनको संग।
तिनकी बातनिते लगै हियै युगलको रंग।।१।।

।। पद ।।

बड़ी अति हरिव्यासको संग।
तिनकी बात सुनत हिये लागै गौर सांवरो रंग।।
जिन कीने अनगण नीचे अब शिरकर धारि उतंग।
जोय तोय जैसें मलीन अति गंगामिल होय गंग।।१।।

गावन युगल सकल मन भावन दुरित नसावन कंग।।
रूपरसिक जिन इसक गही नित तिनको संग अभंग।।२।।

।। आभास दोहा ।।

हरिव्यासी निज कबमिले मोंही उदासी साध।
रस रासी वासी महा प्यासी प्रेम अगाध।।

।। पद ।।

अब मोंहि कब मिलि है हरिव्यासी।
परम सुशील रंगीली युगल पद त्रस भये जगत उदासी।।
दम्पति सुख सम्पति रुचिराचे सांचे महल उपासी।।१।।
जिनके दर्श परसते पाए अद्भुत विपिन विलासी।
गावत रहें सदा श्री मुखतें महावाणी रसरासी।
जुटेरहत हरि प्रिया संगसों छुटे त्रिगुणकी फाँसी।।२।।
संस्कार पाँचों युत राजत मुख हरिव्यास निकासी।
रूपरसिक हँसिभेट मिली महावाणी प्रेम प्रकाशी।।३।।

।। आभास दोहा ।।

मन भाई भजिये सदा जनराई हरिव्यासी।
सुखदाई गाईगिरा जिन महा सुखकी रास।।

।। पद ।।

श्रीहरिव्यास भजो मन भाई।
अशरण शरण करण सुख दुखहर महा प्रेमघर आनँददाई।।
अतिदयाल जन पाल गुणा गुण सकल लोक आचारजराई।
वेदनकी अतिहीजो दुर्लभ सो महा वाणी आपबनाई।।
दम्पति मिलन सनातन मारग भजन रीति जो प्रभुदरसाई।।
रूपरसिक रसिकनि की जीवनि महिमा अमित पार नहिं पाई।।

।। आभास ।।

भजिये श्रीहरिव्यास के चरण तरत भव पाथ।

रजिये साधू संगसों तजिये जगको साथ ॥

॥ पद ॥

मन भजिये हरिव्यास चरणकौं ॥
भव सागर दुस्तर दुख आगर ताको सहज तरनकौं ॥
बिन प्रयास दम्पति सुखसम्पति रतिअति हिये करनकौं ॥
रूपरसिक रसिकनकी आशा जिनबिनकौन भरनकौं ॥२॥

॥ आभास ॥

जे हरिव्यासदास सुभागकी महिमा मोपै कीन नाजात।
जे हरिव्यासीदास कहाई।
तिनके परम भागकी महिमा मोपै कही नजाई।
अनायास सुखरासि युगल तिहि वरबट आनि मिलाई ॥
दरश परस तिनकौ कोउ करिहै ते भव सहज तराई।
धनि धनि भ्राता माता पितु तिनकौ काल जोरिकर वदन अनंत कराई॥
रूपरसिक ते तीन लोक में पावन पतित सदाई ॥

॥ इतिरागविहागरो ॥

॥ अथसोरठ आभास ॥

जिनके चरण सुशरण की सबके जिय जिज्ञास।
ऐसे परम कृपाल प्रभु, वन्दौं श्रीहरिव्यास ॥

॥ पद ॥

बन्दौ श्रीहरिव्यास कृपाल।
पतित पावन भक्तभावन एकर सतिहुँ काल ॥
शरण तिनकी आव लीनीद्वादशो गोपाल ॥
ऐसे समरथकोन जगमें करण हार निहाल ॥१॥
भक्त उपजावै हरें अरु करें सबकौं पाल ॥
सोई भक्ति सहाइ कारण तकशिरण विशाल ॥२॥
गह्यो जलमें ग्राहगजको कियो अतिहि विहाल ॥

तहाँ अर्द्धहि नाम करि करि काढ्यो सकल जँजाल ॥३॥
एक मात्राही न अर्द्धसुनामलहि शशि भाल ॥
डेरहे महादेव शंकर हरण काल कराल ॥४॥
देखि अनुचर दीन जन पर दयाद्रवत दयाल।
पलक लहरि दरयाव जैसे करत खलक खुश्याल ॥५॥
रहत निशिदिन हरि प्रिया है निकट राधा लाल ॥
रूपरसिकहि जानि अपनों देहुं भक्ति रसाल ॥६॥

॥ आभास दोहा ॥

वाहिर भीतर युगल की, सदाजु एक प्रधान।
सो हरिव्यास सुजान भजि, दायक प्रेम निधान ॥

॥ पद ॥

भजिये श्रीहरिव्यास सुजान।
वाहिर भीतर युगज जू की छवि सदा दृढ़पान ॥
रसिक नायक युगल दायक सही सो भगवान।
वा विना प्रिया लाल जू सो होत नाहिं मिलान ॥१॥
राधिका हरि अनँत लीला सकल को सो पान।
रूपरसिक सु प्राण जीवन धन श्री हरिव्यास निदान ॥२॥

॥ इति राग सोरठ ॥

॥ अथ राग खम्माच आभास दोहा ॥

जिनकी पद धरी परसि, होत अमंगल नास।
म्हाने प्यारा लागे हो श्री हरिव्यासी दास ॥१॥

॥ पद ॥

हो हरिव्यासी म्हाने प्यारो लागें जू।
तिनकी चरणरेणु सपरस ते सकल अमंगल भाजें जू ॥
नेम पासते छुटे रस जुटे प्रेम के धागे जू।
तिनकी कृपा द्रवे दम्पति यों जैसे स्वर्ण सुहागे जू ॥

नित्य विहार विना तिनकी मति गति रति अन तन पागे जू।
रूपरसिक भगतेश भूप गुण गण मन अनुरागे जू॥

॥ आभास दोहा ॥

हरिव्यासी जन मोहि अति, भावें परम सुशील।
जो प्यारी पियको सही, देत करें नहिं ढील॥

॥ पद ॥

हो हरिव्यासी जन मोहि भावे जू।
जिनके दरश परस करि श्री हरि राधा उरजु बसावें जू॥
महावाणी दोउ लाल मिलानी प्रेम कहानी गावें जू।
युगल सेव विन आन एव कछु भूलि न मन में लावें जू॥१॥
जो कोउ चरण शरण है तिनकी सो फिर जग नहि आवे जू।
रूपरसिक भगतेश भूप विन को यश अम्मृत वर्षावें जू॥

॥ आभास दोहा ॥

हरण अमंगल व्यास सब, करण सुमंगल रास।
सो भजिये हरिव्यास जू, परा प्रेम परकास॥

॥ पद ॥

सकल अमंगल करण हरण त्रयताप
दुख सुख पायो निधि भज सदा हरिव्यास जू।
तासु विन सकल संसार में और नहि
त्रिगुण जन गणमहीं हरण अघ नासजू।
अखिल ब्रह्माण के रसिक चातकनकी
जाविना कोन मेटे प्रणय प्यासजू।
रूप रसिकेश सर्वेश भक्तेश प्रण
हरिप्रिया रूप श्रीभटके दासजू॥३॥

॥ इति राग खम्माचकी ॥

॥ चौपाई ॥

इति हरिव्यास यशा मृतसागर। लहरि तेरही चार रागधर॥
शुभग सुहाये पदहें यामें। पूरणता पागहें यामें॥१२॥

॥ इति श्री त्रयोदश लहरी लीला ॥१३॥

॥ दोहा ॥

लहरि चौदही लिखों अब तामें राग जुतीन।
पंचम अखण्ड वृन्दावनी काफीहै रंगभीन॥

॥ अथ राग पञ्चम आभास दोहा ॥

जयति नमोनम जय नमो युगल रूप श्रीहंस।
अमित रूप धरि जगतहित प्रगट कियो जिनवंश॥१॥

॥ पद ॥

जय नमो जय नमो जय नमो जय नमो श्रीयुगल सरूपा।
भक्ति प्रेमादि सब दिये सनकादिकों किये तिहुँलोक के भक्त भूपा॥
जयजय सनकादि जग आदि नारद
मुनीनिम्ब आदित्य नित्य ध्यान कीजें।
जय जय श्रीनिवास विश्वपुरुषोत्तम
जय जय जय श्री विलास को नामलीजे॥१॥
जय जय निज रूप माधव सुवल
भईजु परा श्रीश्याम सुखधाम गावौ॥
जय गोपाल श्रीकृपा चारज देव दशोदिश जीत सबदिन मनावौ॥५॥
जय जय सुन्दर सुभट पद्मनाभ प्रभो जय जय उपइन्द्र श्रीराम चन्द्रम्॥
जय जय वामन जयति कृष्ण पद्माकरं।
श्रवण भट भूरि महा भक्त इन्द्रम्।
जय जय बलभद्र जय गोपिनाथम्॥
जय जय केशव सुमंगलसु। जयजय केशव काशमीर॥
सुयश अमितगाथं।

जय जय श्रीभट पटराज हरिव्यासजू सकल अघनाशजू अद्वनामी।
दशदिशि जीति सब नेतिदेव्यादि
गुरु भक्त जनईश महा प्रेमधामी॥५॥
सदाजपि सदाजपि गुरु परम्परा यह श्याम श्यामा सुपद प्रेमदाई।
विना इनकी शरण रूप रसिकौ
सुनों मिलें नहिं युगल कहों शपथखाई॥६॥

॥ आभास दोहा ॥

श्रीहरिव्यास सुजानको धरिये ध्यान अखण्ड।
प्रचुर सुयश तिनको सदा व्यापि रह्यो ब्रह्मण्ड॥

॥ पद ॥

धरिये मन ध्यान कल्याण मयं। नमि श्रीहरिव्यास जनेश को॥
दीनदयाल प्रगट तिहुं काल है। अज अव्यय सर्वेश को॥१॥
गौर वर्ण आ जानु बाहु दृग कंजसु महासु देश को॥
रूपरसिक देव्यादि कृपाल को सो प्रभु सदा महेशको॥२॥

॥ इति राग पंचम ॥

॥ अथ राग षट ॥ आभास दोहा ॥

नमो नमो जय जय नमो, भक्त भूप हरिव्यास।
जिनके आधे नामते, होत पाप सब नाश॥१॥

॥ पद ॥

जय जय नमो नमो हरिव्यासजू।
भक्त भूप हरि प्रिया रूप पुनि। अति अनूप श्रीदासजू॥
जिनके अर्द्ध नाम की महिमा गावत श्रुति इतिहास जू।
भक्त आश जा विन कों पुर वै महावाणी परकाशजू॥१॥
अचल अकल थिर चर के स्वामी सदा युगल के पासजू।
रूप रसिक जन प्यासजू॥

॥ इति राग षट ॥

॥ अथ राग वृन्दावनी काफी आभास दोहा ॥

श्रीस्वामी हरिव्यास के, दास मही तिहु लोक।
आन दास के लगत हैं, सब दिन ठोका ठोक।

॥ पद ॥

सही हरिव्यास के दासा।
और दास भव पास वधन है लगे त्रिगुण की आशा।
महा सुखद निर्गुण पद वेहद तहाँ किया निज वासा।
धर्म अर्थ अरु काम मोक्ष ए चारों की तजि पासा॥१॥
क्या सटकी पुनि जक्त वास की कर्म व्यथा सब न्यासा।
सदा महल की चहल पहल देखत तहाँ तमासा॥२॥
महा छके अति पके परारस अन्दर खरा उजासा।
रूपरसिक भक्तेश भूप मिलि विचरत सदा खुलासा॥३॥

॥ आभास दोहा ॥

हरी भरी सब दिन खरी, दरी महा दुख त्रास।
परा प्रेम रस की झरी, सेवा श्रीहरिव्यास॥

॥ पद ॥

खरी हरिव्यास की सेवा।
हरी भरी सुख करी हरी दुख। देत युगल छवि मेवा॥
मिलैं नहीं हरिव्यास सेवकि हूँ अमित उपाय करे वा।
कृपा करें दम्पति सुख सम्पति तवै लहै कोई भेवा॥१॥
त्रिगुण राय उडाय भली विधि। निर्गुण पद की देवा॥
भव सागर उतरन को नौका और भली विधि खेवा॥२॥
युगल छैल अति ही अरैल सहजे आनि मिलेवा॥
ऐसी और न फल की दाता गंगा काशी रेवा॥३॥
सब सुख धाम श्याम श्यामा पद महल टहल उरझेवा।
केवा दूरि करी यम भट कें आन बसाना देवा॥४॥

भक्तवत्सला शरण पालिका स्वतः सिद्ध यह टेवा।
रूपरसिक सब हरि रसिकनि की है सेवा यह टेवा॥५॥

॥ आभास दोहा ॥

सब तजि रे मन भजि सदा, श्रीहरिव्यास महन्त।
तिन की कृपा चितो निर्ते, मिलें राधिका कन्त॥

॥ पद ॥

सकल तजि भजि हरिव्यास महन्ता।
अति उदार आगार प्रेम के जनाधार भगवन्ता॥
अनतरयामी तिहुँ पुरगामी परा प्रेम में मन्ता।
अनंत उधारे पापी शापी भवसागर डूबंता॥१॥
जिन करणी महावाणीरानी सर्व वेद को तन्ता।
जिनको यश गावत त्रिभुवन में त्रिगुण नृगुण बहुसंता॥२॥
तास चरणकी शरण बिना नहिं मिले राधिका कंता।
रूपरसिक भक्तेश भूपकी शरण बिना नहिं मिले राधिका कंता॥३॥

॥ इति राग वृन्दावनी काफी ॥

॥ चौपाई ॥

इति हरिव्यास यशामृत सागर। लहरि चौदही तीन रागधर॥
पूरणता पाई मन भाई। रसिकभक्त हिय लेत चुराई॥

॥ इति चतुर्दश लहरी ॥

॥ दोहा ॥

लहरि पंद्रही में लिखूं, शरण द्वादशी एक।
दूजी शरणजु मंजरी, भरी जु महा विवेक॥

॥ अथ शरण द्वादशी लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥

जय जय श्री हरिव्यास जू, दश दिशि जीत पुनीत।
करी प्रगट जग तरण हित, महा भजन रस रीत॥१॥

जय जय श्री हरि व्यास जू, सर्व गुरु भगवन्त।
सदा सर्वदा एक रस, युगल रूप में मन्त॥२॥
जय जय श्री हरिव्यास जू, अनगण पतित निवाज।
बहुत रूप धरि करत नित, अनंत भक्तके काज॥३॥
वेद नीरमें क्षीर हरि, भजन मिल्यो रस रास।
हंस वंश प्रगट कियो, न्यारो श्री हरिव्यास॥४॥
श्रीभट षट्राज प्रभु, श्री हरिव्यास अतीत।
तिनकी शरणागत बिना, मिलैं न दोऊ मीत॥५॥
श्री स्वामी हरिव्यास जू, सच्चिदानंद स्वरूप।
निशि दिन सेवत युगलको, है हरि प्रिया अनूप॥६॥
कृपासिंधु ध्यावै न जो, श्रीहरिव्यास उदार।
सो कहै कैसे पाइ है, वृन्दा विपिन विहार॥७॥
चरण शरण हरिव्यास की, जो आवै नरनारि।
मन वच क्रम तिनको मिलैं, श्री हरिभानु कुमार॥८॥
चरण शरण हरिव्यास की, भयो न जब लग आनि।
वृन्दाबन निज धामको, कैसे हो पहिचान॥९॥
अर्धनाम हरिव्यास को, नाम लेत नर कोय।
सो अघमल त्रयतें सही, निहचैं निर्मल होय॥१०॥
सम्पूरण हरिव्यास को, नाम सुकरै उचार।
ता नर को निहचै मिलैं, नवल निकुंज विहार॥११॥
जय जय श्री हरिव्यास जू, परा प्रेम के सिन्धु।
सदा सच्चिदानंद घन, रसिक जनन के बन्धु॥१२॥
रूप रसिक हरिव्यासकी, शरण द्वादशी नाम।
सुनें गुणें पुनि हिय गुणे, सो पावै रंग धाम॥१३॥

॥ इति श्री हरिव्यास देव शरण द्वादशी ॥

॥ अथ शरण मंजरी लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥

युगल रूप हरिव्यास प्रगट आचारज हरिव्यास।
तिनकी शरण सुमंजरी लिखों वन्दि पदतास॥१॥
चरण शरण हरिव्यासकी जौलों होई न जीव।
तोलों नाहिन पाइहै, श्रीवन प्यारी पीव॥२॥
चन्दसूर्य थिरहैं नहीं नहीं धरण आकाश।
कर्म आदि त्रैगुण नहीं तबके श्रीहरिव्यास॥३॥
युगल रूप हरिव्यास की लीला अपरम्पार।
श्रीवृन्दावन धामकौ मिटै न नित्य विहार॥४॥
जबके युगल किशोरजू तबके श्रीहरिव्यास।
माया त्रिगुण प्रसूतिका तासु चरणकी दास॥५॥
श्रीवृन्दावन धाममें दम्पति नित्य विहार।
आचारज हरिव्यासजू तहां विराजत लार॥६॥
तातें सब तजि भजि सदा सर्वेश्वर हरिव्यास।
तिनके आधेनामतें होत त्रिविध अघनाश॥७॥
चारि पदारथ भक्ति पुनि प्रेम युगल सँगवास।
मिलें न कोटि उपाय करि बिना शरण हरिव्यास॥८॥
जोनित्य प्रति हरिव्यासकी नामसु करै उचार।
सो निश्चयकरि पाय हैं, दम्पति नित्य विहार॥९॥
दम्पति नित्य बिहारके अगिवानी हरिव्यास।
तिनकी पदकंज आशते मिलिहैं युगल विलास॥१०॥
श्री मत युगल विलास, बिन है न जन्म कौ नास।
ताते मन वचक्रमजु करि धरि हिय भजि हरिव्यास॥११॥
हरि नँदनन्दन राधिका व्यास अर्थ यह जानि।
परम हंस हरिव्यासजू युगल रूपपर आनि॥१२॥

सर्व वेद वेदान्त कौ सारनाम हरिव्यास।
ताविन यह कलिकालमें है न दूरि दुख क्यास॥१३॥
हंश वंश प्रगट भये युगल आप हरिव्यास।
अखिल लोक निस्तार हित प्रेमकरण परकाश॥१४॥
आचारज हरिव्यासकौ सब दिन बात बहीजू।
तासबिना नहिं पाइए श्रीहरि अलक लडीजू॥१५॥
आचारज हरिव्यासकौ सबदिन बात भलीजू।
तिनके वस दोउ कहे श्रीहरिभानु ललीजू॥१६॥
आचारज हरिव्यासके सब दिन बात खरीजू।
तिनकी चरण शरण बिना मिलें न प्रिया लरीजू॥१७॥
आचारज हरिव्यासकी सबतें बात सहीजू।
माया प्रति शरणा गति तिनकी कृष्ण कहीजू॥१८॥
दुर्लभ मानुष देहकौ इतनीही फल जानि।
युगल रूपहरिव्यासपद दृढकीजै मनमान॥१९॥
आचारज हरिव्यास के चरण धारि उरमाथ।
तबतू सहजें पाइहै दुर्लभ राधा नाथ॥२०॥
आचारज हरिव्यासकी बात जानि निरधार।
तिनकी चरण शरण बिना मिलें न युगल बिहार॥२१॥
आचारज हरिव्यासकी रीति भाँति कछु और।
तिनकी चरण सुसेव बिन मिले न दम्पति ठौर॥२२॥
आचारज हरिव्यासकी देखो अद्भुत चाल।
चरण शरणही मात्रतें मिलें राधिकालाल॥२३॥
आचारज हरिव्यासकौ सर्व सिद्धिदा नाम।
जानि अजानि जपै जु नर सो पावें सुखधाम॥२४॥
अर्द्धनाम हरिव्यासकौ करे सकल अघनाश।
चारि वर्णपूरोजपें पावें युगल विलास॥२५॥

पुनि श्रीमंत हरिव्यासके दासनको करि संग।
तिनविन नाहिं पाइए दम्पति नित नवरंग ॥२६॥
युगल रंगमें रंगि रहै आन रंग करि नाश।
सो जानो या जगतमें अनन्य दास हरिव्यास ॥२७॥

॥ श्लोक ॥

भजेहंऽ हरिव्यास देवं कृपालं महाराज राजं जनेशंरसालम्
सदा भक्तभूपेशमाद्यं मुकुन्दं परं प्रेमकंदंजनानंदसुशंदम्।
श्रीहरिव्यास देवाय नमस्ते सुखराशाय सच्चिदानन्द रूपाय।

॥ दोहा ॥

शरण मंजरी यह कही पोथी सकल विचारि।
रूपरसिक हरिव्यासके चरण कमल उरधारि ॥२८॥
बीश आठ दोहा कहे श्लोक दोय सुख धाम।
श्रीहरिव्यास कृपालकी शरण मंजरी नाम ॥२९॥
इति श्रीरूपरसिक कृता, शरण मंजरी एह।
पूरण सब सुख की घरी, गुरुरूप पद नेह ॥३०॥

॥ इति शरण मंजरी ॥

इति हरिव्यास यशामृत, सागर की कही।
लहरिपन्द्रही ताप त्रिविधि, अघ सब दही॥
शरण द्वादशी तामहि, गुरु तन की छई।
हरिदासी जी शरण मंजरी, पूरणता भई॥

॥ इति पंचदश लहरी ॥

॥ चौपाई ॥

लहरि षोडश अब तुम जानहु। कृपा जु दशमीता मधिमानहु॥
सत संगति एका दसि पुनि गुनि। ता भीतर सो लिखी सदा सुनि॥

॥ अथ कृपा द्वादशी लिख्यते ॥

महावाणी मुख ते भनें सुनें युगल रतिरंग।
कृपा होय तब ही मिलें, हरिव्यासन को संग ॥१॥
पाप हरण सब सुख भरन, करण दूरि अपराध।
कृपा होय तबही मिलें, हरिव्यासी प्रिया साध ॥२॥
युगल तके रसमें पगे छके, विपिन छवि जाल।
कृपा होय तबही मिलें, श्रीहरिव्यास दयाल ॥३॥
जग सों भये उदास जे, आश विपिन सुखरास।
जे जानों या जगत में श्रीहरिव्यासी दास ॥४॥
युगल लगे जगसों भगे, पढो परारसरास॥
तेजानों या जगत में सगे दास हरिव्यास ॥५॥
श्रीहरिव्यास उदार पद तास हिये आगार।
जे जानत रस रीति सब वृन्दा विपिन विहार ॥६॥
जिनकी कृपाचितोनते, पावें विपिन विलास।
कृपा होय तबही मिलें, प्रेम रासिहरिव्यास ॥७॥
जोगी जंगम जे न द्विज, सन्यासी पुनि शेष।
बिना भजन हरिव्यास के, इनि के झूँठो वेष ॥८॥
जोगी जंगम जैन द्विज, सन्यासी शिष आदि॥
बिना शरण हरिव्यास पद, षट दर्शन सब आदि ॥९॥
युगल बिना जाने नहीं, हरिव्यासी निज सन्त।
तिनकी बातन तें मिले, राधा कन्त तुरन्त ॥१०॥
कृपा दशमी यह कही, दोहा दशविस्तार।
रूप रसिक भजिये सदा श्रीहरिव्यास उदार ॥११॥

॥ इति कृपा दशमी ॥

|| अथ श्रीसंत संगति एकादशी दोहा ||

आचारज हरिव्यास कौ, अति ही समरथ जानि।
चरण शरण भई आनि वह, तीनों गुण की खानि।।१।।
श्रीहरिव्यासी दास कों, काल न कबहूं खाय।
चुनि चुनि खावें सबनि कौ, निर्गुण निकट न जाय।।२।।
निर्गुण श्रीहरिव्यास के दास सकल सिरताज।
अजर अमर तिहुँ काल में, अनन्य रसिक महाराज।।३।।
तिनही के संग कीजिये छांडि, आन सब काज।
ते विचरें त्रैलोक में निर्भय पतित निवाज।।४।।
पतित निवाज सु जगत मे हे हरिव्यासी दास।
मन बच क्रम तिन संग बिन, है न जन्म कौ नास।।५।।
राधा माधव रूप में, छके रहत निशिभोर।
हरिव्यासी चाहत नहीं, मुक्ति सुखन की वोर।।६।।
दम्पति सुख सम्पति विना, जानत नाहि लगार।
हरिव्यासन की लगत है मुक्ति आदि सुख खार।।७।।
जोरी चोरी धर्म कर, करि हरिव्यासी सेव।
मनसावाचा कर्मणा, यही भक्ति की टेव।।८।।
लोक लाज पुनि राज सब, निहचैं रंग पतंग।
सकल स्वाद तजि देह के, करि हरिव्यासी संग।।९।।
हरिव्यासिन के संगते, आय मिलें दोउ लाल।
तिनकी संगति बिन सही, मिलें न युगल कृपाल।।१०।।
नमो नमो नम जय नमो, हरिव्यासीजन बृन्द।
तिनकी संगति सों मिटें, जरा मरण दुखद्वन्द।।११।।
सत संगति एकादशी, पढ़ै सुनै करि प्रीति।
रूप रसिक जो जानि हैं, हरिव्यासन की रीति।।१२।।
हरिव्यासिन की रीति यह, वृन्दा विपिन विहार।

नित्य सनातन एक रस, सब वेदन कौ सार।।१३।।
सत संगति एकादशी, दुहा चतुर्दश जानि।
इति श्रीरूप रसिक करी, भई सम्पूरण आनि।।१४।।

|| इति श्रीसत् संगति एकादशी ||

|| मांझ ||

इति श्रीमत हरिव्यास देव यश अमृत सागर लहरी।।१५।।
कृपा दशमी तास विराजत महा कृपा रसगहरी।
पुनिसत् संगति ग्यारसी तामहि साधु संगके दाई।।
पूरणता भई है लहरी रसिक जनन मन भाई।।

|| इति श्री षोडशी लहरी ||

|| चौपाई ||

सप्तदशी लहरी अब लिखूं। तामधि भजन अष्टमी दिखूं।।
मारू राग बसन्तजु यामें। पुनि कालिंगडोरागहै यामें।।

|| अथ भजनाष्टमी लिख्यते ||

|| दोहा ||

जाबिन मिलै न युगलजू, परम रसिक शिरमौर।
सो भजिये हरिव्यास जू, तजि अनेक मत और।।१।।
याबिन मिलें न युगल जू, परी प्रेम की रारी।
सो भजिये हरिव्यास जू, तजि अनेक मतहारी।।२।।
या बिन मिलें न युगल जू, श्रीवृन्दावन चन्द।
सो भजिये हरिव्यास जू, परा प्रेम रसकन्द।।३।।
याबिन मिलें न युगल जू, रसिक राज राजेश।
सो भजिये हरिव्यास, जू, आचारज सर्वेश।।४।।
याबिन मिलें न युगलजू, महा अनोखे छैल।
सो भजिये हरिव्यास जू, सदा युगल की गैल।।५।।
याबिन मिलें न युगल जू, राधा मोहनलाल।

सो भजिये हरिव्यास जू, अतिही दीनदयाल ॥६॥
याबिन मिलें न युगल जू, सर्व बेदको सार।
सो भजिये हरिव्यास जू, सर्ववेदको सार ॥७॥
जाबिन मिलैं न युगल जू, तापर और न कोय।
सो भजिये हरिव्यास जू, सकल आस उर धोय ॥८॥
भजन अष्टमी यह कही, रूप रसिक हरिव्यास।
जो गावै सीखै सुनै, गुनै तास अघनाश ॥६॥

॥ इति भजन अष्टमी राग मारू ॥

॥ आभास दोहा ॥

युगल चरित्र बिना कछू, और न श्रवण सुहाय।
सोई रसिक अनन्य हैं, और वृथा जग मांही॥

॥ पद ॥

सोई रसिक अनन्य कहावै।
जिनको युगल चरित्र बिना श्रवन नहिं और सुहावै॥
वाही रँग रंग रहे रंगीले तिनही को संग भावै॥१॥
अनु दिन रहत भावना भीनें नव नव रुचिहि बढावै।
जो कोउ बाधक या बतियन में तिनको संग छिटकावै॥२॥
सदा सर्बदा हितू सहेली जू की कृपा मनावै।
हरसि हिये श्रीहरि प्रिय स्वामिनि अपने निकट बसावै ॥३॥
नित्य रहसि निरखत निज नैननि सैननि में समझावै।
रूप रसिक अनुपम छबि लखि लखि पुलकन अंग समावै॥४॥

॥ आभास दोहा ॥

निजदासी निज कर करें कृपा जास पर जोहि।
यह सुख दुर्लभ अति महा पावहि सुलभ सोहि॥

॥ पद ॥

सुलभ सोय लहै सुखएह।

अग्र बर्तिनि दया उरधारि करें जिन सों नेह॥
शरणहै बहु भांति जग में नाहिं जिनके छेह।
शुद्ध प्राप्ति करनको नहि और इन सम सेह॥१॥
पाप पावन करण पद नहिं कियो पावन गेह।
रूपरसिक निहारि छबि अंग पुलक पुलक हितेह॥३॥

॥ इति राग मारू ॥

॥ अथराग बसन्त आभास दोहा ॥

साधो आराधो सदा श्रीहरिव्यास सुदेव।
राधो माधोकी सही लाधो जब तुम सेव॥१॥

॥ पद ॥

साधो आराधो हरिव्यास देव।
लाधो जब प्यारी पीव सेव। श्रीभट पटराज भक्त पाल॥
रसिकेश्वर स्वामी अति रसाल अविरोध सुमत में महासूर।
ब्रह्माण्ड सकल पाखण्ड चूर ॥१॥
करता महावाणी अति उदार। करी रूपरसिक सों भटसार॥
जिन बिन पइए नहीं नित्य विहार॥ चिदघन वृन्दावन रसअगार॥२॥
जो आप सदा हरिप्रिया रूप। सेवति नित दम्पति अनूप॥
सो अगवानी श्रीरंग धाम। ताबिन ना मिलें नहि प्रिया श्याम॥३॥
जिन शिष्य कीनी महा त्रिगुण नाग।
ताके अर्द्धनामतें पापजाय कहें रूपरसिकजन बार बार॥
हरिव्यास भजन बिन जन्मख्वार ॥४॥

॥ इति राग बसन्त ॥

॥ अथरागकालिंगडी ॥

मेरे मन भजिले सदासत गुरु श्रीहरिव्यास।
जाबिन तेरीहै नहीं दूरि गर्भकी त्रास॥

॥ पद ॥

मेरे मन भविले श्रीहरिव्यास।
होय नहीं तिन विन सुनि तेरी दूरि गर्भकी त्रास॥
विन हरिव्यास लोक त्रय मांही सबही आश निराश॥
सब सुख रास दास श्रीभट पद दायक विपिन विलास॥१॥
अर्द्धनाम जिनको उचरतही होय सकल अघनास।
मूल प्रकृति सेवत निशिवासर चरण कमल भलजास॥२॥
तीन भवनमें अद्भुत प्रेम प्रकास।
चरण शरणको देत युगल पद दुर्लभ विना प्रयास॥३॥
अविचल सकल अमंगल चूरी पदधूरीहै तास।
रूपरसिक भगतेश भूपविन कटे नहीं भवफास॥४॥

॥ इति कालिंगडौ ॥

॥ चौपाई ॥

इति हरिव्यास यशामृतसागर। श्रीगुरु भक्तिरत्नको आगर॥
सकल पापकी नैया चूरण। सप्तदशी लहरी भई पूरण॥

॥ इति सप्त दश लहरी ॥

॥ चौपाई ॥

अष्टादशी लहरि पुनि जानों। तामें जय जय लीला मानौ॥
रसिक भक्त हियहरणी वरणी। सुखकरणी भवपार उतरणी॥

॥ अथ जयजय लीला लिख्यते ॥

पापी सापी तारिया अनगण अघकी रास।
भक्त अनेक उबारिया जय जय जय हरिव्यास॥१॥
कोऊ भीतर बाहिर कोऊ ए सब ठौर प्रकास।
श्रीभटदास खुलास सबदिन जयजय जय हरिव्यास॥२॥
मोहन मन्दिर में सदा रहत युगल के रूप।
राधाकृष्ण विलास निधि जय हरिव्यास अनूप॥३॥

तिनकी दयासु दृष्टि विन मिलें न युगल विलास।
पराप्रेम के खास में जय जय जय हरिव्यास॥४॥
माया त्रिगुण प्रसूतिका, तासु चरण की दास।
सो मोपर किरपा करो, जय जय जय हरिव्यास॥५॥
बड़े सन्त महन्त सुर, तिनकी करत उपास।
सतगुरु राजेश्वर सदा, जय जय जय हरिव्यास॥६॥
तास विना तिहुँ लोकमें, सबकी आशनि सुरास।
भक्त आश पूरण करण, जय जय जय हरिव्यास॥७॥
जाविन सबकी होतहै, त्रिभुवन में अपहास।
व्यास हरण जन भरनसों, जय जय जय हरिव्यास॥८॥
हरि कहिये श्री युगल शत, ताके व्यास प्रकाश।
महावाणी सुख पंचकरि, जय जय जय हरिव्यास॥९॥
अर्द्धनाम तिनको जपै, ताके अघ होय नास।
ऐसे परम पुनीत भजि, जय जय जय हरिव्यास॥१०॥
तिनके चरण शरण विना, है मय पुरमें त्रास।
त्रास हास अनायास हो, जय जय जय हरिव्यास॥११॥
जा प्रभु सब सिद्धान्त मथि, कीनों प्रेम प्रकाश।
त्रिगुण नृगुण सब दासके, स्वामी जय हरिव्यास॥१२॥
पल स्वासा घरि पहर दिन उभै पक्ष पुनि मास।
होय सही सुमिरण किया, जय जय जय हरिव्यास॥१३॥
पलक घरी पुनि पहर दिन पक्ष युगल बहुमास।
होय वृथा या विन सकल, जय जय जय हरिव्यास॥१४॥
राधा मोहन टहल के, करता सखी खवास।
सदा सर्वदा सो प्रभु, जय जय जय हरिव्यास॥१५॥
श्रीहरिव्यास उदार की, जय जय लीला नाम।
रूपरसिक गावैं सुनैं, सो पावैं रँग धाम॥१६॥

संख्या षोडश दोहरा, सो पावें रँग धाम।
पूरणता पाई रसिक, रूप हिये शुभधाम ॥१७॥

॥ दोहा ॥

इति पुराण संख्या लहरि, पूरण भई जु आय।
जय जय लीला तामही, युगल महल सुखदाय ॥१८॥

॥ इति अष्टादश लहरी ॥

॥ दोहा ॥

उगणी सो लहरी लिखों, तामें सुन्दर मांझ।
युगल मिलें तिनकों किये, पाठ सकारे सांझ॥

॥ अति मांझ ॥

आदिगिरा को नाम सही हरि वडरेन की ही जानों।
ताहरि के किये व्यास वाग सुख व्यास यह मानो।
पुनि अवतार अनन्त गुण लीला तिनकों कियो बखानों॥
रूपरसिक हरिव्यास अर्थ उरमें दृढ ऐसें आनों ॥१॥
नमो नमो हरिव्यास गुसाई मन भाई मोहि दीनी।
प्यारी प्रियतम रंग महल की टहल सखीले कीनी॥
सबको जो दुर्लभ सो सुलभ सब दई रंग भीनी।
रूपरसिक पाई हमें सुत्र निधि रिधि सिधि सदा न छीनी॥२॥
मिटे नहीं हरिव्यास भजन विन जन्म मरण को झगरो।
देखो जोई निगम अगम इतिहास पुराण जु सगरो।
नेम प्रेमते परे बताओ जा प्रभु अद्भुत दगरो॥
रूपरसिक हरिव्यास भजन सबही ते अगरो॥३॥
जय जय श्री हरिव्यास देव भू सकल गुरु भगवन्ता॥
तिन विन मिलें नहीं त्रिभुवन में नित्य राधिका कन्ता।
अनगण जीव उधारे जी प्रभु भव सागर डूबन्ता॥
परा प्रेम में मन्ता तिनकी महिमा को नहिं अन्ता॥४॥

आप रूप हरिव्यासदेव को राधा माधो जानों।
तिनकी शरण विना गति नाही कहा भ बहुत बखानों॥
हरि माधो साधो मुनि लीजे व्यास राधिका मानों।
रूपरसिक हिय इसक धारि क या विधि उर में आनों॥५॥
जय जय श्रीहरि व्यासदेव जू महा प्रेम के सागर।
सर्व पाप हरि त्रिभुवन में वर तिनको सुयश उजागर॥
दम्पति पद दायक मुनि नायक गायक नागर नायक।
रूप रसिक रसिकन के भर्ता युगल इष्ट के आगर॥६॥
जय जय श्रीहरिव्यासदेव प्रभु देव्यादिक के गुरुजी॥
तिनकी शरण होत ही भव सागर दुस्तर गोखुर जी॥
सब सुखरास दास श्री भटके सकल लोक पर प्रचुर चुरजी॥
सदा लसो मम भाल बसोदृढ रूप रसिक के उरजी॥७॥
निरबल तही मंडल मण्डन मणि श्रीहरिव्यास उदार।
तिनकी चरण शरण अनुरागे जागे भाग हमार॥
रसिक अनन्य नृपति चूडामणि अंश कला अवतारा।
रूप रसिक प्रभु परम प्रेमते वरन्यो नित्य विहारा॥८॥
त्रिगुण गये साक हम अति ही बाके दुख की रासी।
हाके सकल शुभा शुभ क्रम धूम भ्रम माया की पासी॥
था के आनध्यान में अवतो काके नहीं खवासी॥
छाके रूपरसिक दम्पति छवि हम पाके हरिव्यासी॥९॥
बडे हमारे सनकादिक है जग आदिक अविनाशी।
सो देखो भागोत साखि है भयै जु त्रिगुण उदासी॥
सदा खुलासी रंग धाम के वासी सो रससासी।
जग पासी में बँधे जु नाही रूप रसिक हरिव्यासी॥१०॥
श्रीहरिव्यास नाम महा सुन्दर चसमो अति अभिरामो॥
ताविन दृष्टि परै नहीं सूक्षम रहसि जु श्यामा श्यामो।

या चस मोंते अनन्त रसिक जन देख्यो निज रंग धामो।
रूपरसिक हरि व्यास नाम चस या विन सरे न कामो।।११।।

लहरी उन्नीसी भई, इति श्रीपूरण आय।
माझ रसीली न सों भरी, खरी जु प्रेम चुचाय।।१।।

॥ राग धनाश्री आभास दोहा ॥

दम्पति जू की आरती, करत रंग देवीजु।
चहल पहल रंग महल में, सदा युगल से वीजु।।

॥ पद ॥

॥ आरती ॥

आरती करति रंग देवीजू।
रंगमहल सुख चहल पहल में सदा युगल सेवोजु।।
रत्न जटित वरथाल मनोहर गजमोतिन मणि पूरण।
दीप सहित माला सुगंध युग अद्भुत रोरी चूरण।।१।।
श्रीहितु सखी हरि प्रिया दासी चमर करत छवि पावै।।
रूपरसिक दम्पति परि करपर निरख वारने जावै।।२।।
युगल चन्द्रकी आरती करत हितू सखि रासि।
संग लिये सब सहचरी रंग महलकी वासि।।३।।

॥ पद ॥

आरती न आरति करन युगलजू की दासी।
श्रीहरि प्रिया प्रेम प्रकाशी हितू सखी सुखरासी।।१।।
परम सहेली हित अलबेली आदिम हलकी वासी।
रूपरसिक दम्पति छवि निरखत पराप्रेम की फांसी।।२।।

॥ अथ राग मलार ॥

॥ आभास दोहा ॥

अशरण शरण भजो मना हरण तरणि सतत्रास।
रसिक आस पूरण करण श्रीस्वामी हरिव्यास।।१।।

॥ पद ॥

मनारे भजिये श्रीहरिव्यास।
अशरण शरण दीन जन हन दुख हरण तरणि सुतत्रास।।
जो प्रभु रसिक भक्त जन नायक दायक विपिन विलास।
तिन विन तीन लोकमें असको पूरण चूरण क्यास।।
महल रसिक जनकी जिनमेंटी परा प्रेमकी प्यास।।
महावाणी करता जनभर्त्ता श्रीभट पदनिज दास।
करुणा सागर जगत उजागर अगर प्रेम प्रकाश।।
रूपरसिक मन वचक्रम करि ये सब दिन आस।

॥ इति राग मलार ॥

॥ चौपाई ॥

इति हरिव्यास यशामृत सागर। सो त्रिभुवन में महा उजागर।।
ताकी लहरी विंशति सुन्दर। परि पूरणता पाई दुखहर।।

॥ इति श्रीविंशति लहरी ॥

॥ चौपाई ॥

अब इक विंशति लहरि सुहाई। लिखत महालक्षण समुदाई।।
पुनिया में जय जय श्रीगाई। सोइहु सुनहु गुणह चितलाई।।

॥ दोहा ॥

प्रथम सुमिरि हरिव्यासजू श्रीहरि स्वयंस्वरूप।
रूपरसिक जनजानि जिनि दियो उपदेश अनूप।।

॥ अथ महा लक्षण ॥

॥ चौपाई ॥

पहिले श्रद्धा लक्षण जानों। तापीछे सत संग बखानों।।
सत्संगति करि हरिको भजो। आन देवको आश्रम तजो।।
सदा प्रसन्न होय हरि सेवो। पुनि विरुद्ध सबसों तजिदेवो।।
सब जीवनिपर करुणा राखो। कबहू कठोरवचन जिनभाखो।।

मनहरि सुमिरण माहिं समावो। घरी पहलपल वृथा न खोवो॥
धर्म सनातन में अनुसरो। विषय वासना सब परिहरो॥
उभय सनेह सेवामें मानो। आपनपो अनित्य करिजानो॥
हरि जन हरिमें भेदन करो। सदा बुद्धि थिर ह्वै अनुसरो॥
झूठ क्रोध निन्दा तजि देवो। बिनुप्रसाद मुखऔर न लेवो॥
लिखें पढ़ें अरुकरें करावे। झूठवादि करि अनन्य कहावे॥
एकादशी अवसि व्रत करो। माला तिलक सदाही धरो॥
सदा चारमें जो विधि कही। तिहि विधिसो कर धारो सही॥
हरिजन होय धीरज जिन छोडो। हरि पद पंकज सो रति जोडो॥
हरिजन होय तहां चलि जावो। प्रीति सहित पुनि दर्शन पावो॥
जिनसों मिलि हरिगुण गण गावो। और कुसंग सबो छिद कावो॥
अपने अर्थन उद्यम करो। यथा लाभ संतोषहि धरो॥
स्तुति निन्दा दुख सुख जोई। हानि लाभ सम मानो सोई॥
हरि विमुखन सों करेन चरचा। करो प्रीति सों हरिजन अर्चा॥
नम्री भूत ह्वैकें नित्त रहौ। दास दास के भावहि गहौ॥
मिथ्या वाद विवादहि त्यागो। हरिकी कथा सुधारस रागौ॥
उत्सव दिन विशेष करि मानों। जन्म कर्म दिव्य हरिको मानो॥
मानऽरु भय अमर्ष न करौ। हरिके चरण सदा चित धरौ॥
शत्रु मित्र दोऊ सम मानों। सहन शीलता उरमें आनों॥
नाम भरोसे पाप न करौ। नामी नाम एक बुधि धरौ॥
सदा नाम विश्वासहि राखौ। ऊठत बैठत नामहि भाखो॥
नाम माहात्म्य ऐसो सोई। याते अधिक और नहिं कोई॥
नामहिं सों नित बांधौ नातौ। जगत मोह सों डोरा हातो॥
सास्सु उसास नामही जापो। चित्त युगल पदमें लेथापो॥
नितहरि चरणामृतरु दण्डवत। धरि उर नेम निवाहो यहमत॥
प्रारथना कर जोरि करो पुनि। जिहविधि हरि उकतावें नहिं सुनि॥

होय निरालस हरि को पूजो। गुरु बिन गहौ न मारग दूजो॥
गुरुसों गोविंद गोविंदसों गुरु। ऐसो भाव सुधारियो निज उर॥
साधन को छल छिद्र न धरो। कपट छांडि आराधन करो॥
वक्तासो हरि गुण सुनि रहो। श्रोतासो हरिगुण पुनि कहो॥
दुखी देख उर दया विचारो। सुखी देख हिय हर्षहि धारो॥
सरल स्वभाव सबनिते रहनों। मधुर वचन मुखते सोइ कहनो॥
पर उपकार विषै बुद्धि धारो। अनुचित कर्म क्रिया निरधारो॥
हरि अनुकूल जिती उरधारो। पुनि प्रति कूलतिती परिहारो॥
हरि सों निरवधि नेह निवाहो। निशदिन चरणन कों रति लाहो॥
हरिजन होयजु हठनहि करवो। हरि अज्ञाहीमें अनुसरिवो॥
हरि रसपान करो निशि दिना। नीरस यश छांडो हरि बिना॥
सबहिनसों करि राखौ समता। देहगेह की छांडौ ममता॥
सत्य अहिंसा शांति शोचसुनि। समदमादि ए उरहु धरो पुनि॥
नैन बैन रसना श्रुत घ्राण। कर पद शिर पुनि हृदयरु प्राण॥
हरि पर करि राखो सब अंग। पारो जिन उपासन में भंग॥
है अनन्य उर दृढ व्रत करौ। सखी भाव लिये हियें अनुसरौ॥
छांडि कुनेम प्रेम मन पागो। युगल पदाम्बुज सो अनुरागो॥
प्रभुको रूप ध्यान उर धरौ। मगन होय नित नितहि करौ॥
सर्व भाव करि हरिहरि गावो। रूपरसिक ज्यों सब सुखपावो॥

॥ दोहा ॥

महा लक्षण रसमई, इति चौपाई चोबीस।
रूपरसिक जो ध्याव हीं, सो पावही पद ईश॥

॥ चोपाई ॥

अब जय जय श्री सुनहु सुहाई। राग विलावल में छविपाई॥
लिख न करो सु महा मन भाई। सुनत गुणत सुख होत सदाई॥

॥ राग बिलावल दोहा ॥

कला अनेक प्रकाशनी, चमत्कार बहु भाय।
गाऊँ यश जय जय जु श्री श्रीहरिप्रिया सिरनाय॥

॥ पद ॥

जय जय श्रीहरि प्रिय चरण शिरनाय हो।
जिनको वश दुलराय हिये हुलसायहो।
अति सुकुमार उदार सहज सुख सारहो॥
सुन्दर मृदुल मनोहर सुखद सुढारहो॥१॥
जय जय श्रीहरि प्रिये सकल सुखमूल हो।
जिनको सर्व सुदेत तेव अनुकूल हो।
अग्रवर्तिनी प्रेम भक्ति रसदायनी।
करुणा सिन्धु दयाल सुविरद विधायिनी॥२॥
जय जय श्रीहरि प्रिये रँगीली रंगहे।
अद्भुत अमल अलौकिक आभा अंगहै॥
बडडे नैन विराजत अंजन अंजिता॥
मनरंजन छविकँजन खँजन गञ्जिता॥३॥
जय जय श्रीहरि प्रिये बदन विधु सोहही।
मध्य रदनकी जोति मदन मन मोहही॥
अधर अरुण रसभरे युगल अनुराग सों ।
कलकपोल श्रुति चिबुक निरख वड भागसों॥४॥
जय जय श्रीहरि प्रिये रसीली रसभरी।
कण्ठशिरी दुलरी तिलरी अंगिया हरी ।
कुच उतंग पर झरे हारली पजुमनी।
अधिक उर स्थल उपचार चौकी कंठनी॥५॥
जय जय श्रीहरिप्रिये सुबाहु विराजही।
बाजु बन्द सुचारु चुरी छबि छाजही॥

कंकण कंचन पहुँची प्रभा कर पानकी।
अंगुरी में मुदरी मणिहेम विधान की॥६॥
जय जय श्री हरिप्रिये कृशोदरि कटि लसें।
गुरु नितम्ब किंकिणीविविध नग जटि लसें॥
लहँगा ललित सुरंग अंग सुहायकी ।
दयो रासकिनीरीझि चतुरचित चायसों॥७॥
जय जय श्रीहरिप्रिये पदा भूषण सजे।
मंथर चरण विहार मनोभव द्विप लजे॥
ललित लजाई तरवनि वनि नख आवली।
सदा रहे हिय मांहिसु परम प्रभावली॥८॥
जय जय श्रीहरिप्रिये सुखद सुख मासनी।
मृदुल मनोहर रंग अंग सारी वनी॥
जरद किनारी जग मगानि चहुँओरकी।
झमकनि वेनी पीठि सहेली डोरकी॥९।
जय जय श्रीहरिप्रिये मधुर मृदु हासिनी।
मुक्त लरनि मिली सुच्छ सू सांधों सिलमिली॥
कर्ण कुसुम की देखि द्युति तरनि की।
भई विमोहित जोहत उपमा धरण की॥१०॥
जय जय श्रीहरिप्रिये मधुर मृदु हासिनी।
चमत्कारिणी कला अनेक प्रकासिनी॥
परम सहेली अलबेली आनन्दनी।
समयर सुख सेवा में संचारणी॥११॥
जय जय श्रीहरि प्रिये प्रत्यंगा भासिनी।
केली कला कमनीय निकुंज निवासिनी।
परम सहेली अलबेली आनन्द की॥
रूपरसिक वलि जाय चरण अरविन्द की॥१२॥

॥ चौपाई ॥

इति श्रीमत् हरिव्यासदेव यश। अमृत सागर की लहरी अस।
इकविंशति मह छवि छाई। पूरण भई सकल सुखभाई॥

॥ इति एक विंशति लहरी ॥

द्वाविंशति लहरी तिनमाँ, तामें पद दश तीन।
भैरव सारँग कानरो, सोरठ में रसलीन ।१॥
पुनि गुणि दोहा पंचमी, करण सकल अघनास।
पढत गुणत हिय में बसौं, चरण कमल हरिव्यास॥२॥
जिनकी दया सु दृष्टितें, पायो हरि जस भेव।
नमो जयति हरिव्यास जू, सब देवन के देव॥३॥

॥ राग भैरव आभास दोहा ॥

तजि निन्दा सन्तोष सजि, रजि रसिकन कौ संग।
भजियेतौ हरिव्यासकौ, यौंही मनो सुअंग॥

॥ पद ॥

तजिये तो निन्दा कौ तजिये। सजिबेतो संतोषहि सजिये।
रजिये तो रसिकन संग रजिये। भजिबे तो हरिव्यासहि भजिये॥१॥
छजिये तो इह छाजहिं छजिये। रूपरसिक राधा पद भजिये॥२॥

॥ इति राग भैरव ॥

॥ अथ राग सारँग ॥

॥ आभास दोहा ॥

तिनको मुख कारो करो शिर ऊपर दे लात।
हरि के भक्तजे जिनको नाहिं सुहात॥

॥ पद ॥

जिनको हरिजन नाहि सुहात।
तिनको मुखकारो करि के शिर ऊपर दीजे लात॥
कहा भयो कविताई सीखेहै करि मोटी जात।

रीतो होय निरन्तर जेसे ज्यों हँडिया बिनभात॥१॥
हरिप्यारे के प्यारे जिनको मन में नाहिन आत।
निहचें नर क निवासो ह्वैहैं तिनके पुरुषा सात॥२॥
महा अधमते अधम जानिये कहत पुकारें धात।
रूपरसिक तजिये संग तिनको भजिये श्याम संगात॥३॥

॥ इति राग सारग ॥

॥ अथ राग कानडो ॥

॥ आभास दोहा ॥

भक्तनको चरणाम्बुज ले कियो न पावनगेह॥
तेनर या जग आयके वृथा धरीहै देह॥

॥ पद ॥

वृथाभयो जनको जग आवन।
भक्तनको चरणोदकलेजिहि॥ नहि न कियो अपनो गृहपावन।
रुचिकरि जिहिजूठनि नहिखाई॥
निजकुलको अभिमान नसावन।
खात फिरत जे महागलीची जैसे सूकर कूकर गावन॥१॥
जिनश्रवननि हरि कथा सुनी नहिं उरमें अति आनँद उपजावन।
तिनको रूप रसिक प्रभुको कहो कोन भांति करि होय मिलावन॥२॥

॥ आभास दोहा ॥

जिन सेवाते सकल मन, पूरण काम अभिष्ट।
सो अच्युत गोती महा, मेरे हैं निज इष्ट॥

॥ पद ॥

अच्युत गोती मेरे इष्ट।
जिन सेवाते सकल कामना पुरवत मन आनन्द प्रविष्ट॥
कृष्ण कृपामृत पावत अनुदिन बोलि बोलि बाणी मुख मिष्ट।
सुनि सुनि श्रवननि उपजत अति रति बढत हिये अनुराग अभिष्ट॥१॥

पदपंकज रजके प्रताप करि होत शिष्टजे महा कनिष्ठ।
अनायास पावत सर्वेश्वर जबही चितवत कृपा सुदृष्ट ॥२॥
यमकी सब डर डारि जगतमें विचरत जैसें वीर वरिष्ठ।
रूपरसिक ताकी पदवी में पाई जिन की खाई उच्छिष्ट ॥३॥

॥ आभास दोहा ॥

भक्तनकी निन्दा करै, मोकों पूजे जोय।
प्रभु आज्ञा यह करत हैं, मेरो दोषी सोय॥

॥ पद ॥

जहां तहां हरि ऐसी कही।
भक्तनकी निन्दा करि मोकों पूजत मोमन दोषी सही॥
षोडश विधि सेवा विस्तारत वेद तंत्रकी सब विधि गही।
में मानत नाहिन तनकउ कछु वृथा पचत है मूरख बही॥१॥
मेरे कछु भक्तन विन नाहिन भक्तनके मोविन कछु नही।
रूपरसिक प्रभुताकी पदवी सो तो सब इनहीं ते लही॥२॥

॥ आभास दोहा ॥

में न्यारो इनते न कछु, ये न्यारे नहि होंहि॥
प्राणनते अति लगत हैं प्यारे भक्तजु मोहि॥

॥ पद ॥

प्राणनितें मोहि भक्त हैं प्यारे।
मैंन्यारो नाहिन इनते कछु ये कहु नाहिन मोते न्यारे।
बडी बडाई लक्ष्मी मेरे। ताहूते जन जानत न्यारे॥
ज्यायौ जीवत प्यायौ पीवत इनि साधुन के सांझ सवारे॥१॥
सुनि उद्धव जिनि मेरे कारण सब धन धाम के काम बिसारे।
तिनकों रूपरसिक कहो कैसें अभि अन्तर ते जाति निकारे॥२॥

॥ आभास दोहा ॥

और युगलन में यज्ञ जप तीरथ संयमदान।

कलियुग माही मुख्यहै श्रीहरिभजन प्रधान॥
और युगनमें यज्ञादिक जपतप तीरथ व्रत संयमदान।
श्रीभागवत महा मुनि नृपसों कही सहायहै कृपानिधान॥
केवल कृष्णनाम कलिकीर्तन या समान अघहरको आन।
अजामेलगज आदिप्राणके बानसमय तहां प्रगट बखान॥
रूपरसिक जाकी महा महिमा जानतहैं सब सन्त सुजान॥

॥ आभास दोहा ॥

हरिजन आवत देखिके नहिं हियमें हरखाँहि।
महापातकी जानिये तिनको या जगमाँहि॥

॥ पद ॥

हरिजन निरखित हरखत हिये।
तेनरमहा अधमपाखंडी धृक धृकहैं जग जिनके हियें।
मुखमीटे अमृत गटगटके हृदय क्रूर नाछीये॥
क्यों नहिं मारपरै तिनके शिर जिनके ऐसी कुटिल धीये॥१॥
स्वांग पहरि सुकियाको सुन्दरि लक्षप्रतिक्ष पोषत परकिये।
रूपरसिक ऐसे विमुखनकौं कुंभीपाक नरक नाखिये॥२॥

॥ आभास दोहा ॥

दया उदधि सर्वेश की, हे नित प्रति यह टेव।
मानत आपनतें अधिक, हरि भक्तन की सेव॥१॥

॥ पद ॥

हरिसेवातें हरिजन सेवा।
आपनतें अधिकी करि मानत दया उदधि देवन के देवा॥
सहि नहिं सकत भक्त अपराधे निज अपराधन चित्त धरेवा।
दुर्वासा के कोप कालना भाग तनय के त्रान करेवा॥१॥
सकल लोक चूडामणि स्वामी ब्रह्मादिक पावत नहिं भेवा।
सो आधीन रहत भक्तन के रूपरसिक प्रभुकी यह टेवा॥२॥

॥ आभास दोहा ॥

हरि भक्तन सो है नहीं, जा नारी को भाव।
जाको कारो बदनि करि, नीले करिये पांव॥१॥

॥ पद ॥

हरि भक्तन सो नाहि नभावै ता नारी को संग कहावै।
कारो मुँह करि नीले पावें॥
देखि दूरितें रामसनेही रांड दुष्टनी भौंह चढ़ावें।
गृह आयेंते महा विमूढा मन्दभागनी कलह बढ़ावे॥१॥
परम पापनी अति संतापनी अपने पतिकौ विपति लगावे।
जीवत जगमें कुयश कारिणी मरे नरक में ले पहुँचावे॥२॥
मेरो कह्यो मान नररें जोतेरे उर निश्चय आवै।
रूप रसिक बसि ऐसे घरमें काहेको घर बस्यौ कहावै॥३॥

॥ आभास दोहा ॥

गुण गावैं मिल युगल के, हरिजन लखि हुलसाय।
ऐसी सुखदा भावनी, मिलै भागते आय॥

॥ पद ॥

ऐसी भामिनि भागहि पाइये।
जासों मिलिकै अहो निशा श्रीराधा माधवके गुण गाइये॥
हरि हरि जन सेवामें तत्पर परम अनन्य लखि नैन सिराइये।
रूप रसिक ऐसी घर नीके सदा संग रहि हिय हुलसाइये॥

॥ इति राग कानरो ॥

॥ अथ राग सोरठ ॥

॥ आभास दोहा ॥

सत् संगति को तजि करी, विषय बिपिन में धाय।
तातें मूरख बँधिगयो, अपने कर्मंहि आय॥

॥ पद ॥

अपने कर्मंहि आप बँधायो।
जैसे कीटकोसकारी गृह द्वार मूँदि पछितायौ॥
जैसे मधुकर मुदित कमल में पल विश्राम न पायौ।
भटकि भटकि शिर रह्यौ पटकि तौ दुख अन्त न आयौ॥१॥
जैसे मधुमाखी मधुलालच आनि ता माहीं।
प्राण दियेही होय निवेरो और उपाय5 बनाहीं॥
जानि बूझि कर पडत खांड में जैसे गज मतमातो।
करण केलि करिणी भ्रम भूल्यो होय गयो दृगहातो॥३॥
कहा होय पछिताव किये अब तब तो सब बिसरायो।
रूपरसिक सतसंग छांडिके विषय विपिन में धायो॥४॥

॥ आभास दोहा ॥

पीयो नहीं भागवत रस, श्रवण पुटा सुख दाय।
धृक् धृक है तेरो जिवो, कहा कियो जग आय॥

॥ पद ॥

कहातें जग में आय कियोरे॥
श्रीभागोत सुधारस गटक्यो श्रवन पुटा न पियोरे।
नरतन रतन जतनहु पायो ही खोय दियोरे॥
ताको शठ तोहि सोचन आयो धृक है तेरो जियोरे॥१॥
क्यों नहो रही बाँझ जननी वह जिहि धरि उदर लियोरे।
रूपरसिक ही कष्ट होत है देखि तिहारो हीयोरे॥२॥

॥ इति राग सोरट ॥

॥ आभास दोहा पंचमी लिख्यते ॥

श्रीहरिव्यास कृपाल की, शरण लहे जो कोय।

निन्दादिक औगुण सबैं, पाप नष्ट सब होय ।।१।।
बढै महा संतोष अति, हरिव्यासिन के संग।
प्रेम सिन्धु छार्जे चढ़ें, उर अनुराग अभंग।।२।।
जो कोउ या नर देह को, वृथा करै अभिमान।
दूरि करैं हरिव्यासजू, चरण शरण गहैं आन।।३।।
अच्युत श्रीहरिव्यासको, जिनके है निज इष्ट।
श्रीवृन्दावन महल सुख, पावैं परम अभिष्ट।।४।।
जय जय श्रीहरिव्यास, यशामृत की कही।
द्वाविंशति लहरी, पद तेरह की सही।।
पुनि दोहा पंचपी महा, शुभ जानिये।
परम पूज्यता करण सकल, सुख मूल हरण दुख मानिये।।१।।

॥ इति द्वाविंशति लहरी दोहा ॥

यश अमृतसागर महा, जाकी लहरि अनन्त।
रूपरसिक यह यथामति, सुनि उर धरियो सन्त।।१।।
मैं मति मन्द कहा कहूँ, जीवनि श्रीहरिव्यास।
महावाणी गायक सुधनि, करि भेंटे निज दास।।२।।
श्रीहरि प्रिया जु की करी, महावाणी सों भेंट।
रूपरसिक पावन भयो, सहजें भई सहेट।।३।।
श्रीहरिव्यास यशामृत सागर परम अगाध।।
रूपरसिक बलिबलि गयो, पुजई सब मो आश।।४।।
इति श्रीहरिव्यासदेव यशामृत सागर यथा मति।
लहरी सम्पूर्णम्।। मिती वैशाख वदी २ सम्वत्।।

॥ प्रार्थना ॥

श्रीरूपरसिक कृत प्रियाप्रीतम के पद।

॥ राग झँझोटी ॥

प्यारी जू तुमही हो गति मेरी।
चूक क्षमा करिये दुख हरिये जू हौं तेरी जनम जनमकी चेरी॥टेक॥
भ्रमिय बहुत वन वन बलि जाऊँ
ए जू लहिय न तनकहू सुख की सेरी॥१॥
दीन हीनपर दया द्रवन की जू तुम बिन कहौ शरण किहि केरी॥२॥
इहि अवसर अब परि हरि हौ तौ
जू कहां शरन मुहि मिलि है जू तेरी॥३॥
भव सागरमें वहिय फिरति हौं जू महा मोह दुर्मति ने घेरी॥४॥
अनुचरि परि अनुकम्पा कीजे एजू दीजे अब दर्श दरेरी॥५॥
रूपरसिक जन जानि आपनो जु राखिये चरन कमल सौं नेरी॥६॥७॥
अब तो करुना कियेई बनै अलि।
भवसागर विकराल विपुल ताकी भँवर जालते जाऊँ कहां टलि॥१॥
औगुन खानि जानि आना कानी जू
जो उर आनी तौ नहि कहूँ थलि॥२॥
हौं मति हीनि मलीनि करम की जु तुमते बिछुरिगई रज में रलि॥३॥
कलपान्तर कहुँ जाय परोंगी जू तो कब ऐहों तुम पद ढिंग ढलि॥४॥
वही आज्ञा उर में सुधि करिये जू तू मेरी है रूपरसिक अलि॥५॥२॥
मेरो कछु वश नाहि न करुन मई॥
सुधि बुधि भूलि भरम भगकति हौं जू करमन करि प्रतिकूल भई॥१॥

ज्यों ज्यों सुरझाऊँ त्यों त्यों उरझत जू ऐसी दशाकोऊ आयगई॥
सुधि बुधि बिसरि बिकल बिलपति
हौं जू या जग की त्रय ताप दई॥३॥
जानत सब जनके जिय की जू तुम ते कौन दुरी है दई॥४॥
रूपरसिक अलि कहां यह कहौं
यह जू उचित नहीं अलि होति नई॥५॥३॥

*